प्रथम संस्करण १९७४
द्वितीय संस्करण १९७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक कुमार कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा
कमलेश प्रिंटरी, शाहदरा दिल्ली ११००३२

यह उपन्यास हिन्दी के उन असख्य कथाप्रेमियो को
सस्नेह समर्पित है जिनकी परिधि मे दास्तावस्की
से लेकर काफ्का और कामू तथा जैनेन्द्र से
लेकर अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे
विशिष्ट कृतिकारो का अस्तित्व
नही है।

एक

खाना खत्म हो चुका था। बैरे ने मेज से जूठी प्लेटें, नैपकिन, छुरी काटे आदि हटा दिये, गिलासो म फिर से पानी भर दिया और शीशे के दो प्यालो मे आइसक्रीम लाकर उनके सामन करीने से लगा दी।

हरिश्चन्द्र न एक बार रूबी की ओर देखा, फिर चुपचाप खाना शुरू कर दिया। रूबी ने एक बार अपने आसपास देखा, फिर धीरे स अपने सामने दीवार पर लग शीशे की ओर निगाह फेर ली।

रेस्तरा की दीवारें बिस्कुटी रग की थी, जहा शीशा नही था, वहा भी वे शीशे ही जैसी झिलमिलाती थी। दीवारो मे दो फुट की ऊँचाई पर चारो ओर लगभग एक फुट की चौडाई के शीशे जडे गये थे। होटलो और दुकानो की दुनिया मे किसी भी जगह को और बडी बनाकर दिखाने का एक खूबसूरत फरेब। बैठनेवाला को अपना अक्स इन्ही शीशो म दिखायी देता था।

रूबी ने सोचा—मैं अब भी सुन्दर हूँ। अनजाने ही उस अपने होठो के कोनो पर मुसकान का आभास हुआ। दरअसल छत्तीस सालकी उम्र म भी रूबी सिर्फ सुन्दर ही नही, बहुत सुन्दर थी। पर उसे लगा, शीशे म न दिखनेवाली इस कमर के पास जितना चाहिए, उससे कुछ ज्यादा भराव आ गया है। ब्लाउज के बाहर कसी हुई बाहो पर कुछ ज्यादा गोलाई है। गरदन अब भी पहले जैसी सुडौल है, पर उस पर चारो ओर एक हल्की सी लकीर पडने लगी है।

बैरे को इशारे से पास बुलाकर उसन कहा, "मेरे लिए कॉफी लाओ!"

हरिश्चन्द्र ने कहा, 'और यह आइसक्रीम?'

"वापस कर दो, या तुम खा लो! कुछ भी करो।"

हरिश्चन्द्र हँसकर बोला, "नहीं डियर इससे वजन नहीं बढ़ेगा ! मेरी राय में '

'ऐसे मामलों में मेरी राय में डाक्टर की राय पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए !'

हरिश्चन्द्र ने नकली गम्भीरता से सिर हिलाया, जैसे किसी ने बड़ी गहरी बात कही हो।

रूबी अपने प्याले में गर्म कॉफी डालने लगी। उधर से अपनी निगाह हटाये बिना उसने धीरे से कहा 'शाम को खाली हो न ?

"हूँ भी, और नहीं भी। क्यों ?'

ललित कला अकादमी में यतीन्द्र के चित्रों की नुमायश है। हमें चलना है। सात बजे पहुँचना होगा।'

हरिश्चन्द्र ने सहसा कोई जवाब नहीं दिया। उसकी भौंहें धीरे से सिकुड़ीं। कुछ सोचकर बोला, कैसे जा सकेंगे डियर ?"

"क्यों नहीं जा सकेंगे डियर ?' उसने चिढ़ाने की कोशिश की।

हरिश्चन्द्र ने इसके जवाब में रूबी पर अपनी निगाह टिका दी। उसे सिर्फ देखता रहा। उस निगाह से ही जाहिर हो गया कि उसे जवाब देने की जरूरत नहीं है। रूबी के चेहरे पर उलझन सी झलकने लगी। उसने जोर से सांस खींची और दूसरी ओर देखते हुए कॉफी का प्याला होंठों की ओर बढ़ाया।

हरिश्चन्द्र ने लापरवाही से कहा, 'शाम को मैं खाली नहीं हूँ। इतवार का दिन है। तुम जानती ही हो, आज शाम को हमें कहाँ जाना है !"

बैरे ने इशारा पाकर बिल पेश किया और थोड़ी देर बाद वे दोनों उठ खड़े हुए। वातानुकूलित कमरे से बाहर आते ही गर्मी और धूप का अचानक अहसास हुआ। रूबी ने खरगोश के बच्चों की अदा से नाक सिकोड़ी। पर हरिश्चन्द्र पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह अपने में खोया खोया रहा। बाहर से देखनेवाले यही समझते होंगे, एक खूबसूरत जोड़ा जिसे 'मेड फार ईच अदर' कांटेस्ट में पहला इनाम मिल सकता है, रेस्तराँ से निकल कर सड़क पर इंतजार करती हुई कार की ओर बढ़ा जा रहा है। पर इस वक्त ये दोनों अपनी अपनी निजी दुनिया की भूलभुलैया में अकेले भटकने लगे थे।

गाड़ी का दरवाजा रूबी के लिए खोलते हुए हरिश्चन्द्र ने लगभग लापरवाही से पूछा, 'और कौन-कौन लोग होंगे ?

"कहा ?"

"शाम को ललित कला अकादमी की नुमायश मे।'

रूबी का चेहरा खिच गया। वह गाडी म बैठने जा रही थी, पर ठिठक-कर खडी हो गयी। खिची हुई आवाज मे बोली 'ऐसा क्यो पूछ रहे हो ?"

हरिश्चन्द्र ने रूबी को दुबारा कडी निगाह से देखा। उस निगाह के सामने वह कुछ कसमसाई सी, पर अभिमान के साथ खडी रही। हरिश्चन्द्र ने शान्त स्वर मे कहा, "गाडी मे बैठ जाओ डार्लिंग।' और वह आगे की सीट पर बैठ गयी। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था।

हरिश्चन्द्र दूसरी ओर से आकर स्टियरिंग पर बैठ गया। शान्त भाव से उसने गाडी स्टार्ट की। दोपहर को सडक पर भीड बहुत कम थी, फिर आज इतवार का दिन था। शहर के इस हिस्से म दुकानें बन्द थी। थोडी ही देर मे गाडी दफ्तरो की इमारतो फैशनेबुल बाजारो पार्कों आदि को तेजी से पीछे छोडती हरिश्चन्द्र के घर की ओर बढने लगी।

रूबी की आवाज अब भी तीखी थी। एक एक शब्द पर जरूरत स ज्यादा जोर देकर उसने कहा 'तुम जानना चाहते हो कि अकादमी की नुमायश मे कौन-कौन लोग आयेंगे ? साफ साफ क्यो नही पूछते कि अजीत-सिंह भी आयगा या नही ?"

हरिश्चन्द्र ने आखो पर धूप का काला चश्मा लगा लिया था। उसके चेहरे स नही लगा कि उसने कुछ सुना है।

सहसा रूबी न धीमे स्वर म कहा, "तुम्हे क्या हो गया है ? तुम समझते क्यो नही ? इस तरह कैसे सोचने लगे हो ?"

जैसे कोई फैसला सुनाया जा रहा हो, हरिश्चन्द्र ने जवाब दिया, "यह सवाल मुझसे नही, अपने आपसे करो।"

रूबी न अचानक तीखी आवाज मे कहा, 'गाडी धीमी करो वरना ऐक्सीडेण्ट हो जायगा।'

सचमुच ही गाडी की रफ्तार पचासी किलोमीटर फी घण्टे से ऊपर हो गयी थी। यह शहर की एक चौडी और वीरान सडक थी, पर वहा भी इस रफ्तार पर चलना खतरनाक था। हरिश्चन्द्र ने ऐक्सिलेटर पर पैर ढीला कर दिया, गाडी धीमी हो गयी। रूबी न जोर की सास ली।

यह क्रम कई सालो से चल रहा था। वे दोनो इतवार को दोपहर का खाना घर से बाहर खाते थे। खाने के पहले हरिश्चन्द्र एक खास 'बार' म जाकर 'बियर' या 'जिन' पीता था, और उस वक्त रूबी उसके साथ बैठ

कर अनन्नास का रस पीती थी। फिर व दोनो इस रेस्तरां मे आकर खाना खात थ। दोपहर के बाद व सोते थ। शाम को साथ-साथ सिनेमा देखते थे। पति पत्नी कई सालो से इतवार साथ साथ बिताते थ। पिछले दिनों हरिश्चन्द्र क मन म स्त्री के लिए कई बार स देह और खीझ का दौरा पड चुका था फिर भी इतवार के इस क्रम म कोई खास फक नही आया था।

उनकी शादी हुए आठ साल हो गये थ, पर अभी तक परिवार मे सिफ वही दोनो थ। शहर के छोर पर एक 'फैशनेबुल क्षेत्र' मे उनका बँगला था, मखमली दूब का लॉन था, शहर मे सबसे नयी वरायटी क गुलाब थे जिन पर हर साल मौसम आने पर 'फ्लावर शो' म इनाम मिलता था। उनके पास स्वास्थ्य था, सु दरता थी, काफी पैसा था और थी अच्छी सामाजिक हैसियत।

हरिश्चन्द्र रफ्रिजरेटरो का कारोबार करता था। उसकी दुकान शहर की अत्याधुनिक दुकानो म से थी और अपने कारोबार की माफत शहर के सभी जान मान आदमियो से उसकी जान-पहचान थी।

जब वे लोग घर पहुँचे तब लगभग तीन बज रह थे। हरिश्चन्द्र ने पोटिको म कार रोककर स्त्री की ओर का दरवाजा खोला। वह तेजी से उतरकर चिकन फश परऊँची एडी के सण्डिलो से खट खट की आवाज की चोटें देती हुई बँगले के अ दर चली गयी। जात जात सिर घुमाकर हरिश्च द्र स कहती गयी, शाम को कार मेरे लिए छोड देना।"

ज्यादातर वह इतवार को दोपहर के बाद दो-तीन घण्टे सो लिया करता था, पर आज वह सोने के कमरे मे नही गया। उसन यह जानने की भी कोशिश नही की कि स्त्री कहाँ है और क्या कर रही है। वह ड्राइगरूम मे ही सोफे क ऊपर कूलर चलाकर बिना कपडे उतारे पड रहा। उस नींद नही आयी। एक घण्टे तक वह करवटें बदलता रहा। उसके बाद वह ड्राइग रूम म ही लग हुए एक कमरे मे जाकर बठ गया। इस कमरे का इस्तेमाल पढने और दफ्तर के काम के लिए होता था। एक रगीन पत्रिका के पन्नो म वह थोडी दर सिर गडाये रहा। पर बाद मे वह एक पन्ने पर रुक गया—सिफ उसे देखता रहा।

अचानक हरिश्चन्द्र ने झटके से पत्रिका ब द कर दी। उस कोने म रखी हुइ एक निचली मज पर लापरवाही से फेंक दिया। सामन मेज पर टलीफोन रखा था। उसका रिसीवर उठाकर उसने एक नम्बर घुमाया।

रिसीवर कान मे लगाये वह किसी के बोलने का इ तजार करता रहा।

उधर घण्टी लगातार बजती रही। हरिश्चन्द्र के माथे पर दो लकीरें पड गयी। ऊबकर वह रिसीवर रखने ही जा रहा था कि उधर से उसे आवाज सुनायी दी। वह कुर्सी खिसकाकर इत्मीनान से बैठ गया।

"हलो, हा, मैं हरिश्चन्द्र "

उस तरफ से किसी ने कोई हँसीवाली बात कही होगी। जवाब मे हरिश्चन्द्र ने फोन पर एक खोखली हँसी हँसने की कोशिश की। कहा, 'आज मुझे तुम्हारी कार की जरूरत पडेगी नही नही, ड्राइवर की फिक्र मत करो। वह छुट्टी पर है तो उसे वापस मत बुलाओ। अभी घण्टे भर बाद मैं खुद आकर तुम्हारे यहा से गाडी ले लूगा।" वह फिर हँसा, "घबराओ नही, गाडी स्मगलिंग के लिए इस्तेमाल नही होगी।"

साढे पाच बजे के बाद वह जब घर से बाहर निकला तब उसका चेहरा शान्त पर गम्भीर था। उसकी आखो पर मोटे फ्रेम का काला चश्मा लगा हुआ था।

लान मे एक माली काम कर रहा था। उससे उसने कहा "मेम साहब सो रही होगी। जगें तो बता देना—चाभी कार मे ही लगी है। मैं एक दोस्त के घर जा रहा हूँ। देर से लौटूगा।'

बँगले से बाहर आकर वह पैदल ही छायादार पेडो के नीचे फुटपाथ पर चल दिया।

लगभग पौन घण्टे बाद वह उसी सडक पर एक कार से वापस लौटा। वह हल्के नीले रग की एक फिएट थी। इस तरह की कारें शहर मे सैकडा की तादाद मे होगी। बँगले के सामने से निकलकर उसने कार की खिडकी के बाहर देखा। उसकी गाडी—काली एम्बेसेडर—अभी पोर्टिको मे ही खडी थी। काफी तेज रफ्तार से वह बँगले से आगे निकल गया। सडक चौडी और सीधी थी और लगभग डेढ फर्लांग तक उस पर कोई चौराहा नही पडता था। अपने मकान से लगभग दो सौ गज आगे जाकर उसने कार सडक के किनारे एक घने पेड के नीचे खडी कर दी। उसके बायीं ओर बच्चो का एक मॉन्टेसरी स्कूल था जो गर्मियो के कारण बन्द हो गया था। वह गाडी मे, सडक की ओर पीठ का कुछ रुख देकर चुपचाप बैठा रहा और कार के 'बैकव्यू मिरर' मे पीछे से सडक पर आनेवाले लोगो को देखता रहा।

अभी सूरज पूरी तौर से डूबा न था। पर धूप खत्म हो चुकी थी और सडक पर दोपहर की अपेक्षा ज्यादा हलचल थी। फिर भी भीड नहीं

थी। चन्द रिक्शे, कुछ पैदल और दो चार मिनट का अन्तर देकर आने-वाली इक्का दुक्का कारें उस 'रियरव्यू मिरर' में दिखायी दीं। उसकी काली ऐम्बसडर अभी तक बंगले के बाहर निकलकर सड़क पर नहीं आयी थी। गाड़ी का रुख जिस ओर था, उधर ही ढाई मील आगे जाकर ललित कला अकादमी की इमारत पड़ती थी। हरिश्चन्द्र ने अभी तक काला चश्मा नहीं उतारा था। वह चुपचाप गाड़ी में बैठा हुआ 'रियरव्यू मिरर' पर निगाह जमाये रहा।

अब रोशनी इतनी कम हो गयी थी कि आंखों से चश्मा हटा लेना जरूरी हो गया। फिर भी इतना उजाला था कि सड़क पर आनेवाली गाड़ियों ने अपनी बत्तियां नहीं जलायी थीं।

सहसा हरिश्चन्द्र ने 'रियरव्यू मिरर' में गौर से देखा, उसकी काली ऐम्बसडर बंगले से बाहर निकलकर सड़क पर आ गयी है। पर वह उसकी ओर नहीं आ रही थी। ललित कला अकादमी की ओर जाने के बजाय, वह बिल्कुल दूसरी तरफ जा रही थी।

उसने अपनी गाड़ी स्टार्ट करके तेजी से मोड़ी और कुछ क्षणों के बाद रफ्तार कुछ कम कर दी। उसकी गाड़ी में और काली एम्बसडर के बीच लगभग सौ गज का फासला था। बीच में चन्द रिक्शे और एक बस पड़ती थी।

रोशनी और भी कम हो गयी थी और सड़कों की बत्तियां जल चुकी थीं। अपनी कार की पार्किंग लाइटें जलाकर वह ऐम्बसडर के पीछे चलता रहा।

उसका चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो गया था, क्योंकि रूबी उसकी गाड़ी लेकर ललित कला अकादमी की ओर नहीं जा रही थी। वह उस ओर बढ़ रही थी, जिधर अजीतसिंह का घर पड़ता था। लगभग एक मील आगे चलने पर रूबी ने एम्बेसेडर को दायीं ओर एक चहलपहलवाली सड़क पर मोड़ लिया। यह सड़क और भी ज्यादा चौड़ी थी। इसके साथ ही दूर-दूर बसे हुए बंगलों का क्षेत्र खत्म हो जाता था। दोनों ओर रोशनी में झिलमिलाती हुई दुकानें थीं। ये इतवार को खुली रहती थीं।

तीन फर्लांग चलने के बाद एक दुमंजिला इमारत पड़ती थी जिसकी निचली मंजिल में साप्ताहिक, जनक्रान्ति का दफ्तर और जनक्रान्ति प्रेस पड़ता था। ऊपर की मंजिल में अजीतसिंह रहता था। वह प्रेस का मालिक और 'जनक्रान्ति' साप्ताहिक का सम्पादक प्रकाशक व्यवस्थापक—सभी

कुछ था।

यह समझते हुए कि रूबी ऐम्बेसेडर को इसी इमारत के सामने रोकेगी, हरिश्चन्द्र ने फिएट धीमी कर दी। पर उसने तअज्जुब के साथ देखा एम्बेसेडर जनशान्ति प्रेस के सामने नहीं, बल्कि उससे लगभग चालीस गज पहले ही रुक गयी है। उसमें और हरिश्चन्द्र के दरम्यान बहुत कम फासला रह गया था। उसने तिरछे बैठकर सिगरेट सुलगायी और गर्मी के बावजूद खिड़की का शीशा चढ़ा लिया। बाहर दुकानों पर तेज रोशनी हो रही थी। इस कारण उधर से कार के अन्दर आदमी का चेहरा साफ नहीं दीख सकता था। वह चुपचाप सिगरेट पीता हुआ ऐम्बेसेडर पर निगाह जमाये रहा।

रूबी कार से नीचे उतरी और जनशान्ति प्रेस की ओर जाने के बजाय बिल्कुल पास की दुकान की ओर बढ़ी। उसके हाथ में कागज में लिपटा हुआ एक पैकेट था। जिस दुकान की ओर वह जा रही थी, उस पर 'क्वालिटी ड्राईक्लीनर्स' का विज्ञापन बिजली के अक्षरों में चमक रहा था। हरिश्चन्द्र ने सिगरेट का एक जोरदार कश खींचा।

लगभग पांच मिनट बाद वह दुकान से बाहर आयी और कार स्टार्ट की। वापस आते वक्त उसके हाथ में वह पैकेट न था। हरिश्चन्द्र ने भी गाड़ी स्टार्ट कर ली। उसका ख्याल था कि रूबी गाड़ी मोड़कर ललित कला अकादमी की ओर वापस जायगी, लेकिन उसने वैसा नहीं किया। वह सामने की ओर चल दी। रिक्शा और साइकिलों की भीड़ के कारण इस वक्त गाड़ी की रफ्तार बहुत कम थी। हरिश्चन्द्र उससे लगभग पचहत्तर गज पीछे चलता रहा।

बाजार की भीड़वाला हिस्सा पार करते ही रूबी ने ऐम्बेसेडर की रफ्तार काफी तेज कर दी, पर यहां सड़क साफ थी और हरिश्चन्द्र उससे एक फर्लांग पीछे रहकर भी आसानी से चल सकता था। कुछ दूर चलकर रूबी ने एक चौराहे पर गाड़ी को बायीं ओर मोड़ा। इस नयी सड़क पर लगभग डेढ़ मील आगे चलकर उसने गाड़ी को फिर दायीं ओर मोड़ा। तब हरिश्चन्द्र को अहसास हुआ कि वे, एक दूसरे रास्ते से ललित कला अकादमी की ओर पहुंच रहे हैं। इस ओर से उन्हें करीब दो मील का रास्ता ज्यादा तय करना पड़ता था, पर इधर की सड़कें ज्यादा छायादार और साफ सुथरी थीं। अच्छे मौसम में उन पर कार ड्राइव करते वक्त लगता था जिन्दगी के क्षण कितने चिकने ढंग से फिसल रहे हैं।

अकादमी की इमारत से लगभग डेढ़ सौ गज पहले हरिश्चन्द्र ने एक पैट्रोल पम्प के पास गाड़ी धीमी की। यहाँ कोई भी पेड़ नहीं था, पर सड़क के किनारे खुली जगह में चार छः गाड़ियाँ खड़ी थीं। दो गाड़ियों के बीच छूटी हुई जगह में उसने गाड़ी खड़ी कर ली।

एक दूसरी सिगरेट सुलगाकर वह कार से नीचे उतरा। गाड़ी में ताला लगाकर वह स्वाभाविक चाल से ललित कला अकादमी की इमारत की ओर बढ़ा। वहाँ बहुत-सी कारों के बीच उसे अपनी काली एम्बेसडर खड़ी दिखायी दी।

अपने चारों ओर पैनी निगाह डालकर वह अकादमी की इमारत में दाखिल हुआ। सामने ही चौड़ा जीना था। ऊपर की मंजिल पर एक बड़े कमरे में चित्र प्रदर्शनी हो रही थी। नीचे दो-तीन लड़के खड़े हुए जोर-जोर से हँस रहे थे। उन पर ध्यान न देकर वह जीने की सीढ़ियाँ पर चढ़ने लगा। ऊपर की मंजिल एक गैलरी से शुरू होती थी जिसमें इस समय कोई नहीं था। पर उससे मिले हुए हॉल में स्त्री पुरुषों के बोलने की सम्मिलित आवाजें बाहर तक आ रही थीं। हरिश्चन्द्र ने सोचा—उद्घाटन हो चुका है और लोग अब चित्रों के इर्द गिर्द टहल रहे हैं।

हॉल के प्रवेशवाले मुख्य दरवाजे को एक किनारे छोड़कर वह बरामदे में आगे बढ़ता गया और घूमकर दूसरी ओर पहुँचा। उधर भी बरामदा था। उधर के दरवाजे भी खुले हुए थे और कुछ लोग टहलते हुए बरामदे में आ गये थे। हरिश्चन्द्र ने रुककर देखा उनमें रूबी न थी। तब एक खिड़की के पास खड़े होकर एक कोने से उसने हॉल के अन्दर झाँका। पहली निगाह में ही उसे हॉल के दूसरे छोर पर वह दिखायी दे गयी।

एक क्षण के लिए हरिश्चन्द्र भूल गया कि वह वहाँ क्या आया है। उसके दिमाग में कुल इतनी बात रह गयी कि रूबी की सुन्दरता किस तरह आस पास की पूरी फिजा को अपने में समेट लेती है। इस वक्त वह एक हल्की गुलाबी साड़ी पहने थी और बालों की सज्जा में रोज की अपेक्षा कुछ इतना फर्क आ गया था कि वह अपेक्षाकृत कम उम्र की और ज्यादा लम्बी दिखने लगी थी। बिजली की रोशनी में हीरा जैसे उसके दाँत और उसके कानों के टॉप्स के हीरे चमक रहे थे। वह हँस रही थी पास खड़े दो नौजवान आर्टिस्ट बड़े ही दिलचस्प ढंग से उसे कोई बात समझा रहे थे। वह इस समय वहीं पर थी जहाँ उसे होना चाहिए था। हरिश्चन्द्र को बरामदे में खड़े खड़े लगा, जैसे एक पूरा संसार उसके लिए बन्द पड़ा है।

खिडकी के पल्ले को घुमाकर, अपने को कुछ और छिपाते हुए उसने पूरे हॉल की तेज नजरो से छानबीन की, लेकिन अजीतसिंह उसे कहीं भी नहीं दिखायी दिया। बरामदे मे, और अपने पीछे की ओर भी उसने निगाह डाली। पीछे कोई नहीं था, पर बरामदे मे अब काफी लोग आ गये थे। उन मे भी उसे अजीतसिंह नहीं दिखायी दिया। कुछ देर वहीं रुककर वह नीचे उतर आया और इमारत के बाहर एक पेड के नीचे ठहरकर सिगरेट पीता रहा। वहा वह लगभग पन्द्रह मिनट खडा रहा। फिर धीरे धीरे पैट्रोल पम्प के पास जाकर अपनी गाडी मे बैठ गया। अकादमी की ओर से दो एक मोटरें आती हुई दिखायी दी।

उसने गाडी मोडकर इस तरह खडी कर ली कि उन कारो को वह अपने सामने से गुजरता हुआ देख सके। गाडिया गुजरती रही और बिना किसी इच्छा या मतलब के, वह मन ही मन उन्हे गिनता रहा। एक दो तीन चार वह अठारह तक गिन गया। उन्नीसवी गाडी उसी की काली ऐम्बेसेडर थी। गाडी उसके सामने से धीमी रफ्तार के साथ निकली। रूबी के एक गाल और इयर-टाप पर सडक की नियानलाइट फिसलते हुए पडी। हरिश्चन्द्र को लगा, हजारो बिजलियो के एकसाथ कौंध जाने के बाद सारी दुनिया मे अचानक अँधेरा छा गया है। गाडी को स्टार्ट करने तक मे, उसे लगा, काफी मेहनत पड रही है।

अपनी कार उसने तीन चार गाडियो के बाद लगा ली। इस बार रूबी सीधे रास्ते से जा रही थी। कुछ देर बाद उसने उसे अपने बँगले मे मुडते हुए देखा। फिएट को वापस मोडकर वह फिर उसी रास्ते लौट आया। कुछ फलाग पर ही उसका क्लब पडता था। कार उसने अपने क्लब के सामने रोकी।

वह दोस्त, जिससे उसने गाडी मागी थी, बाररूम मे एक ऊँचे मोढे पर बैठा हुआ ह्विस्की पी रहा था। हरिश्चन्द्र ने गाडी की चाभी उसको दिखाकर उसकी बुश्शर्ट की जेब मे डाल दी और मुसकराकर कहा, 'थैंक्यू।" यह देखकर कि दोस्त का गिलास खाली हो रहा है, उसने दो गिलासो मे ह्विस्की का आर्डर दिया और एक दूसरे मोढे पर बैठते हुए थकी आवाज मे कहा, "लगता है, सडी हुई गर्मी का मौसम आज से शुरू हो गया है।'

जैसे मौसम को छोडकर उसकी जिन्दगी के भीतर-बाहर कुछ भी न बचा हो।

शाम के छह बजनवाले थे। दुकानें बन्द होने मे अभी दो घण्ट की दर थी। उसी दिन दो टको पर रेफ्रिजरेटरो की नयी खेप आयी थी। उन्हें दुकान के सामन ही उतरवा लिया गया था। वे क्रेटों मे करीने के साथ जकडे हुए थ। एक की पकिंग टूट गयी थी। कागज की कतरनें, मोटी दफ्तिया के चीथडे और लकडी के टुकडे उसके इद गिद बिखर पडे थे। हरिश्चन्द्र ने अपन मैनेजर स कहा, इन बाकी रेफ्रिजरेटरो को पीछे के गोदाम म रखवा देना मैं जा रहा हूँ।'

पर हरिश्चन्द्र एकदम स गया नही। उठकर थोडी देर दुकान के दर वाजे पर खडा रहा और सामन फैले हुए माल को खोयी खोयी निगाहो म देखता रहा। फिर लम्ब कदम रखता हुआ टलीफोन के पास आया और एक नम्बर मिलान लगा।

उधर से उस घर का नौकर बोला। उसने बताया, 'मेम साहब पाच बजे के करीब गयी है लौटनेवाली होगी।"

'कहा गयी हैं?'

"कोई नुमाइश चल रही है।'

हरिश्चन्द्र ने आवाज पर काबू रखकर कहा, "जाना था तो गाडी मँगा लेती।'

"गाडी से ही गयी हैं।"

'किसकी गाडी से?"

'यह नही मालूम, साहब! मैं भीतर किचन म था।"

हरिश्चन्द्र ने रिसीवर रख दिया। बहुत धीरे धीरे बाहर निकलकर वह अपनी कार के पास पहुँचा। गाडी स्टार्ट करके वह बँगले की ओर बढा। उसके चेहर पर इस वक्त एक अजीब सा खोखलापन था, जसे किसी खूब सूरत तसवीर को धूल की हल्की पत ने ढँक लिया हो। गाडी बहुत धीमी रफ्तार से चलती रही।

बँगले के अन्दर घुसते ही नौकर ने पूछा, "चाय बाहर लान में लगा दें।"

'नही मैं पी चुका हूँ।" उसने जस अपने आपसे कहा।

अपने सोने के कमरे म वह वार्डरोब मे थोडी देर तक कुछ तलाश करता रहा। उसके माथ पर लकीरें उभर आयी थी और चेहरे पर उलझन ने अपने पजे के निशान छोड दिय थे।

बाडरोब में एक खाने से उसने एक पिस्तौल निकाली। उसी के पास रखे हुए दफ्ती में एक डिब्बे से उसने कारतूस निकाले। फिर वाडरोब बन्द करके उसने पिस्तौल की मगजीन में चार कारतूस भरे। सेफ्टी कैच लगाकर पिस्तौल उसने पतलून की जेब में डाल ली।

वह फिर अपनी गाड़ी में आ बैठा और ललित कला अकादमी की इमारत की ओर बढ़ चला। सड़कों पर चहल-पहल जरूर थी, पर उसे एक अजीब सी वीरानी का अहसास हुआ।

आज वहाँ कल की अपेक्षा ज्यादा भीड़ थी। स्थानीय यूनिवर्सिटी के होस्टल से लड़कियों का एक जत्था चित्र प्रदर्शनी देखने आया था। उन्हीं के साथ लड़कों के एक जत्थे ने भी प्रदर्शनी के हॉल पर हमला बोल दिया था। भीड़ थी और उससे भी ज्यादा शोर था।

हॉल में वह काफी देर घूम घूमकर रूबी को खोजता रहा। पीछे के बरामदे में आकर भी उसने चारों ओर देखा। वह वहाँ नहीं थी। हॉल में वापस आकर उसने एक किनारे से तसवीरें देखनी शुरू कर दी। ज्यादातर अमूर्त शैली की तसवीरें थीं, जो उसकी समझ के बाहर थीं। उन्हें तेजी से देखता हुआ वह एक ओर से दूसरी ओर तक चला गया। दूसरे कोने पर पहुँचते पहुँचते उसने अपने-आपको लड़कियों के जत्थे से घिरा पाया।

वे चीख चीखकर आपस में बात कर रही थीं और एक ऐसी जबान में बोल रही थीं जिसे सोलह से उन्नीस साल तक की खुशमिजाज लड़कियाँ ही समझ सकती हैं। चित्रकला की दुनिया से बेगाने अनजाने कितने किस्से वे एकसाथ एक दूसरे को सुना रही थीं

उसने कहा उसने उससे कहा था वह पहले ही कहनेवाली थी कि वगैरह वगैरह।

एक ही वाक्य, जो खत्म नहीं हो रहा था।

रंग बिरंगे कपड़ों और उड़ते हुए रूखे बालों में, ढीले कुर्तों और चुस्त चूड़ीदार या बेल-बाटम पायजामा और निहायत सादगी से सिली हुई कमीजों के माहौल में वे पूरे हॉल का एक बिल्कुल ही अनूठे किस्म की प्रदर्शनी में बदले दे रही थीं। हरिश्चन्द्र के आसपास कई तरह के मिले जुले सेण्ट की भीनी खुशबू उड़ रही थी और उसे लगा वह ईथर में तैर रहा है। अचानक उसे अफसोस हुआ—रूबी! मैं रूबी को खो चुका हूँ।

लड़कियों की भीड़ को मुलायमियत से एक किनारे करके वह फिर बरामदे में पहुँच गया। नीचे झाँकते हुए उसने एक सिगरेट सुलगायी। उसके

कन्धे के पासकिसी ने बडी मीठी ग्रावाज मे कहा, "नमस्कार, भाई साहब !"
उसने घूमकर देखा—अशोक उसके पास खडा था। हरिश्चन्द्र ने कहा, "हलो ! तुम कसे ?'

अशोक स्थानीय सगीत कॉलिज मे सितार सिखाता था। कुछ साल पहले वह बम्बई म था। वहा उसन दो-चार फिल्मो मे सगीत के असिस्टेण्ट डायरेक्टर का काम भी किया था। सभी जानते थे कि बम्बई मे उसका और अजीतसिंह का साथ था। बाद म, किस्मत अच्छी न होने या किसी और वजह स, वह लखनऊ चला आया और उसने सितार सिखाने की नौकरी कर ली। सितार वह बहुत अच्छा बजाता था। उसे किसी भी जलसे म, और किसी भी शराबखाने मे किसी भी समय पाया जा सकता था। लाग उसे देखकर सासँ भरत और कहते—इतना ऊँचा आर्टिस्ट ! शराब इसको पिय जा रही है !

"मैं भी प्रदशनी देखने आया था।' अशोक न कहा। फिर कुछ रुककर बोला, 'भाभीजी भी तो अभी यही थी।'

सुनकर हरिश्चन्द्र कुछ कहन को हुआ, पर उसने अपने को रोक लिया। एक सकिण्ड रुककर उसन पूछा 'तो क्या रूबी यहा से चली गयी ? उसे तो मुझसे यही मिलना था।"

अशोक बोला, अजीत भाई भी आये थे। उनकी कार थी ही। इसीलिए शायद इन्तजार नही किया।

ठीक है। ठीक है।' हरिश्चन्द्र न कहा और कहत ही साचा, इतन जोर से बोलने की जरूरत नही थी। उसने कोशिश करके आवाज मे खुशी पैदा की, अच्छा भाई अशोक तब हम भी चल !"

उस ख्याल नही कि वह कितनी जल्दी अजीतसिंह के घर पर पहुँच गया। सामन जनर्णा त प्रेस खुला हुआ था और एक थका हुआ कम्पोजीटर एक टूटी हुई आरामकुर्सी पर लुढका पडा था। उस तक पहुँचते पहुँचते हरिश्चन्द्र न दो तीन बार जोर-जोर की साम ली और इधर-उधर की दुकानो पर निगाह दौडायी। इससे उस यह समझने मे मदद मिली कि वह वास्तविक दुनिया म चल रहा है। कम्पोजीटर म उसन पूछा, 'अजीत साहब ऊपर हैं ?

कम्पाजीटर न चिढी हुई आवाज म कहा, "इनने वक्त कभी वह घर पर रहत भी ह !'

कहाँ गय हैं ? '

"गये होंगे कहीं !"

"ऊपर इस वक्त कौन है ?"

'होगा कोई !"

हरिश्चन्द्र प्रेस से लगे हुए जीने की ओर बढ़ा, तब तक कम्पोजीटर ने पूरी आँखें खोलकर देख लिया था कि बात करनेवाला कोई सफेदपोश है। उसने पीछे से कहा, "नौकर होगा। घण्टी बजा लें।'

ऊपर की मंजिल पर जाकर वह रुक गया। घण्टी का बटन दबाने के पहले वह लगभग एक मिनट खड़ा रहा। बाद में घण्टी बजने पर चुस्त पतलून और बुशशर्ट पहने हुए एक नौजवान ने दरवाजा खोला। हरिश्चन्द्र को उसने सवाल-भरी निगाह से देखा।

"अजीत साहब हैं ?'

उसने होंठ दबाकर 'नहीं' कहने के लिए सिर हिलाया।

हरिश्चन्द्र एक क्षण चुप रहा। फिर कुछ सोचकर बोला "ताज्जुब है। मुझे तो इसी वक्त यहाँ आने को कहा था। हम लोग साथ ही बाहर निकलनेवाले थे।'

नौजवान पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। हरिश्चन्द्र ने पूछा, "तुम्हें पता तो होगा ही वह कहाँ गये हैं ?"

नौजवान ने सिर हिलाकर 'नहीं' का इशारा किया और बड़े साफ ढंग से कहा, "सॉरी, मुझे बिल्कुल पता नहीं कि वह कहाँ हैं।"

वह दरवाजा बन्द करने जा रहा था, पर हरिश्चन्द्र ने अपना पैर आगे बढ़ाकर उसे रोक दिया। धीरे से कहा, "देखो, हमें साथ ही एक जगह जाना था। उन्होंने मेरा इन्तजार भी किया होगा। हमें खाना भी बाहर ही खाना था।"

नौकर के चेहरे पर एक मुसकराहट का शुबहा-भर हुआ। बोला, 'अगर आप साहब के दोस्त हैं तो जानते ही होंगे वह कहाँ मिलेंगे।"

'नहीं, उन्होंने यहीं आने को कहा था।" फिर उसने लापरवाही से कहा, "एक हमारी दोस्त भी यहीं आनेवाली थी।

नौजवान थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा। अचानक उसने मुसकराकर कहा 'आप लोगों की दोस्त तो साहब के साथ ही आयी थी। यहाँ से वे अभी आध घण्टा हुआ बाहर गये हैं। डायमण्ड होटल—आप तो जानते ही होंगे ?'

"डायमण्ड होटल " हरिश्चन्द्र ने बड़ी आत्मीयता से कहा और

स्वाभाविक चाल स जीन के नीचे उतर आया। प गाडी म बैठते बैठते उसे लगा माना जिस्म का सारा खून सिमटकर उसके सिर म पहुँच गया है। गाडी का स्टाटर खीचने के बजाय उसने वाइपरा की स्विच खीच ली। बाद मे किसी तरह गाडी स्टाट करके झटके से उसे चलाया और सडक की भीड म अपने को डाल लिया। बडी कोशिश के बाद उसने यह अहसास किया कि वह भीड से होशियारी के साथ गाडी निकालता हुआ डायमण्ड होटल की तरफ बढ रहा है।

डायमण्ड होटल शहर के सबसे ज्यादा घने बाजार म था और औसत दर्जे के होटला मे माना जाता था। बाहर स आनेवाले मामूली सेल्समन और पुराने ढग के व्यापारी ही वहा आकर रुकते थे और उस किसी भी तरह आधुनिक फॅशनबुल होटला म शुमार नहीं किया जा सकता था। होटल बाजार की सडक स हटकर एक छोटे स पाक के सामन था। उसकी तिमजिली इमारत की नीचे की मजिल म रसोईघर से उडनेवाली गधो के फलने का बराबर अहसास हाता रहता था।

उसन अपनी गाडी होटल से लगभग सौ गज पहले ही खडी कर ली और होटल के पास आ गया। अजीतसिंह की कार उसे इमारत के सामने, सडक के दूसरी ओर खडी मिली।

होटल के पोर्टिको के पास ही बरामदे से लगा हुआ एक छोटा सा हॉल था जिसम काउण्टर के पीछे कोई कमचारी बठा था। हरिश्चद्र ने उसस पूछा, "मि० अजीतसिंह किस कमरे मे है ?"

'यहा कोई अजीतसिंह नहीं है।

हरिश्चद्र थोडी देर चुप रहा, फिर बरामद म चला आया।

बरामदे म आगे बढकर वह उस कमरे के पास पहुँचा जिसके सामन, सडक के उस पार अजीतसिंह की कार खडी थी। दरवाजे के पास वह थोडी देर खडा रहा। कुछ ही दर म उसके कदम उस निरुद्देश्य इधर उधर भटकाने लगे। वह बरामदे का चक्कर लगाता ऊपर की मजिल म चला गया। लगभग दस मिनट वह ऊपर के बरामदे मे टहलता रहा, फिर बिना किसी से कोई बात किय नीच उतर आया। टहलते हुए वह फिर उसी कमरे के पास पहुँचा जिसके सामन कुछ दूरी पर अजीतसिंह की कार खडी थी। लेकिन एक बैरे का अपनी ओर आता देख कुछ आगे बढ गया।

बैरा एक ट्रे पर दो प्लेटो मे खाने का सामान, अननास के रस का

एक गिलास, एक गिलास में ह्विस्की और सोडे की बोतल लेकर आ रहा था। उसने हरिश्चन्द्र की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक हाथ से ट्रे को मुश्किल से सँभालते हुए, दूसरे हाथ से उसने दरवाजे पर दस्तक दी।

हरिश्चन्द्र का दिल धड़कने लगा। उसने सोचा—अजीतसिंह अब शायद आसानी से मिल जायगा। किस्मत की खूबी ! तभी उसके मन में एक कराह-सी उठी—"मैं कितना बदकिस्मत हूँ !"

कमरे के अन्दर से किसी ने अँग्रेजी में कहा, "आ जाओ।"

यह सचमुच ही अजीतसिंह की आवाज थी।

इस वक्त सात बज गये थे और दिन की रोशनी खत्म हो चली थी। हरिश्चन्द्र और आगे बढ़कर बरामदे के कोने में पहुँच गया और वहाँ धुँधलके में बैरे के बाहर आने का इन्तजार करता रहा।

थोड़ी देर में बैरा खाली ट्रे लेकर वापस चला गया। उसके बरामदे से गायब होते ही हरिश्चन्द्र तेजी से कमरे के सामने आ गया। उसने आजमा-कर देखा, दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था।

अचानक दरवाजा खोलते हुए उसने भर्राई आवाज में कहा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

अन्दर रूबी एक आरामकुर्सी पर पड़ी हुई थी। उसके हाथ में अनन्नास के रस का गिलास था। अजीतसिंह दरवाजे के पास खड़ा हुआ ड्रेसिंग टेबुल के सामने अपने जिस्म पर पाउडर छिड़क रहा था। ह्विस्की का गिलास ड्रेसिंग टेबुल पर ही था। वह अभी अभी नहाकर बाहर आया होगा, तभी केवल पायजामा पहने था। तौलिया जमीन पर पड़ा था। कमरे का माहौल कुछ सस्ता सा, कुछ अजीब-सा था।

हरिश्चन्द्र को दरवाजे पर देखते ही रूबी की निगाह एक जगह अचल-सी होकर रह गयी। वह जगह हरिश्चन्द्र का दायाँ हाथ थी। उसमें एक पिस्तौल दिखायी दे रही थी। वह चीखी, पर चीख पूरी नहीं निकली। अजीतसिंह ने घूमकर देखा और उछलकर वह रूबी की तरफ बढ़ा। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "खबरदार ! गोली मत चलाना। पहले मेरी बात

पर रूबी की अधूरी चीख ने ही हरिश्चन्द्र के सोचने की रही सही ताकत खत्म कर दी थी। उसका सिर घूमने लगा था। उसे कुल इतना दिखायी दिया कि अजीतसिंह एक हाथ से रूबी को बाथरूम में ढकेल रहा है और उसका पर एक कुर्सी को उसकी ओर उछालने के लिए बढ़ रहा है।

पहली गोली इतने नजदीक होने के बावजूद दीवाल से जाकर टकरायी। दूसरी गोली के चलते ही अजीतसिंह गिर गया। रूबी बाथरूम का दरवाजा मजबूती से पकड़कर खड़ी रही। उसने अपने को बचाने की कोशिश नहीं की। सिर्फ चीखकर कहा, "तुमने इसे मार डाला है।"

वह तीसरी गोली नहीं चला सका। बरामदे में दौड़ते हुए पाँवों की आवाजें फैलने लगी थीं और शायद चारों ओर नागों ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया था। भड़भड़ करके खुलते हुए दरवाजे। ऊपर की मंजिलों से उठनेवाली पुकारें। अचानक कहीं टेलीफोन की घण्टी बजने लगी। हरिश्चन्द्र को लगा जैसे वह आवाजों के एक उफनते समुद्र में फँस गया है और उसकी लहरें उसे उछाल रही हैं, गिरा रही हैं।

उसने पिस्तौल रूबी की ओर फेंक दी और बोला, "उसमें अभी दो गोलियाँ बाकी हैं। अच्छा होगा, तुम अब मुझे शूट कर दो।"

तीन

दिन के बारह बजे थे। अप्रैल के आखिरी दिन थे और हल्की सी लू चलने लगी थी।

लखनऊ की कैसरबाग कोतवाली। उसके एक छोटे से कमरे में एक पुलिस इंस्पेक्टर बैठा था। इंस्पेक्टर के आगे लकड़ी की एक पुरानी मेज पड़ी थी, जिस पर एक बेंत और एक अखबार के अलावा कुछ भी न था। मेज के पास चार कुर्सियाँ रखी थीं। एक ओर दीवार से सटी हुई लकड़ी की एक बेंच। कमरे की दीवारें, एक कैलेण्डर को छोड़कर, बिल्कुल सूनी थीं। कैलेण्डर में एक शेर का फैला हुआ मुँह अपने भयानक जबड़ों और दाँतों के साथ कमरे में घुसते ही लोगों का स्वागत करता था।

पुलिस इंस्पेक्टर इस वक्त अपने एक सब-इंस्पेक्टर से बात कर रहा था। सब-इंस्पेक्टर एक कुर्सी का सहारा लेकर खड़ा हुआ था और कह रहा था, 'अखबारों ने डायमण्ड होटल के गोलीकाण्ड पर काफी विस्तार से लिखा है और ताज्जुब की बात तो यह है कि लगभग सभी ने डायमण्ड होटल के बारे में राय दी है कि वहाँ व्यभिचार और अपराधों का सबसे बड़ा अड्डा है।'

इंस्पेक्टर के बाल कनपटियों पर सफेद हो रहे थे, उसका चेहरा पतला और आँखें बड़ी-बड़ी थीं। जब वह मुसकराता तब आँखों की चमक बढ़

जाती। उसके विभाग मे मशहूर था कि वह अपनी ग्राखो से हँसता है। उसने कहा, "अखबारो की राय शायद गलत भी नही है, क्या बेटे ?" उसकी आँखो की चमक बढ गयी।

सब-इस्पेक्टर ने गम्भीरता से कहा, "हमे डायमण्ड होटल के बारे मे ज्यादा पता नही है चचा, वह दूसरे थाने मे पडता है। पर मेरा ख्याल है, उसका रिकार्ड काफी साफ सुथरा है।"

इस्पेक्टर का रिटायरमेण्ट नजदीक था। उसके तजुर्बे की दाद देते हुए, उसके साथवाले और मातहत उसे चचा कहते थे। अपने से छोटा का बेटा कहने की उसे आदत पड गयी थी। कभी-कभी वह कम उम्रवाले अपने से ऊंचे अफसरो को भी बेटा बना देता, बाद मे माफी मागता था। हँसी मजाक के बावजूद उसकी गिनती होशियार इस्पेक्टरो मे थी।

उसने डायमण्ड होटल के रिकार्ड के बारे मे कोई राय नहीं दी। कुछ रुककर सब इस्पेक्टर ने नीचे से एक अखबार निकालकर उसे दिखाया। पूछा, 'यह खबर तो आपने पढ ही ली होगी, चचा ?'

चचा ने सिर हिलाकर हा कहा। सब इस्पेक्टर बोला, "इसने अजीत-सिंह की पिछली जिन्दगी पर बहुत सी बातें लिखी है। खाते को खोलकर रख दिया है। लखनऊ मे आकर बसने के पहले वह बम्बई मे क्या करता रहा, इस पर कुछ मजेदार बातें भी बतायी गयी हैं। अगर अजीतसिंह जिन्दा रहता तो मानहानि का मुकदमा चलाने की नौबत आ सकती थी।"

"पर मुर्दे बोल नही सकते बेटा, यही गनीमत है।" इस्पेक्टर ने हँसकर कहा, "तुम यह अखबार मौज से पढकर मजा लेते रहो।'

सब इस्पेक्टर कहता रहा, "'जनक्रान्ति' के नाम से अजीतसिंह जो साप्ताहिक पर्चा निकालता था, उसमे एक बार इस अखबार को खुलकर गालिया दी गयी थी। हो सकता है कि उन्होने अजीतसिंह के बारे मे तभी पूरी जानकारी हासिल की हो। वरना अजीतसिंह की पिछली जिन्दगी के बारे मे लोगो को बहुत कम मालूम है।'

इस्पेक्टर कुछ देर खामोशी से एक अखबार के पन्ने उलटता रहा। फिर पूछा, 'पोस्टमार्टम की रिपोर्ट कब तक आ जायगी बेटे ?"

'लाश साढे आठ बजे पोस्टमार्टम के लिए भेजी गयी थी। सर्जन ने ग्यारह बजे आने का टाइम दिया था। घण्टे दो घण्टे मे हमे रिपोर्ट मिल जानी चाहिए।'

कुछ रुककर वह फिर बोला, "पर चचा, पोस्टमार्टम की कारवाई तो

ग्रोपचारिक ही है। मामला बिल्कुल साफ है। याद म चाहे बदल जाय, पर हरिश्चन्द्र अभी तक तो मान ही रहा है कि गाली उसी ने चलायी थी।"

फिर भी वेट," इस्पक्टर न कहा,' तुम्हारी दौड़ धूप कम नहीं होती। यह हत्या सोच-समझकर, पहले से तय करके की गयी थी और इसके लिए अलग स पूरा पूरा सबूत आना चाहिए। समझ ?"

'उस दस लिया गया है चचा। हत्या का हथियार २८ बोर का एक इन्डियन पिस्तौल है। हरिश्चन्द्र के पास इसका लाइसेन्स है। वह यह पिस्तौल लेकर होटल तक गया था। ऐसी कोई वजह नहीं कि वह अपने बचाव क लिए इस लेकर चल रहा हो। वह होटल जाने से पहले अजीतसिंह के घर भी गया था। उसके नौकर का बयान लिया जा चुका है। उसका कहना है कि हरिश्चन्द्र ने उसी से मालूम किया कि अजीतसिंह डायमण्ड होटल म है। इसम काई शुबह की गुजायश नहीं कि दोपहर के बाद स ही वह अजीतसिंह की हत्या की योजना बना रहा था। यही नहीं, उसने डायमण्ड होटल म अपनी पत्नी रूबी को एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई पाया था। उसके बारे मे यह नहीं कहा जा सकता कि अजीतसिंह के साथ वह किसी ऐसी हालत मे थी कि हरिश्चन्द्र पर एकदम स पागलपन सवार हो जाता और वह गाली चला देता। हरिश्चन्द्र इकबाल न करे तब भी यह दफा ३०२ का बहुत अच्छा केस है। अभियुक्त के बचने का काई सवाल न उठना चाहिए।'

इस्पक्टर ने पूरी बात सुनकर पूछा 'इन दाना के घरा की तलाशी ली गयी है या नहीं ?"

सब इस्पक्टर ने कुछ हिचकचकर कहा, 'इसकी भी जरूरत होगी चचा ?"

"तुम बेटे, बछेडो की तरह कुलाचें ही भरत रहोगे, कभी कुछ सीखोगे नहीं !' चचा गम्भीर हो गय। बोले, "सुनो बेट, आकस्मिक उत्तेजना की ब्यारी पर अभियुक्त की ओर स हत्या के आराप को हल्का कराया जा सकता है। हो सकता है कि कल हरिश्च द्र को अपने घर मे या और कहीं काई ऐसी बात मालूम हुई हो—चिट्ठी या फोटो—जिसकी वजह स वह अपना विवक खो बैठा हो। स्त्री और अजीतसिंह के सम्बन्धा की पूरी पूरी जाच करना जरूरी है।

इस्पक्टर न फिर पूछा "और रूबी का बयान ?"

'अभी नहीं लिया जा सका है। कल रात वह अस्पताल भी गयी थी

फिर यहाँ आने पर हरिश्चन्द्र की कोठरी के पास काफी देर रुकी रही। बाद मे वह फिर अस्पताल गयी। वह कुछ भी बोल नहीं रही थी। अब भी वह सदमे की ऐसी हालत म है कि अभी उससे ठीक स बात नही की जा सकती। उसके एक रिश्तेदार आधी रात के बाद बडी कोशिश करके उस अपन साथ ले जा पाये हैं।"

इस्पेक्टर ने धीरे से सिर हिलाया और अखबार के पन्न आलस के साथ उलटने लगा। 8914

सडक पर इतनी गर्मी के बावजूद कोई जुलूस निकल रहा था। लोग नारे लगा रह थे। सब इस्पेक्टर ने भौहें सिकोडी और कहा 'अब तो कारपोरेशन के चुनाव के सिफ तेरह दिन रह गये है। शोरगुल बढता ही जायगा। साले पूरे शहर का कबाडी बाजार बनाये हुए हैं।'

अचानक इस्पेक्टर ने पूछा, 'अजीतसिंह बम्बई छोडकर कब आया था ?"

"लगभग दस साल हुए।" सब इस्पक्टर न रुककर बात शुरू की, "इस समय उसकी उम्र, जसा कि अखबार म दिया है, अडतालीस साल की थी। वह मेरठ का रहनेवाला था और इक्कीस साल की उम्र म ही बम्बई चला गया था। यह तो आपने भी देखा होगा, वह अब भी काफी खूबसूरत और तन्दुरस्त था। जवानी के दिना मे तो "

सब इस्पक्टर न रुककर फिर अपनी बात शुरू की, "बम्बई मे उसने शुरू मे आठ दस फिल्मा मे काम भी किया था, दो फिल्मा म तो उसे बाका-यदा हीरो का रोल मिला था आपन तो बचा, वे फिल्म शायद दखी भी हो, आज से पचीस साल पहले की फिल्म। मैं तो तब बहुत ही छोटा था, मरी उम्र फिल्म दखन लायक नही थी । फिल्मा म उसका नाम अजीत-सिंह नही, सन्तोषकुमार हुआ करता था।

इस्पेक्टर न कहा "सन्तोषकुमार की फिल्म मैंने देखी थी। कोई एसा तो खूबसूरत दिखता नही था, पर तुम लोगो के स्टण्डड से बस ठीक ही था। उसकी आँखें चमकन लगी, "उन दिना तो पृथ्वीराज, चन्द्रमोहन, सुरेन्द्र, प्रभावकुमार वगैरह का जमाना था। सन्तोषकुमार को कौन घास डालता ?'

"जो भी हो,' सब-इस्पक्टर बोला, 'बम्बई म रहते हुए नौकरी छोड़ी साल बाद उसन ऐक्टिग छोड दी और कुछ सेठो की दान्नी मे फिल्म-प्रोडक्शन का धधा शुरू किया था। पर इस काम मे भी वह जमा न रहा

रहा, कुछ दिनों तक उसने वहाँ से सिनेमा की एक मासिक पत्रिका भी निकाली। समझा यही जाता है कि वह बम्बई में बराबर अमीर लोगों की सोहबत में रहा, खाते ने खूब शराब पी और रेस के मैदान में जुआ खेला। उसने शादी नहीं की थी उसका कोई नजदीकी रिश्तेदार भी नहीं है, सिर्फ एक चचेरी बहन को छोड़कर, जो मेरठ में रहती है। अजीतसिंह के नौकर से पता लेकर उसे इस दुर्घटना की खबर फोन द्वारा कर दी गयी है।"

इस्पेक्टर ने कहा "अजीतसिंह के बारे में इतना जानना काफी नहीं है बरखुरदार। जरा और गहरे जाकर पता लगाओ।'

'बम्बई का तो इतना ही पता लग सका है। लगभग दस साल हुए वह लखनऊ आ गया था। उसके पास जरूर काफी रुपया होगा, क्योंकि एक साल के भीतर ही उसने एक प्रेस खरीद लिया था। उसके पहले वह डायमण्ड होटल में रहता था प्रेस ले चुकने पर उसने उसकी इकमंजिली इमारत पर दूसरी मंजिल अपने रहने के लिए बनवा ली थी और आकर वहीं रहने लगा था।

"साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' तो आप भी पढ़ते रहे हैं " अब इस्पेक्टर ने हँसकर अपनी बात खत्म की, "एक बार जब आप चौक थाने में थे, उसने आपकी भी तारीफ की थी।'

इसमें कौन सी नयी बात थी?' इस्पेक्टर ने कहा,"सभी शाहद मेरी तारीफ करते रहते हैं।"

साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' दरअसल राजनीति के सभी नेता, ऊँचे अफसर और व्यापारी पढ़ते थे। इस पर्चे का जनक्रान्ति से कोई सम्बन्ध न था। इसमें शहर की सिर्फ सनसनीखेज खबरें छपती थीं और प्राय ऐसा होता था कि एक सप्ताह में जिसके खिलाफ कोई अपमानजनक खबर छपती, फिर उसी के बारे में दो-तीन सप्ताह बाद कोई बहुत अच्छी खबर छप जाती थी। अजीतसिंह को शहर के सभी महत्त्वपूर्ण लोग जानते थे और कोई उसके साप्ताहिक अखबार से उलझना नहीं चाहता था।

सब इस्पेक्टर ने फिर कुछ सोचकर कहा, एक बात और है। आज से दस साल पहले जब अजीतसिंह ने यहाँ आकर अपना प्रेस चलाया तो शुरू शुरू में सोसाइटी के ऊँचे वर्गों में उसकी बड़ी पूछ हुई थी। तब तक उसके बारे में फिल्म लाइन के काम की हवा बँधी थी। खास तौर से वे लोग जो उसकी उम्र के थे उसे एक ऐक्टर या प्राड्यूसर के रूप में देखते थे। यहाँ की दर्जनों महिलाओं ने उसे हाथों हाथ लिया था और एकाध

परिवारो मे उसे लेकर झगडे फसाद भी हुए थे।"

इस्पेक्टर ने आँखें मूदे मूदे सिर हिलाकर कहा, "मैं जानता हूँ।' फिर उसने आखें खोली और बोला, 'रवी का बयान काफी होशियारी से लेना।"

तब तक एक जीप कोतवाली के अन्दर आयी। ड्राइवर उसे काफी रफ्तार से लाया था। इस्पेक्टर के कमरे के सामने आकर उसने एकदम से ब्रेक लगाया। जीप रुक गयी, पर उसमे हल्की सी धूल चारो ओर उडकर फैल गयी। इस्पेक्टर ने नाक सिकोडकर दरवाजे के बाहर देखा। जीप मे कई झण्डे लगे हुए थे और जाहिर था कि कारपोरेशन के चुनाव अभियान मे उसका इस्तेमाल हो रहा है। उसमे सात आठ आदमी आलू के बोरो की तरह लदे हुए थे। तीन आदमी उतरकर कमरे के अन्दर आये। उनमे जो सबसे आगे था वह सिल्क का कुर्ता और कीमती धोती पहने था। उसकी अँगुलियो मे दो तीन अँगूठियाँ थी। आखो पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा। होठो पर पान की लाली। उम्र चालीस के पार हो चुकी होगी। रग गोरा था, कद छोटा और जिस्म दुबला। कुल मिलाकर एक बड़े ही मधुर और आकर्षक व्यक्तित्व का आभास होता था उसे देखकर। उसके पीछे जो दो आदमी थे वे काफी लम्बे चौडे और तन्दुरस्त थे और शक्ल से बाजारू किस्म के आदमी जान पडते थे।

इस्पेक्टर ने उठकर सबसे आगेवाले आदमी से हाथ मिलाया और कहा "बैठिए शान्तिप्रकाश जी! इस धूल धक्कड मे कैसे तकलीफ की?"

वे सब कुर्सियो पर बैठ गये। शान्तिप्रकाश ने हँसकर कहा, "चुनाव। आपके हर सवाल का यही जवाब है।"

"आप तो सुना था मेयर के पद के लिए खडे हो रहे हैं?'

शान्तिप्रकाश ने कहा 'पर वह तो आगे की बात है, पहले हमारे कारपोरेटर तो शान्ति से चुन लिये जायें।"

"जहाँ शान्तिप्रकाश खुद मौजूद हैं, वहा शान्ति तो रहेगी ही।" इस्पेक्टर ने हँसकर कहा। फिर पूछा, 'क्या, कोई दिक्कत है?"

वह बोले, 'अभी ही मेरे एक आदमी ने गालागज की चौकी पर रिपोर्ट दर्ज करायी है। चुनाव के प्रचार मे वह उधर गया था। आप जानते ही है उधरवाले गुण्डो को। मारपीट कर बैठे। अभी कोई गिरफ्तार नही हुआ है। इधर से निकल रहा था। सुना, आप इस वक्त यहाँ हैं तो सोचा आपके कान मे भी बात डाल दू।'

इस्पेक्टर ने कहा, "अभी फोन करके चौकी से पूछे लेता हूँ।"

शान्तिप्रकाश और उनके आदमी उठ खड़े हुए। कमरे से बाहर निकलते निकलते व ठिठककर खड़े हो गये। बोले, 'सुना है अजीतसिंह खत्म हो गया ?"

इस्पेक्टर ने कहा, "जी हाँ। डाक्टरों ने कोशिश तो बहुत की, पर बेचारा बचा नहीं। आज सवेरे उसका देहान्त हो गया।"

शान्तिप्रकाश ने अफसोस के साथ कहा, "कल तो सुना था ऑपरेशन करके गोली निकाल ली गयी थी और उम्मीद थी कि वह बच जायगा।"

"हा, उम्मीद तो हो गयी थी। दरअसल गोली जिगर में नहीं पहुँची थी और डॉक्टर का ख्याल था कि मरीज बच सकता है।"

शान्तिप्रकाश ने पूछा, "फिर हो क्या गया ?'

यह तो भगवान ही बता सकता है। इस्पेक्टर ने कहा, "आखिर पेट मे गोली गयी थी। ऐसे मामलों में बचना मुश्किल ही होता है।'

शान्तिप्रकाश कहने लगे, 'मैं तो हमेशा से अजीतसिंह की हिम्मत और ईमानदारी का कायल था। उसके साप्ताहिक पत्र जनक्रान्ति का मैं हमेशा पढ़ता था। समाज की गन्दगी और भ्रष्टाचार का इतनी निर्भीकता से मुकाबला करनेवाले पत्रकार कितने है ?

इस्पेक्टर ने अंग्रेजी में कहा, 'एक भी नहीं।' फिर उसने अपने सब इस्पेक्टर की ओर देखा। वह अपनी मुसकान छिपाने के लिए पीछे दीवार की ओर देखने लगा।

शान्तिप्रकाश ने उनसे विदा ली।

इस्पेक्टर ने कलाई की घड़ी देखी एक बजनेवाला था। कहा, "अभी पोस्टमार्टम रिपोर्ट नहीं आयी।"

मैंने हेड कास्टेबल दाताराम को तैनात कर दिया है। वह उसकी नकल लेकर ही आयगा।'' सब इस्पेक्टर ने कहा 'आप चाहे तो कोर्ट हो आयें। मैं वहाँ फोन से बता दूंगा।

इस्पेक्टर ने कहा, 'हरिश्चन्द्र को हवालात से यहीं बुलवा लो। मैं उससे दो एक बातें कर लूँ तब जाऊंगा।'

थोड़ी देर में दो कास्टेबल हरिश्चन्द्र को लेकर कमरे में आये। उसकी शक्ल से लगता था, एक दिन में ही उसकी उमर में बीस बरस जुड़ गये हैं। पर आंखों से पता चलता था वह शान्त है और आनेवाली मुसीबतों का सामना करने को तैयार है। इस्पेक्टर ने उसे कुर्सी पर बैठने का इशारा

किया और धीरे से कहा, "आपको मालूम ही होगा, अजीतसिंह को बचाया नही जा सका। वह आज सुबह आठ बजे मर गया।"

हरिश्चन्द्र न कोई जवाब नही दिया, पर उसकी चेष्टा से लगा कि उसे यह खबर मिल चुकी है। इस्पेक्टर ने ही कहा, "कल की घटना की खबर अखबारो मे भी आ चुकी है।" उसने मेज पर पडे हुए अखबारो की ओर इशारा किया, "आप देखना चाहे तो देख लें।"

हरिश्चन्द्र ने बहुत धीरे से कहा, "शुक्रिया, उसमे मेरी दिलचस्पी नही है।"

इन्पक्टर थोडी देर हरिश्चन्द्र की ओर देखता रहा, पर उसने अपनी निगाह ऊपर नही उठायी। वह जमीन पर आँख गडाये रहा। तब उसने पूछा, 'आपकी शादी कब हुई थी?"

"सात साल पहले।' कहकर हरिश्चन्द्र ने इस्पेक्टर की ओर देखा और शान्त स्वर मे कहा, 'देखिए, जो कुछ हुआ है उसकी पूरी इत्तला आपको है ही। उसके बाद भी क्या इस सवाल जवाब की कोई जरूरत रह जाती है?"

इस्पक्टर न मुलायमियत से जवाब दिया, "सुनो बेटे," आदत के अनुसार उसे बेटा कहकर वह थोडा हिचका पर उसी लपेट मे कहता रहा, "तुम मेरी बातो का जवाब न देना चाहो तो न दो। कानून तुम्हे हक देता है कि तुम न चाहो तो कोई भी बयान न दो।"

कुर्सी पर थोडा खिमककर उसन कहा, "तुम्हारी ओर से कोई वकील किया जा चुका है, या नही?"

हरिश्चन्द्र न कहा 'वकील का इन्तजाम हो चुका होगा, पर मुझे वकील की जरूरत नही, और न बयान दन मे ही मुझे कोई हिचक है। पर जो बात मैं एक बार कह चुका हूँ, उसे बार बार कहलाने की क्या जरूरत है?'

कमरे म थोडी दर शान्ति रही। फिर इस्पेक्टर ने कहा, "मैं सिफ एक बात जानना चाहता था, तुम्हारी मिसेज से अजीतसिंह की पहली बार मुलाकात कब हुई थी?'

हरिश्चन्द्र न कुर्सी पर बठन का ढग बदला। थोडी देर वह सोचता रहा। फिर बोला, "आज से दो साल पहल वह मेरे घर आया था—रत्ना के साथ। रत्ना उसकी चचेरी बहन है और मेरठ मे लडकियो के एक कालिज मे पढाती है, शादी के पहले रूबी भी उसी कालिज म पढाती थी।

रत्ना से उसकी बड़ी गहरी दोस्ती थी, और शायद अब भी है। अजीतसिंह को मैं खुद ज्यादा घनिष्ठता से नहीं जानता। रत्ना कुछ दिनों के लिए लखनऊ आयी थी और उसके साथ रुकने के बजाय रूबी के कारण वह हमारे यहा रुकी। तभी अजीतसिंह पहली बार हमारे घर आया था। उसके बाद वह बराबर हमारे यहाँ आता-जाता रहा, शायद मेरी गरमौजूदगी मे भी आता रहा।

'लगभग साल भर से उसने हमारे यहा आना जाना काफी कम कर दिया था शायद यह समझकर कि मैं उसे बहुत पसन्द नही करता। पर मुझे मालूम है कि रूबी उससे बराबर मिलती रहती थी।" फिर कुछ रुककर हरिश्चन्द्र ने पूछा "आप कुछ और जानना चाहते हैं?"

इस्पेक्टर के कुछ कहने के पहले ही एक कांस्टेबुल हाथ मे टेलीफोन लिये कमरे क अन्दर दाखिल हुआ। उसने फोन का कनेक्शन दीवार के एक सॉकेट म लगाकर उसे मेज पर रख दिया और रिसीवर उसके हाथ मे देकर बोला, "आपका फोन है। हेडकास्टेबुल दाताराम बोल रहे हैं।'

वह सेल्यूट करके कमरे के बाहर चला गया। इस्पेक्टर ने फोन पर अपनी चुस्त आवाज म कहा "हलो।' उधर हेडकांस्टेबुल दाताराम ने कुछ कहना शुरू किया। अचानक इस्पेक्टर ने तीखेपन से पूछा, "हलो हलो यह क्या मामला है? फिर से बताओ?"

सब इस्पेक्टर भी यह समझकर कि फोन पर कोई महत्त्व की बात कही जा रही है अपनी कुर्सी पर आगे बढ आया। इस्पेक्टर का चेहरा गम्भीर हो गया था। हरिश्चन्द्र ने उसे घूरकर देखा। इस्पेक्टर तीन मिनट तक उधर की बात सुनता रहा। बीच में 'हां'—ठीक 'अच्छा' के अलावा उसने कुछ भी नही कहा। पूरी बात सुनकर वह बोला, 'ठीक है दाताराम अब तुम्हे रिपोर्ट की नकल के लिए वहा रुकने की जरूरत नही। तुम सीधे यहीं आ जाओ।"

रिसीवर का फोन पर रखकर वह कुछ देर चुप रहा। फिर उसने जेब स रूमाल निकाला और अपना चेहरा पोछा।

सब इस्पेक्टर को अपनी ओर देखता पाकर उसने कहा, "पोस्टमार्टम हो चुका है। सर्जन की राय है कि अजीतसिंह की मृत्यु पिस्तौल की गोली स नहीं हुई है।'

सब इस्पेक्टर ने चुपचाप इस सूचना को समझने की कोशिश की। हरिश्चन्द्र ने चौंककर उसकी ओर देखा। कुछ रुककर सब इस्पेक्टर ने

पूछा "फिर मौत की कौन-सी वजह हो सकती है? हार्टफेल? हैमा-रेज?" वह भौंह उठाकर उसकी ओर देखता रहा।

इंस्पेक्टर होंठ दबाकर कुछ सोच रहा था। उसने मेज की ओर देखते हुए कहा, "अजीतसिंह को जहर दिया गया है।"

'जहर!" हरिश्चन्द्र और सब इंस्पेक्टर ने चौंककर लगभग साथ-साथ इस शब्द को दोहराया।

"हाँ, जहर! जिन्दगी इसी को कहते हैं बेटे।" थोड़ी देर सन्नाटा रहा। "उस अस्पताल में ही किसी ने जहर दिया होगा। डाक्टर जहर की किस्म के बारे में कोई राय नहीं कायम कर सका है। उसके लिए 'केमीकल एनालिसिस' जरूरी होगा। पर उसका ख्याल है कि उसे अफीम-टिंक्चर पिलायी गयी है।"

"चचा अब तो हमें..."

'तुम्हें अब कुछ नहीं करना है, बेटे। मुकदमा तुम्हारी हैसियत से ऊपर उठ गया है। यह केस अब सी० आई० डी० के सुपुर्द होगा।"

वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। बोला, 'चलो, एस० पी० साहब से इसी वक्त बात करनी होगी। कागजात जल्दी से तैयार कर लो।"

हरिश्चन्द्र कुर्सी पर गुमसुम बैठा हुआ था। इंस्पेक्टर ने उससे कहा, "आप अपने वकील को बुलाकर अपने लिए जमानत की कोशिश कर लें। हो सकता है कि आप पर अब हत्या के बजाय हत्या की कोशिश का ही जुर्म रह जाये।"

एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर मजाक का पुराना धूप छांही रंग फैल गया। 'तुम्हारी किस्मत अच्छी है बेटे।"

चार

सी० आई० डी० का दफ्तर। चारों ओर लगभग पांच फुट ऊँची चहार-दीवारी के अन्दर खड़ी हुई यह एक खूबसूरत इमारत थी। सामने चार-पांच एकड़ जमीन। उसके एक हिस्से में यूकेलिप्टस का एक घना बाग, चहारदीवारी के अन्दर किनारे किनारे गुलमोहर और अमलतास के पेड़ों की दोहरी कतारें। अप्रैल के अंतिम दिनों में दोनों ही प्रकार के पेड़ लाल और पीले फूलों से ढके हुए थे। इमारत के पास लगभग एक एकड़ का विस्तृत लॉन था। उसी में दोनों सिरों पर टेनिस कोर्ट बनाये गये

दुमंजिला इमारत के सामने के हिस्से की दीवारों पर कई तरह की लताएँ चढ़ायी गयी थी। पोर्टिको का बहुत सा हिस्सा बगनबेलिया के सुर्ख फूलों से ढका हुआ था।

कम्पाउण्ड में आते ही भारतीय महाराजाओं के बीते हुए वैभव की याद आने लगती थी। पर कुछ और अन्दर घुसने पर पोर्टिको में आते ही कमरों में उठनेवाली धीमी आवाजों को सुनकर और सधे हुए कदमों से बरामदों में चलते हुए चुस्त आदमियों को देखकर मालूम हो जाता था, यह किसी रईस का आरामगाह नहीं है, बल्कि वह जगह है जिसकी याद करके बड़े से बड़े अनुभवी अपराधी भी एक बार काँप जाते हैं।

इमारत की दूसरी मंजिल पर सामने की ओर बरामदे से मिला हुआ एक कमरा था। उस पर तख्ती लगी थी—विद्यानाथ सिन्हा, सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ पुलिस (क्राइम ब्रांच)। विद्यानाथ इस समय फोन पर सण्ट्रल अस्पताल के सुपरिण्टेण्डेण्ट डा० चटर्जी से बात कर रहे थे। अजीतसिंह की मृत्यु सण्ट्रल अस्पताल में ही हुई थी। विद्यानाथ के कमरे में अलावा उनके एक और आदमी मौजूद था। वह मँझोले कद का बलिष्ठ व्यक्ति था। उसका चेहरा भरा हुआ था और लगता था, वह हर बात पर आसानी से हँस सकता है। आँखें छोटी, पर असाधारण रूप से तेज। वह विद्यानाथ के सामने मेज के दूसरी ओर एक दफ्तरवाली कुर्सी पर बिल्कुल सही ढंग से बैठा था। उसका नाम जे० ए० सिद्दीकी था और वह सी० आई० डी० का मशहूर इंस्पेक्टर था।

विद्यानाथ डा० चटर्जी से फोन पर बातें करते रहे "आश्चर्य है कि जब अजीतसिंह बेहोशी की हालत में था और उसकी हालत बराबर गिरती जा रही थी किसी भी डॉक्टर को यह सन्देह नहीं हुआ कि उसे जहर दिया गया है!"

फिर वह थोड़ी देर तक उधर से डॉ० चटर्जी की बात सुनते रहे फिर बोले, 'यह ठीक है डॉक्टर। पर मुझे 'टाक्सिकालॉजी' का क-ख ग सीखने की जरूरत नहीं। मैं जानता हूँ कि अफीम और उसके भिन्न भिन्न रूपों का इंसान पर क्या असर होता है पर सुबह होने पर जब अजीतसिंह की नींद नहीं टूटी, तब किसी को तो शक होना ही चाहिए था!'

वह फोन पर थोड़ी देर चुप रहे, फिर हल्के ढंग से हँसकर बोले, 'माफ करना डाक्टर, मैं अभी किसी को दोष नहीं दे रहा हूँ। पर मेरे दिमाग में एक प्रतिक्रिया थी उसे आपसे बता देना जरूरी समझा।'

थोडी देर चुप रहने के बाद उन्होंने फिर कहा, "वह ठीक है। अस्पताल के 'परा-मेडिकल स्टाफ' की कहीं न कहीं गलती और असावधानी तो थी ही। उनके खिलाफ आप जरूर कारवाई करें, पर मेरी राय है कि इधर चार-छह दिन रुके रहें। तब तक हम लोग शायद असलियत का पता लगा लेंगे। उस आधार पर असावधानी बरतनेवाले स्टाफ पर कारवाई करने का मसाला भी आपको मिल जायगा।'

इस बार डा० चटर्जी काफी देर उधर से बोलते रहे। विद्यानाथ उनकी बातें ध्यान से सुनते रहे। अन्त में बोले, 'यह ठीक है। इस सिलसिले में हर छोटी से छोटी घटना का और हर टाइम का ब्योरा आप तैयार करा लें। वैसे हमारे इंस्पेक्टर आपके जूनियर डाक्टरों से मिलकर कुछ बातें नोट कर लाये हैं। उनके बारे में वह आपसे मिलकर जल्दी ही दुबारा बात करेंगे।"

इंस्पेक्टर सिद्दीकी ने इसी बीच एक पैड पर पेंसिल से कुछ लिखकर विद्यानाथ के सामने रख दिया था। विद्यानाथ ने फोन पर बात करते करते उस पर नजर डाली और बोले, 'एक बात और है डाक्टर। इंस्पेक्टर सिद्दीकी आपसे आज रात नौ बजे मिलने आयेंगे। आशा है आपको असुविधा न होगी। नहीं, अब तो छह बजनेवाले हैं। आध घण्टे बाद ही उन्हें कहीं और जाना होगा। ठीक है। वह नौ बजे आपसे मिलेंगे। शुक्रिया!

उसे छोड़िए सनसनी तो ऐसे मामलों में होती ही है। हम सभी भरसक कोशिश करेंगे। आपका स्टाफ निर्दोष है, तो अस्पताल की बदनामी कैसे होगी! अच्छी बात है। थैंक्स अगेन।"

फोन रखकर उन्होंने सिद्दीकी की ओर देखा। बोले, 'डा० चटर्जी का कहना है कि मरीज सवेरे तक सोता रहा था। रात को एक बार बेहोशी टूटने के बाद उसे जब नींद आयी तब नर्सों को उसके बारे में इत्मीनान हो गया था। इसीलिए उसकी नब्ज आदि की परीक्षा फिर उस तरह नहीं हुई जैसे बेहोशी की हालत में की जा रही थी। सुबह साढ़े सात बजे उन्होंने देखा कि मरीज गहरी नींद में नहीं, बल्कि गहरी बेहोशी में है। उन्होंने उसी वक्त डॉक्टर को खबर की। पर तब तक काफी देर हो चुकी थी। आठ बजे तक वह मर गया। डॉ० चटर्जी खुद कल रात शहर से बाहर थे। वह आज ही दोपहर को लौटे हैं। यह मामला जूनियर डाक्टरों के हाथों में था। उनका कहना है कि डा० मिश्रा को जो सुबह उस वार्ड में ड्यूटी पर थे, मरीज के मरते मरते शक हो गया था कि इसकी मृत्यु किसी असाधारण

कारण से हुई है। उसकी आँखों की पुतलियाँ सिकुड़ गयी थी और मरते ही उसके नथनों पर हल्का सा झाग दिखने लगा था। तभी डॉ० मिश्रा ने लाश का तत्काल पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया, सजन दास ने पोस्टमार्टम किया है। उनसे डा० मिश्रा न अपना शुबहा बता भी दिया था। बहरहाल तुम्हें इन सबका बयान बहुत समझ-बूझकर लेना होगा।'

सिद्दीकी ने कहा, 'ज्यादातर ये बातें मुझे मालूम हैं सर! आज ढाई बजे से पाँच बजे तक मैं अस्पताल ही में रहा हूँ। डा० चटर्जी को किसी भी मामले की निजी जानकारी नहीं, क्योंकि वह कल रात और आज सुबह अस्पताल में थे नहीं। मैंने अस्पताल के लगभग उन सभी लोगों से बात कर ली है जिनका इस घटना से सम्बन्ध हो सकता था। सिर्फ दो-तीन लोग छूटे हैं। आपकी इजाजत हो तो मैं शुरू से पूरी स्थिति बयान कर दूँ। लिखित रिपोर्ट मैं बाद में पेश करूँगा।'

इसी बीच टेलीफोन का बजर बज उठा। विद्यानाथ ने रिसीवर पर अपने पी० ए० की बात सुनी और बोले, 'मैं इस वक्त बात नहीं कर पाऊँगा। आधे घण्टे तक जिन्हें तुम बहुत लाजिमी समझते हो उनका फोन छोड़कर मुझे कोई भी कॉल मत देना।" उसके बाद उन्होंने सिद्दीकी से कहा, "हाँ तुम शुरू से बता रहे थे।"

सिद्दीकी ने कहा, "डायमण्ड होटल में कल शाम सात बजे के लगभग हरिश्चन्द्र ने अजीतसिंह पर गोली चलायी। उस पर २५ बोर के पिस्तौल से हमला किया गया था। उस वक्त हरिश्चन्द्र कमरे के बाहरी दरवाजे पर था अजीतसिंह कमरे के दूसरे सिरे पर बाथरूम के पास था और दोनों में कम से कम सत्रह फुट का फासला था। गोली अजीतसिंह को सामने से नहीं लगी। नहीं तो वह उसके पेट में घुसकर पीछे से निकल सकती थी। अजीतसिंह उस वक्त मुड़ रहा होगा। तभी गोली एक साइड से उसके पेट में घुसी और दूसरी ओर कूल्हे की हड्डी के पास फँस गयी। अजीतसिंह गोली चलते ही गिरकर बेहोश हो गया था। पर अस्पताल तक आते आते उसे होश आ गया था। लगभग सात बजे उस पर हमला हुआ था। डायमण्ड होटल के मालिक ने उसी की कार पर रखकर उसे तत्काल सेण्ट्रल हास्पिटल भेजा। वहाँ वह सात बजकर पन्द्रह मिनट पर पहुँचा। एमर्जेंसी में उसी समय प्राथमिक चिकित्सा करके सात पचीस पर उसकी स्क्रीनिंग की गयी। उसी वक्त उसका एक्स रे भी लिया गया।

एक्स रे को देखकर सजन ने उसका आपरेशन करके गोली निकालने

का फैसला किया। ऑपरेशन के पहले डाक्टर ने अजीतसिंह का बयान भी लिखा है, जिसमे अजीतसिंह ने हरिश्चन्द्र को दोषी बताया है। उसे सात बजकर पचपन मिनट पर आपरेशन टेबल पर लाया गया। चूंकि वह होश मे था और दर्द से कराह रहा था, इसलिए अनीस्थीशिया देकर आपरेशन किया गया। आपरेशन के दौरान मालूम हुआ कि उसका जिगर, तिल्ली और किडनी सुरक्षित हैं। गोली आंतो को मामूली तौर से घायल करती हुई कूल्हे की ओर बढ गयी थी। पर आँतें कई जगह जख्मी हुई थी। आपरेशन मे आंतो को सिलकर खून बहने से रोक दिया गया। गोली बाहर निकाल ली गयी। अजीतसिंह को आपरेशन थियेटर से सर्जिकल वार्ड मे लगभग नौ बजे पहुँचाया गया।

"आपरेशन थियेटर से बाहर आकर सर्जन ने आशा प्रकट की कि मरीज बच सकता है। वार्ड मे अजीतसिंह अनीस्थीशिया के असर से सवा ग्यारह बजे तक बेहोश रहा। सवा ग्यारह बजे के बाद उसे होश आया, तब कुछ बाहरी लोग उसे देखने भी गये। अस्पताल के नियमो के अनुसार जनरल वार्ड मे मरीजो से उस वक्त नही मिला जा सकता था। मिलने के घण्टे मुकर्रर है। पर नियम का पालन नही किया गया। साढे ग्यारह बजे अजीतसिंह को फिर झपकी आ गयी, शायद वह आधी बेहोशी की हालत मे भी रहा। इस हालत मे वह सवेरे साढे सात बजे तक रहा। साढे सात बजे समझा गया कि वह बराबर डूब रहा है और बेहोशी गहरी होती जा रही है। अत ड्यूटी से डा० मिश्रा को बुलाकर दिखाया गया। डा० मिश्रा अभी बिल्कुल ही नये है। उन्होने उसे कोरामिन वगैरह दी और अपने सीनियर को बुलाया। पर उसके आते आते सात बजकर बावन मिनट पर अजीतसिंह की मृत्यु हो गयी।

'रात को आपरेशन थियेटर से वार्ड के लाये जाने के बाद नर्स ने उसके टम्प्रेचर, नब्ज आदि को आधे आधे घण्टे पर देखा था और उसका रिकार्ड रखा था। पर लगता है कि उसके होश मे आ जाने के बाद उन्होने ढील डाल दी और उसे पिछली रात चुपचाप बेहोशी मे, जिसे वे नीद समझे थे, पड़ा रहने दिया। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट मे डा० दास ने राय दी है कि उसे शायद अफीम टिंक्चर दी गयी थी। इसके बारे मे अन्तिम राय लाश के 'विसेरा' की केमिकल अनालिसिस हो जाने के बाद ही कायम की जा सकेगी।

'दरअसल पोस्टमार्टम से प्रकट हो गया है कि आपरेशन का

बिल्कुल ठीक था। उससे हैमरेज आदि नहीं हुआ। अनीस्थीशिया से मृत्यु होने का सवाल भी नहीं था। उसे रात को एक बार होश आ ही चुका था। पर लाश का पेट अन्दर से बुरी तरह कंजेस्टड था और डॉ० दास की राय में अफीम के जहर के सभी लक्षण लाश में मौजूद थे। मैंने अस्पताल में और उसके आसपास अपने आदमियों द्वारा उसी वक्त उन सभी सुरागों की खोज करायी थी, जिनका सम्बन्ध इस हत्या से हो सकता है। आधे घण्टे के दौरान सर्जिकल वार्ड के पास एक डस्टबिन में हमें एक छोटी-सी कत्थई रंग की शीशी मिली, जिसमें द्रव की एक आध बूंद बाकी है। सूंघने से उसमें अफीम की गंध आ रही है। मैं समझता हूँ कि हत्यारे ने इसी शीशी में अजीतसिंह का जहर देकर वापस जाते हुए इस डस्टबिन में डाल दिया होगा। इस शीशी में एक औंस के करीब द्रव आ सकता है। अजीतसिंह जिस हालत में था उसमें उसे खत्म करने के लिए आधा औंस भी काफी था।

'शीशी को हमने बाकायदा कब्जे में लेकर उसके द्रव की जाँच के लिए उसे भी केमिकल एक्ज़ामिनर के पास भेज दिया है। कल सुबह तक शीशी की और विसरा की जांच होकर आ जायेगी। शीशी के चारों ओर कागज का एक लेबल चिपका है जिससे लगता है कि पहले उसमें मल्टी-विटामिन गोलियां रखी जाती थीं। कागज की वजह से शीशी पर उंगलियों के कोई निशान नहीं हैं।"

सिद्दीकी बात करते करते रुक गया। विद्यानाथ ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा, "मेरे टाइम की फिक्र न करो। मुझे अभी एक दूसरे मामले में आठ बजे तक रुकना है। अपनी बात जारी रखो।"

सिद्दीकी ने कहा, "सर्जिकल वार्ड एक इकमंजिली इमारत में है। उसके बीच से एक गलरी जाती है। गलरी के दोनों ओर दो बड़े बड़े कमरे हैं। इन्हीं में दो सर्जिकल वार्ड हैं। पूरबवाला वार्ड मर्दों के लिए है, पच्छिमवाला औरतों के लिए। अजीतसिंह को मेल वार्ड के दक्खिन की तरफवाले कोने के बेड पर रखा गया था। वार्डों में उत्तर की तरफ से ही जाया जाता है। दक्खिन में जहां हाल खत्म होता है, लवटरी है। इस तरह इमारत के दक्खिनी हिस्से में, जहाँ गैलरी खत्म होती है, एक तरफ मर्दाने वार्ड की लेवटरी है और एक तरफ जनाने वार्ड की। उनका एक एक दरवाजा गलरी में खुलता जरूर है, पर वह ज्यादातर अन्दर से बन्द रहता है। इस तरह उनमें कोई सीधे गैलरी से नहीं आ जा सकता। किसी भी

लेवेटरी म जाने के लिए वाड के बीच से हाकर जाना पडेगा। उस वक्त इसकी अहमियत नही समभी गयी थी, पर सवेरे जब महतर मदान वाड की लेवेटरी धान के लिए आया तब उसे गलरी की ओर का दरवाजा खुला हुआ मिला। एसा लगता है कि हत्यारा रात को किसी समय वाड म दाखिल हुआ है और अजीतसिंह को जहर देकर बजाय उत्तर की ओर स वापस जाने के, लवटरी म चला गया है और वहा स अन्दर का दरवाजा खोलकर वाड के दूसरी तरफ निकल गया है। अस्पताल से बाहर जाते-जाते उसन जहर की शीशी डस्टबिन म फकी है।

'उत्तर ही की ओर, बरामदे के एक कोन मे " सिद्दीकी ने कागज पर पेंसिल से नक्शा बनाते हुए कहा "ड्यूटी रूम है जिसम वाड की असिस्टण्ट मट्रन या सिस्टर बैठती है। रात को दस बजे से सवेरे छह बजे तक एक सिस्टर और दो नर्सों की पूरे वाड मे ड्यूटी रही थी। नर्सों को वाड के अन्दर रहना था और सिस्टर ज्यादातर ड्यूटी रूम म रही। मुझे मालूम हुआ है कि सिस्टर, जिसका नाम मिस वायल है, बराबर ड्यूटी पर रही, पर दोनो जूनियर नर्सें साढे ग्यारह बजे के बाद, सब मरीजो के सो जाने पर अस्पताल मे इधर-उधर गप लडाती रही। थोडी थोडी देर के लिए व वाड मे भी आ जाती थी। वाड म थोडी दर तक वाड ब्वाय भी था। कायदा यह है कि मरीजो से मुलाकात के घण्टो को छोडकर वाड के अन्दर कोई बाहरी आदमी नही जा सकता। पर अजीतसिंह की वहा की हालत देखकर कल रात कुछ लोगो को उसे देख लेने का मौका दे दिया गया था। उसका बड कोने मे था। जिन दो दिशाओ म दीवारें नही थी वहा पर्दे खींचकर उसके बैड के पास एकान्त कर दिया गया था।

पूछताछ से मालूम हुआ है कि अजीतसिंह को बेहोशी की हालत म सिर्फ तीन लोगो ने नजदीक से देखा था। एक तो उसका नौकर है—महीपाल। दूसरे, हरिश्चन्द्र की बीवी रूबी ने उसे देखा है। और तीसरे, जरीना ने। उसका नौकर, महीपाल अपने मालिक के घायल होने की खबर पाते ही साढे नौ बजे अस्पताल आ गया था, वह पहले ऑपरेशन थियेटर के पास रहा, बाद म वह सर्जिकल वाड मे अजीतसिंह को देखने गया। उस वक्त डाक्टर और स्टाफ के अन्य लोग मरीज के पास ही मौजूद थे। वह अजीतसिंह के पास अकेले एक सकिण्ड के लिए भी नही था। रात-भर वह वाड की गलरी मे ही दरी बिछाकर पडा रहा है। सवेरे एक बार उसने अजीतसिंह को फिर देखा। पर उस वक्त भी एक नर्स वहा मौजूद

थी। फिर सवेरे उसे किस किस ने देखा, इसकी कोई अहमियत इसलिए नहीं है कि डाक्टरों का ख्याल है कि मौत जहर देने के आठ नौ घण्टे बाद हुई होगी। महीपाल को इस समय मैंने नीचे रोक रखा है, क्योंकि उसी के साथ मैं अजीतसिंह के घर की तलाशी लेने जाऊँगा। रूबी अजीतसिंह के पास लगभग तीन मिनट बैठी थी और इस दौरान वहां कोई भी नहीं था। रूबी उस वक्त बदहवास हालत में थी और किसी से बोल नहीं रही थी। जैसा कि समझा जा रहा है, उसका अजीतसिंह से प्रेम सम्बन्ध था और यह बात कयास में नहीं आ पाती कि उसने अजीत को जहर दिया होगा। अब बचती है जरीना।'

विद्यानाथ ने भौंहे ऊपर उठायीं।

"जरीना एक पढ़ी लिखी लड़की है।" सिद्दीकी ने कहना शुरू किया, 'वह अजीतसिंह के पड़ोस में रहती है। उसके बाप की वहीं एक मामूली सी बिसातखाने की दुकान है। उसके यहां पर्दा होता है और जरीना बुर्के में ही घर से बाहर निकलती है। उसने हाईस्कूल फर्स्ट डिवीजन में पास किया था। लड़की बहुत जहीन है और उसे आगे पढ़ाने के लिए उसके बाप के पास पैसा नहीं था। उन दिनों अजीत ने अपना प्रेस नया नया चालू किया था। पड़ोसी होने के नाते उसे भी जरीना की पढ़ाई का हाल मालूम हुआ। उसने उसे माहवारी वजीफा बाँध दिया। उसकी मदद से जरीना ने इकनॉमिक्स में एम० ए० पास किया। इस वक्त वह अपने मकान के पास ही लड़कियों के एक कालिज में लेक्चरर है। जरीना के घरवाले अजीतसिंह की बड़ी इज्जत करते रहे हैं। वह भी उसे अपना भाई मानती थी। अजीतसिंह उसके घर भी जाने लगा था और वह उसके सामने पर्दा नहीं करती थी। कल रात ग्यारह बजे के लगभग वह अपने पिता के साथ अजीतसिंह को देखने गयी थी। पर उसके पिता को तेज खाँसी आ रही थी, इस लिए वार्ड में वह रुका नहीं, बाहर आकर खाँसता रहा। जरीना अजीतसिंह के पास लगभग चार मिनट तक रही थी।

सिद्दीकी की बात खत्म हो गयी थी। विद्यानाथ ने कहा, 'रूबी और जरीना—इनके बारे में बहुत जल्दी छानबीन होनी चाहिए। खास तौर से अजीतसिंह से उनके सम्बन्धों की जानकारी जरूरी है। क्या उनमें से किसी का हत्या का इरादा हो सकता है? कोई ऐसी बात है कि उनमें से कोई अजीतसिंह को जहर देना चाहेगी?'

मेरे आदमी उनके पीछे लग चुके हैं।" सिद्दीकी बोला।

विद्यानाथ ने फिर कहा, "ये तो वे लोग हैं जो अजीतसिंह को बाहर से देखने आये थे। पर तीन बातों का खास ध्यान रखना होगा। एक तो देखना होगा कि कोई बाहरी आदमी किसी दूसरे मरीज को देखने तो नहीं आया। ऐसा आदमी भी अजीतसिंह के बिस्तर के पास जा सकता है। दूसरे, अस्पताल के स्टाफ की भी कड़ी जांच होनी चाहिए। क्या पता, स्टाफ में किसी ने दुश्मनी से, या किसी लालच से उसे जहर दिया हो। और तीसरे, वार्ड के मरीजों को भी देखना होगा। कहीं उन्हीं में तो अजीतसिंह का कोई दुश्मन नहीं छिपा था।'

सिद्दीकी ने अदब से कहा "मरीजों की बाबत अब देख लूंगा। बाकी के बारे में देख लिया है। दूसरे मरीजों के पास पिछली रात में कोई भी मुलाकाती नहीं आया। जहां तक अस्पताल के स्टाफ का सवाल है सब इंस्पेक्टर गुरुदेवसिंह उसकी जांच कर रहे हैं।"

पाँच

उसी दिन शाम को सात बजे एक जीप 'जनक्रान्ति' प्रेस के सामने आकर रुकी। उससे इंस्पेक्टर सिद्दीकी और अजीतसिंह का नौकर महीपाल नीचे उतरे। सिद्दीकी के साथ वर्दीधारी पुलिस का एक सब इंस्पेक्टर और पांच सिपाही थे।

एक दुबला आदमी, मैली कमीज और धोती पहन, लगभग तीन दिन की दाढ़ी बढ़ाये, 'जनक्रान्ति' प्रेस से मिले हुए जीने के पास खड़ा था। जीना ऊपर अजीतसिंह के मकान को जाता था। वह आदमी सिद्दीकी के पास आकर भिखमंगों की तरह खड़ा हो गया। सिद्दीकी ने उससे धीरे से पूछा, "तुम यहां कब से हो?'

"दोपहर के डेढ़ बजे से।'

"कोई ऊपर गया तो नहीं?'

नहीं।'

उस आदमी ने रुककर कहा, "जो ताला महीपाल कल रात लगा गया था, वह अब तक वैसे ही लगा है।'

सिद्दीकी ने सिर हिलाकर यह सूचना स्वीकार की और उसे अलग जाने का इशारा किया, फिर सब इंस्पेक्टर से कहा, चलिए ऊपर की तलाशी ले ली जाये।

पुलिस ने तब तक कायदे के अनुसार मुहल्ले के एकाध लोगों को गवाही के लिए बुला लिया था। सिद्दीकी और महीपाल जीने पर आगे आगे चले। ऊपर पहुँचकर सिद्दीकी ने महीपाल से कहा, "ताला खोलो।"

दरवाजे की कुण्डी से एक लोकप्रिय डिजाइनवाला ताला लटक रहा था। महीपाल ने जेब से चाभी निकालकर ताले में लगायी। वह उसमें फिट नहीं हुई। चाभी खींचकर उसने फिट करने की दुबारा कोशिश की पर इस बार भी वह असफल रहा।

महीपाल ने उसकी ओर घूमकर निगाहों से दया की भीख जैसी माँगी और फिर ताले और चाभी की लड़ाई में उलझ गया। अचानक उसने पीछे हटकर ताले को गौर से देखा और सिद्दीकी से कहा, "यह मेरा ताला नहीं है।"

सिद्दीकी ताले को हिलाकर देख रहा था। उसने महीपाल को तीखी निगाह से देखते हुए पूछा, "क्या मतलब है?"

महीपाल ने घबराकर कहा, "मैं कुछ नहीं जानता, हुजूर! पर यह मेरा ताला नहीं है। मैं इसी तरह का ताला लगाकर गया था, पर यह वह ताला नहीं है। मेरा ताला इससे छोटा था। यह कोई दूसरा ताला है।"

सिद्दीकी ने जोर से साँस खींची। सब इंस्पेक्टर ने कहा, "इसे तुड़वाना होगा।"

एक सिपाही नीचे जीप के ड्राइवर से स्पनर माँग लाया। उसने ताले पर दो-तीन कड़ी चोटें कीं, ताला टूट गया।

दरवाजा ड्राइंगरूम के एक कोने में खुलता था। उसके पास ही अन्दर की दीवार में एक दूसरा दरवाजा था जो एक बरामदे और खुली छत की ओर था। ड्राइंगरूम के दूसरे छोर पर एक परदा खिंचा हुआ था। उसके पीछे का दरवाजा पूरा पूरा खुला था। ड्राइंगरूम में घुसते ही खुले दरवाजे से भीतर बेडरूम का दृश्य दिखायी पड़ता था।

मकान में पहले सब इंस्पेक्टर घुसा, उसके पीछे सिद्दीकी। अन्दर आते ही वे थमकर खड़े हो गये।

बेडरूम का जो हिस्सा उन्हें बाहर से दीख पड़ता था उसमें कपड़े, कागज और कई चीजें फर्श पर बिखरी हुई थीं। सिपाहियों और महीपाल को वहीं रुकने का इशारा करके वे दोनों बेडरूम में पहुँचे।

ऐसा लगता था, किसी ने जल्दबाजी में पूरे घर की तलाशी ली है। एक चेस्ट ऑफ ड्रॉअर के ड्रॉअर खुले पड़े थे और उनका सामान इधर-

उधर बाहर छितरा पडा था। दो तीन सूटकेस थ, उन्हे भी बतरतीबी से देखा गया था। बडरूम म मिला हुआ ड्रेसिंगरूम और बाथरूम था। ड्रेसिंगरूम म वाडरोब के पूरे मामान को बाहर उलटकर फेंक दिया गया था।

पहली निगाह मे ही सिद्दीकी ने देख लिया कि जिस सूटकेस और ड्राअर म कागज और फाइलें थी, उन्ह खास तौर से तितर बितर किया गया है। ड्राइगरूम म ज्यादा उत्पात नही हुआ था, पर रेडियाग्राम के ड्राअरो म रखे रिकार्डो को उलटा गया था और खास तौर से, तसवीरो के सात आठ एलबम उल्टी सीधी हालत म छोड दिये गये थे। सिद्दीकी न इस पर कोई राय नही दी, पर सिपाही आपस म बात करन लग थे। उसन एक सिपाही स कहा, "नीचे जीप म कैमरा होगा। उसे उठा लाओ।'

कमरा आ जान पर उसके साथ के सब इन्स्पेक्टर ने सभी कमरो के कुछ फोटाग्राफ अलग अलग कोणो से लिय। उसके बाद सिद्दीकी न कुछ सोचते हुए चारो ओर निगाह दौडायी।

फिर उसन ड्राइगरूम स ही काम की शुरुआत की। वहा पडे हुए एलबम अजीतसिंह की बम्बईवाली जिन्दगी की यादगार पेश करत थ। पहले एलबम के पहले पृष्ठ पर ही दो नौजवान लडकियो की लगभग नगी तसवीरें समुद्र की पृष्ठभूमि मे दिखी। सिद्दीकी न सब इस्पेक्टर से कहा "तुम इधर बम्बई की सीनरी देखो, तब तक मैं अन्दर की तलाशी लिये लेता हूँ।"

दरवाजे के पास रुककर उसन फिर कहा, "ये एलबम हम अपने साथ ले जायेंगे पर तब तक सरसरी तौर से देख जाओ। शायद कोई दिलचस्पी की चीज निकल आय।"

अन्दर कागजो, कमीजो, मोजो, टाइयो और दूसरी तरह की चीजो का अम्बार फश पर पडा था। उन्हे एक एक करके देखने मे काफी समय लगा। बडरूम मे एक अटचीकेस भी खुला पडा था। उसमे सिर्फ कागज थे जिनका सम्बन्ध बीमे और प्रेस के कारोबार से था। उसी म कई एक चिट्ठियो के बण्डल भी थे जो काफी पुरान जान पडत थे। सिद्दीकी ने सोचा—उनकी छानबीन इत्मीनान से बाद मे की जायेगी।

वाडरोब के निचले खाने में पुराने अखबारो की एक गड्डी रखी थी। उसे भी छितरा गया था। सिद्दीकी ने उन अखबारो को उलटना पुलटना शुरु किया। अचानक उसकी निगाह एक बडे लिफाफे पर पडी। वह अखबारो से छिटककर दूर चला गया था। लिफाफा खुला हुआ था। सिद्दीकी ने झुककर देखा—उसमे सौ सौ रुपये के कई नोट भरे थे। उसने

लिफाफा उठाकर नोट गिनने शुरू किये। नोट बिल्कुल नये थे और चरमरा रहे थे। गिनने पर व संख्या में अस्सी निकले। आठ हजार रुपये! किसलिए?—सिद्दीकी ने सोचा। इसके पहले एक ड्राअर में उसे अजीतसिंह की बैंकवाली चेकबुक और लगभग सत्तर रुपये के नोट और रेजगारी रखी हुई मिली थी। उसने उस ड्राअर को दोबारा खोलकर चेकबुक का निरीक्षण किया। उसमें किसी भी चेक से आठ हजार या उससे ज्यादा रुपये नहीं निकाले गये थे। दरअसल, पिछला चेक सिर्फ तीन सौ रुपये का था और उसे 'सेल्फ' के नाम एक हफ्ते पहले काटा गया था।

ड्रेसिंगरूम में वाडरोब के भीतर उसे एक छोटा टेप रिकार्डर और उसके टेपों के कई डिब्बे रखे हुए मिले। उसने महीपाल को बुलाकर पूछा, "इनमें क्या है? जानते हो?

महीपाल ने कहा, "साहब को गाना सुनने का शौक था। बड़ी पुरानी-पुरानी फिल्मों के गाने इनमें उतारकर रखे हुए थे।"

सिद्दीकी ने उन टेपों को गौर से देखा। महीपाल की बात शायद सही थी। प्रत्येक टेप के डिब्बे पर लेबुल था। उनमें कुछ का सम्बन्ध शास्त्रीय रागों से था कुछ में बीस पच्चीस साल पहले की फिल्मों के गाने थे। टेपों को एक बड़े डिब्बे में रखकर साथ ले चलना जरूरी समझा गया।

ड्रेसिंग रूम के एक खाने में जूतों का रैक रखा हुआ था, उस पर लगभग डेढ़ दर्जन जूते और चप्पलें थीं। वार्डरोब से ही पता चलता था कि अजीतसिंह अच्छे कपड़े पहनने का शौकीन था। जूतों से भी इस धारणा की पुष्टि होती थी। रैक के निचले खाने में दफ्ती के तीन डिब्बे रखे थे, जिनमें यकीनन नये जूते बन्द करके लाये गये होंगे। इन डिब्बों पर हल्की-सी धूल जम रही थी और जाहिर था कि जिस किसी ने भी घर की तलाशी ली हो, उसकी निगाह इन डिब्बों पर नहीं गयी थी।

सिद्दीकी ने उन्हें खोलकर देखा—दो में तो पुरानी चप्पलें थीं, तीसरे में कुछ रसीदें जिनका सम्बन्ध प्रेस के कारोबार से था। रसीदों के नीचे लगभग पचीस फोटोग्राफ रखे हुए थे जो बहुत पुराने नहीं जान पड़ते थे। जूते का यह डिब्बा पुराना और मटमैला था और जाहिर था कि इन तसवीरों को छिपाने की गरज से ही उसमें रखा गया था। सिद्दीकी ने इन तसवीरों को ध्यानपूर्वक देखना शुरू किया। उनमें प्रायः अजीतसिंह की ही तसवीरें थीं जो किसी पहाड़ी जगह पर भिन्न भिन्न लड़कियों के साथ खिंचायी गयी थीं। उनमें से एक तसवीर की लड़की तो उम्र से बहुत छोटी

—सत्रह अठारह साल की ही—दीख पडती थी। तसवीरें फिल्मी रोमास के वजन पर थी और उनम अजीतसिह ज्यादातर चुस्त और शाख कपडा मे था। पाच तसवीरें अजनबी स्त्री-पुरुषो की थी। एक मे कोई आदमी बुदशट और काले चश्मे मे कार की अगली सीट पर एक लडकी के गाल से अपना गाल सटाय हुए बठा था। सिद्दीकी ने देखा, तसवीर म कार का सिफ ऊपरी हिस्सा आया है, उसके रजिस्ट्रेशन नम्बर की प्लेट नही आयी है। वह होठो ही मे बुदबुदाया—बास्टड !

एक तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी और पूरे सग्रह म शायद वही एक ऐसी थी, जिसे मासूम समझा जा सकता हो। उसम एक चार माल का लडका एक महिला मे सटकर खडा हुआ था। उसके गाल फूले हुए थे कुछ दूरी पर एक दूसरी स्त्री उस लडके को मनान की कोशिश मे हाथ आगे बढाकर उस अपनी ओर बुला रही थी। तसवीर की पष्ठभूमि म एक बाग था और कोने मे एक इमारत का बरामदा दीख रहा था।

पहली बार सिद्दीकी इस तसवीर को जल्दी से देखकर पलट गया था पर दुबारा देखत समय उसकी आखें उस स्त्री पर, जिससे सटकर बच्चा खडा हुआ था, अटकी रह गयी। यह स्त्री असाधारण सुदरी थी और सिद्दीकी को लगा कि उसने उस कही देखा है।

अचानक उसने अपनी जाघ पर हाथ मारकर अग्रेजी मे कहा—आई एम डैम्ड ! उसे सहसा याद आ गया था कि इसी औरत की तसवीर आज उसने सवेरे के अखबारो मे दखी है। यह रूबी की तसवीर है।

उसन वे सब तसवीरें समट ली और ड्राइगरूम मे आकर म[illegible]का अपन पास बुलाया। रूबीवाली तसवीर उसे [illegible]साकर दूस[illegible] और [illegible] बार म उसन पूछा, "इ ह पहचानते हो ?" उसकी आवाज [illegible], जैस मौसम के बारे म बात की जा रही हो।

महीपाल थो[illegible] देर तक उसे देखता [illegible]। [illegible] की ओर इशारा करके कहा, 'मैं इ ह जानता [illegible]। [illegible], और मेरठ मे रहती हैं। वहा शायद कही पढ़ाती [illegible]"

"रत्ना ?"

"जी हा, इनका यही नाम है।"

सिद्दीकी ने रूबी की [illegible] हुआ, "और य "

'इनको तो मैं [illegible] दर मोच[illegible]

होठ कुछ कहन के [illegible]

सिद्दीकी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर धीरे से कहा, "छिपाओ नहीं। जितना जानते हो बता दो। याद रखो, हम तुम्हारे मालिक के खूनी की तलाश कर रहे हैं। बोलो तुम हमारे साथ हो या खूनी के ?'

महीपाल वैसे ही चुपचाप खड़ा रहा। फिर धीरे धीरे बोला, "मैं इन्हें सचमुच नहीं पहचानता। पर इन्हें मैंने कभी देखा है। शाम को यह साहब के साथ कार पर आयी थी।'

सिद्दीकी ने पूछा "यहां कितनी देर रुकी थीं ?"

'मुश्किल से दो मिनट।' उसने बताया, वह तो नीचे कार पर ही बैठी रही थी। साहब ऊपर आकर दो चार मिनट रुके, फिर बोले—मेम साहब को यहां बुला लाओ। मैं बुलाने गया तो वे बोलीं—मैं यहीं ठीक हूँ। पर फिर अपने आप गाडी से उतरकर यहाँ चली आयी।'

'फिर वे लोग कहाँ गये ?'

"साहब ने कहा—मैं मकान पर जा रहा हूँ। देर से लौटूगा।"

'मकान ?"

महीपाल ने, न जाने क्यों, सिसकना शुरू कर दिया। बोला, "वह डायमण्ड होटल को 'मकान' ही कहते थे हुजूर।"

अचानक सिद्दीकी ने तसवीर को महीपाल के सामने करते हुए फिर से पूछा, 'और यह बच्चा कौन है ?'

"बच्चा ? मैं नहीं जानता हुजूर।'

सिद्दीकी बिना बोले वह तसवीर महीपाल के सामने किये खड़ा रहा। उसने अपनी बात दोहरायी "मैं नहीं जानता हुजूर।" और फूट फूटकर रोने लगा।

अचानक ड्राइंगरूम से सब-इंस्पेक्टर ने पुकारकर कहा, 'यहां आइए, सर !'

'क्या ? क्या है ?' कहता हुआ वह ड्राइंग रूम में पहुँच गया।

सब इंस्पेक्टर हाथ में एक मुर्झाई हुई गुलाब की कली लिये हुए था। बोला, यह रेडियोग्राम के पास पड़ी थी।"

सिद्दीकी ने भौंह सिकोड़कर कली की ओर गौर से देखा। सब-इंस्पेक्टर ने उसे सूंघकर कहा, 'आजकल तो कोट पहनने का मौसम नहीं है। इसे लगाया कहाँ गया होगा ?'

सिद्दीकी कुछ नहीं बोला। सब इंस्पेक्टर ने कहा, 'किसी लड़की के बालों में'

'ठीक कहते हो।" सिद्दीकी ने कहा, 'रूबी कल इस कमरे में आयी थी। यह शायद उसी के बालों से गिरी हो। इसे भी साथ ले लो।"

तलाशी के बाद पूरे सामान की फेहरिस्त बनाने और कई कानूनी जरूरतें पूरी करने में एक घण्टे के करीब लग गया। जब वे लोग उतरकर सड़क पर जीप के पास आये तो लगभग नौ बज चुके थे।

जीप के पास सिद्दीकी का एक सहायक नन्दलाल अस्थाना खड़ा था। वह सी० आई० डी० में सब इंस्पेक्टर था। सिद्दीकी ने उसे देखकर बड़ी आत्मीयता से पूछा, "तुम कितनी देर से खड़े हो?"

"आधे घण्टे से। आपके नीचे आने का इंतजार कर रहा था।" उसने कहा, "हरिश्चन्द्र के यहाँ की तलाशी हो चुकी है। उसका विवरण आप कब सुन सकेंगे?"

'पेट की पुकार सुन लेने के बाद। आओ, मेरे साथ चलो।" कहकर सिद्दीकी ने उसे अपने साथ बैठा लिया। जीप चल पड़ी। करीब दो मील चलने के बाद जब वह एक होटल के सामने से गुजरी तब सिद्दीकी ने गाड़ी रुकवायी और अस्थाना के साथ नीचे उतर पड़ा। पुलिस सब इंस्पेक्टर से उसने कहा 'मैं यहाँ खाने के लिए रुक रहा हूँ। आप थाने पर पूरे सामान को कायदे से जमा करा दीजिएगा। बाद में मिलेंगे।"

वे दोनों होटल के सामने फैले हुए लम्बे-चौड़े लॉन में आ गये। वहाँ हल्की रोशनी फैली हुई थी और कुछ दूर दूर पड़ी मेजों पर दो दो, चार चार लोग बैठे थे। शाम ठण्डी हो चली थी और यहाँ लॉन पर और भी ज्यादा ठण्डक थी। होटल के लाउन्ज में रिकार्ड पर कोई नाच की धुन बज रही थी जिसका असर पूरे लॉन में आखिरी बसन्त के फूलों की भीनी खुशबू की तरह फैल रहा था।

अस्थाना ने खुश होकर कहा "ग्रेट! बड़े बड़े जासूसों के लिए ही ऐसी जगह बनायी जाती है। आइए, हम लोग उस कोनेवाली मेज पर जाकर बैठें, जहाँ हमारी और आपकी बात खुदा भी नहीं सुन पायेगा।'

सिद्दीकी ने उस मेज की ओर बढ़ते हुए कहा 'बातों का राज इन्सानों से ही छिपाना जरूरी है। खुदा के सुन लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठ गये। एक बेटर के नजदीक आने पर सिद्दीकी ने पूछा, "क्या लोगे? बियर या ह्विस्की?"

"ह्विस्की तो आप ही लें।" अस्थाना ने कहा, 'आप ऊँचे दर्जे के जासूस हैं, 'जेम्स बाण्ड' के मौसेरे भाई! मेरी मसन आपके यहाँ क्लर्की

करता था प्वायरट आपका बावर्ची रह चुका है। मुझे जैसे टटपुंजिए सी० आई० डी० इंस्पेक्टर के लिए कोकाकोला काफी है।'

दोनों का यह आपसी मजाक था। सिद्दीकी ने नकली अकड़ के साथ कहा, "ओ० के०, ओ० के।" फिर वेटर को हुक्म दिया, 'मेरे लिए ह्विस्की लाओ और साहब के लिए कोकाकोला।

दोनों के सामने जब दो रंगों के गिलास आ गये तब सिद्दीकी ने अस्थाना से कारोबारी जबान में कहा, 'अब शुरू से बताओ।'

अस्थाना ने कहा 'हरिश्चन्द्र की आज जमानत हो गयी है। पोस्ट मार्टम के बाद जिले की पुलिस ने यह स्वीकार कर लिया कि उसके ऊपर ज्यादा से ज्यादा दफा ३०७, पेनल कोड का आरोप बन पाता है। फिर यह भी स्पष्ट था कि उसने अजीतसिंह और रूबी के सम्बन्धों के कारण उत्तेजना में उस पर गोली चलायी है। इसलिए उसकी जमानत की दरख्वास्त पर कोई गम्भीर ऐतराज नहीं किया गया। उसे आज शाम को साढ़े पांच बजे जमानत पर छोड़ा गया था।

'हम लोग उसके बँगले पर सात बजे के करीब पहुँचे थे। उस वक्त वह वहाँ अकेला ही था। बँगले में सिर्फ एक माली मौजूद था जो कभी-कभी बावर्चीखाने में भी काम करता है। रूबी अभी तक अपने रिश्तेदार के घर से जो शायद रेलवे स्टेशन के पास रहता है, लौटी नहीं थी। हमने उससे कहा कि हम उसके घर की तलाशी लेनी है। इस पर उसने कोई भी ऐतराज नहीं किया। दरअसल, वह अपनी जगह से हिला भी नहीं और बोला—मकान खुला हुआ है। आप जो चाहें, अन्दर जाकर देख लें। उसने माली को पुकारकर हमारे साथ कर दिया। हमें तलाशी में ज्यादा देर नहीं लगी। उसका घर बड़े करीने से रखा गया है और पहले से ही देखा जा सकता है कि कौन चीज कहाँ होगी। हम खास तौर से यह देखना चाहते थे कि अजीतसिंह से सम्बन्धित कोई चीज—जैसे कोई खत या उसकी कोई निशानी, वहाँ मौजूद है या नहीं। हमें ऐसी कोई चीज नहीं मिली।

'लेकिन रूबी के कमरे में हमें दो चीजें ऐसी मिली जिनकी छानबीन होनी चाहिए।

पहली चीज तो उसकी 'चैकबुक' है। वह उसकी ड्रेसिंग टेबल की ड्राअर में थी। मैंने पहले ही कहा कि उस घर में किसी चीज के गलत जगह होने की बात ही नहीं सोची जा सकती थी। अतः चेकबुक को हमने ध्यान से देखा। उसमें कल की तारीख में आठ हजार रुपया एक चेक से निकाला

गया है।'

सिद्दीकी का गिलास होंठों से लगा हुआ था। जल्दी में उसने पूरा गिलास खाली कर दिया और वेटर को पुकारकर अस्थाना से पूछा, "तुमने चेक की काउण्टरफायल देखी ? उसे किसके नाम ?"

"मिस्टर सेल्फ, या यह कहिए कि मिसेज सेल्फ के नाम," अस्थाना ने कहा 'रुबी ने यह रकम अपने नाम से ही निकाली है। मगर घर में कहीं भी यह रुपया नहीं मिलता।"

सिद्दीकी ने लापरवाही से कहा, "फिक्र न करो। मुझे वह रुपया अजीतसिंह के घर मे मिल गया है।"

"ओह !' अस्थाना के मुंह से निकला। वह थोड़ी देर चुप बैठा रहा।

उसने फिर कहना शुरू किया, "ऐसा लगता है कि रुबी ने यह रुपया करीब दोपहर के बाद बैंक से निकाला था। माली से मालूम हुआ कि खाना खाने के बाद उसने एक रिक्शा मँगाया था और धूप में ही कहीं बाहर गयी थी। करीब पौन घण्टे बाद वह वापस आयी और सीधे अपने बेडरूम मे चली गयी। वहां वह शाम को छह बजे तक रही। उसके बाद अजीतसिंह उसे अपनी कार पर वहां से ले गया। जाहिर है, इस पौन घण्टे के दौरान वह बैंक से रुपया निकालने गयी थी। हरिश्चन्द्र से मालूम हुआ है कि शादी के पहले उसका अपना बैंक बैलेंस था, जब वह एक कालेज में पढ़ाती थी। वह अब भी उसी के नाम से है। शादी के बाद उसका और हरिश्चन्द्र का मिला जुला बैंक अकाउण्ट भी है। इसके अलावा हरिश्चन्द्र के दो अकाउण्ट अलग से हैं पर उनका सम्बन्ध उसके व्यवसाय से है।"

सिद्दीकी पूरी बात गौर से सुन रहा था। जब वेटर आर्डर लेने के लिए पास आया तब उसका ध्यान टूटा। उसने अपने लिए दूसरी ह्विस्की मँगायी और पूछा, "अजीतसिंह हरिश्चन्द्र के घर कितनी देर रुका था ?'

'माली का कहना है कि वह गाड़ी से नीचे नहीं उतरा। उसने माली से रुबी को अपने आने की खबर भिजवायी और उसके दो मिनट बाद ही वह बाहर निकल आयी।"

थोड़ी देर दोनों चुप रहे। फिर सिद्दीकी ने पूछा, 'दूसरी चीज कौन-सी थी ?"

'कत्थई रंग की शीशियां !'

सिद्दीकी तनकर सीधा बैठ गया।

अस्थाना ने कहा, "रवी के कमरे में कत्थई रंग की तीन शीशियाँ पायी गयी। ये मल्टी विटामिन टिकिया की शीशियाँ हैं। ये अलग अलग कम्पनियों की जरूर है पर उन सबका साइज करीब करीब एक ही है। हर एक में एक औंस से ज्यादा ही पानी आ सकता है और आज अस्पताल के बाहर डस्टबिन में जहरवाली जो शीशी पायी गयी है वह भी उन्हीं शीशियों के साइज की है।"

सिद्दीकी ने तत्काल कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप व्हिस्की की चुस्कियाँ लेता रहा। कुछ रुककर उसने पूछा "ये शीशियाँ और चेकबुक रजिस्टर में ताला कर ही ली गयी होंगी।"

"जी हाँ।"

सिद्दीकी ने सहसा पूछा "तुम्हारा क्या ख्याल है, अस्थाना? शायद शुरू-शुरू में रवी को निर्दोष समझकर हमने भूल की है। उसने अजीत सिंह का कल आठ हजार रुपये दिये, उसके साथ डायमण्ड होटल तक गयी और बाद में, इतनी बदनामी के बावजूद, वह उस अस्पताल में रात को ठीक ग्यारह बजे देखने आयी। इसी के साथ यह भी है कि किसी ने अजीत सिंह के मकान का ताला तोड़कर वहाँ उसमें कोई चीज खोजने की कोशिश की है। मकान में घुसनेवाले के पास समय की कमी थी और जल्दबाजी में उसने तलाशी ली है, मुझे कुछ फोटोग्राफ मिले हैं जो अजीतसिंह ने जान बूझकर ऐसी जगह रखे थे जहाँ उन्हें छिपाने के लिए ही रखा जा सकता है। क्या इस तलाशी का सम्बन्ध इनमें से किसी फोटोग्राफ से है? तलाशी लेनेवाले की दिलचस्पी रुपये में शायद नहीं थी, क्योंकि उसने आठ हजार के नोटों का वहीं पड़ा रहने दिया है। या हो सकता है रुपयों का लिफाफा उसके हाथ में पड़ा ही न हो।

और, ताज्जुब यह है कि उनमें एक फोटो रवी की भी है। वह वहाँ पर क्या है? वह रवी से प्यार करता था। पर वह ऐसा फोटो नहीं है जिसे कोई प्रेमी अपने पास रखना पसन्द करेगा। उसमें वह अकेली नहीं है।

पर एक बात साफ है। अजीतसिंह गन्दा आदमी था। उसके फ्लैट में मिली हुई तस्वीरें जाहिर करती हैं कि उसका कोई भी दुश्मन हो सकता था। दुश्मनी की वजह प्रेम का वही स्थायी त्रिकोण हो सकती है—किसी माशूका के पीछे दुश्मनी। जिस वजह से हरिश्चन्द्र ने उस पर गोली चलायी थी, उसी वजह से ऐसे कई लोग हो सकते हैं जो उसको जहर दे सकते थे। पर रवी उसको क्या जहर देगी, यह समझ में नहीं आता। उस

इतना चाहते हुए भी आखिर वह उसे क्यों जहर देगी ?"

वह थोड़ी देर खामोशी से सोचता रहा।

फिर कुछ रुककर वह कहने लगा, 'एक और भी बात हो सकती है। रूबी कल अजीतसिंह के कमरे में गयी थी। उसके जूड़े का फूल रेडियोग्राम के पास पड़ा मिला है। कम से कम फिलहाल मैं मानकर चल रहा हूँ कि वह रूबी ही का फूल था। पर रेडियोग्राम के पास उसके गिरने की क्या वजह थी ? वह वहां दो तीन मिनट ही रुकी थी। कोई रिकार्ड सुनने के लिए उसने लगाया नहीं।'

वह सोचता रहा। अचानक उसने अपना गिलास मेज पर रख दिया और बोला, एक और भी बात हो सकती है। अजीतसिंह के घर की तलाशी किसने ली ? क्या वह रूबी नहीं हो सकती ? उसके रुपये अजीत-सिंह के फ्लैट में थे। शायद जल्दबाजी में तलाशी के दौरान उसके जूड़े का फूल वहां गिर गया हो।

'इसका मतलब यह होगा,' अस्थाना ने कहा 'कि रूबी उसके मकान में कल दो बार आयी। एक बार खुले दरवाजे से और एक बार महीपाल का लगाया हुआ ताला तोड़कर। यही न ?"

सिद्दीकी ने कुछ नहीं कहा। वह सोचता रहा और व्हिस्की के गिलास से चुस्कियां लेता रहा।

छः

शहर के बाहरी भाग की इस अकेली सड़क पर किनारे किनारे छायादार पेड़ थे। पेड़ों की कतार के पीछे सहन के लिए काफी जगह छोड़कर नवीन तम ढंग के बंगले बने हुए थे। शहर का यह हिस्सा अभी नया-नया विक-सित हुआ था और भीड़ भाड़ से बचने के लिए बहुत से व्यापारियों तथा दूसरे सम्पन्न आदमियों ने यहां बंगले बनवाये थे। इस समय सवेरे के सात बजे थे। दिन को भी यहां जिन्दगी के बहुत कम लक्षण दिखायी देते थे। लगता था शहर का यह भाग अभी सो ही रहा है।

एक बंगले में लान के एक कोने पर खूब घने पेड़ के नीचे दो महिलाएँ बैठी चाय पी रही थीं। अचानक बंगले के सामने एक मोटर साइकिल आकर रुकी। उसकी फटफट ने वहाँ की खामोश फिजा पर जैसे छापा मार-कर कब्जा कर लिया हो। मोटर-साइकिल से सिद्दीकी उतरा और उसने

फाटक के पास आकर उन महिलाओं की ओर देखा। वे उसी की ओर देख रही थी। सिद्दीकी ने हाथ उठाकर उन्हें सलाम जैसा किया और फाटक खोलकर अन्दर चला आया। लॉन के बीच से निकलता हुआ वह उनके पास पहुँचा और बोला, 'इस तरह आने के लिए माफी चाहता हूँ, पर मुझे मिसेज रत्ना से कुछ जरूरी बात करनी है।'

यह बात उसने रत्ना से ही कही थी। अजीतसिंह के यहाँ उसे दो महिलाओं और बच्चेवाला जो फोटो मिला था, उससे रत्ना को पहचानने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। रत्ना ने उसे आश्चर्य से देखा और हिचकते हुए बोली, 'आप !'

सिद्दीकी उन्हीं के सामने एक खाली कुर्सी पर इतमीनान से बैठ गया और बोला, 'मैं सी० आइ० डी० इंस्पेक्टर हूँ। मेरा नाम सिद्दीकी है। अजीतसिंह के बारे में मुझे आपसे दो एक बातें मालूम करनी थीं। मुझे अफसोस है कि इस मौके पर भी मुझे आपको तकलीफ देनी पड़ रही है।'

अजीतसिंह का नाम सुनते ही रत्ना का चेहरा उदास हो गया। उसे सहानुभूति के साथ देखते हुए वह चुपचाप बैठा रहा। रत्ना के पास बैठी हुई महिला ने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। फिर उसने सिद्दीकी की ओर मुड़कर पूछा, "आपके लिए चाय बनाऊँ ?'

सिद्दीकी ने चाय न पीने के लिए माफी मांगी। वास्तव में दोनों महिलाएँ अपनी चाय पहले ही खत्म कर चुकी थीं। सिद्दीकी ने दूसरी महिला से कहा 'अगर आपको ऐतराज न हो तो मैं मिसेज रत्ना से कुछ देर अकेले में बात कर लूँ ?"

मुझे क्या एतराज हो सकता है ? उसने कहा और वह उठकर बँगले के अन्दर चली गयी। थोड़ी देर में नौकर चाय के बर्तन समेटने के लिए आया। तब तक सिद्दीकी ने रत्ना से बातें शुरू कर दी थीं। उसने पूछा, 'अजीतसिंह तो आपका चचेरा भाई था न ?'

रत्ना ने सिर हिलाया।

सिद्दीकी ने फिर पूछा "यानी आपके पिता और अजीतसिंह के पिता सगे भाई थे ?

इस बार उसने फिर स्वीकृति में सिर हिलाया।

सिद्दीकी ने पूछा रहनेवाले आप लोग क्या मेरठ के हैं ?"

रत्ना ने कहा "हाँ पिछली दो पीढ़ियों से हम लोग मेरठ ही में रह रहे हैं पर अजीत बहुत पहले बम्बई चला गया था। वहाँ काफी समय बिता-

कर वह यहाँ लखनऊ म रहने के लिए चला आया था।'

सिद्दीकी न पूछा, "आप इस समय मेरठ मे क्या कर रही है ?'

"मैं एम० जी० गर्ल्स कालिज म लेक्चरर हूँ।"

"और आपके पति ?"

'वह वहा मिलिटी एकाउण्टस मे काम करत है।"

'आपके परिवार म आप दोनो के अलावा और कौन है ?"

रत्ना न एकदम से जवाब नही दिया। कुछ रुककर बोली, 'हमारा एक बच्चा है, पर वह हमारे साथ नही रहता। शेरवुड म पढ़ता है। नैनीताल म!" उसने अपनी बात समझायी।

'बच्चे की उम्र क्या होगी ?"

दस साल।'

सिद्दीकी ने अपनी जेब से एक फोटो निकाल ली थी। उस रत्ना की निगाह के सामने रखत हुए उसने पूछा, "बच्चे की यही तसवीर है न ?"

रत्ना उसे काफी देर तक देखती रही, फिर धीरे स बोली, "जी हा।'

सिद्दीकी न पूछा, "आपकी बगल मे यह रूबी है न ?"

रत्ना ने बहुत धीमी आवाज मे कहा, "हाँ।'

कुर्सी पर आगे झुककर उसने तेजी से पूछा, "यह बच्चा किस साल पैदा हुआ था ?"

रत्ना ने कहा "१६५६ मे।

"पदा यह मेरठ ही म हुआ है ?"

"जी हा।' कहकर रत्ना ने कुर्सी पर बठने का ढग बदला।

"आपकी शादी कब हुई थी ?"

'१६५६ मे।" उसके मह से अनायास निकला।

'और यह बच्चा भी १६५६ मे ही हुआ था ?"

रत्ना के चेहरे पर उलझन सी झलकने लगी थी। कुछ रुककर उसन गहरी सास खीची और कहा, "देखिए इस्पेक्टर साहब, मैं एक बात साफ कर दना चाहती हूँ। सदीप को हमन गोद लिया है। यह हमारा अपना बच्चा नही है। पर इस अब हम अपना ही कहत है।'

सिद्दीकी न साधारण बातचीत के अ दाज मे पूछा "तो इसके असली मा बाप कौन है ?"

जवाब देने के पहले रत्ना फिर एक बार हिचकिचायी पर उसके बाद जल्दी जल्दी बोलने लगी, "हमने इसे अनाथालय से लिया था। तब यह

साल भर का था। इसके मा बाप का पता नही है। कोई इसे अनाथालय के बरामदे म ही छोड गया था। मा बाप का पता लगाने की बहुत कोशिश की गयी पर ।"

सिद्दीकी रत्ना की बात सुनते समय उसे गौर से देख रहा था। उसे शक हुआ कि कोई ऐसी बात है जिसे वह बताने म हिचक रही है। उसकी बात पूरी होने स पहले ही वह उठ खडा हुआ। बोला, "देखिए मैडम, आप यह जानती ही है मैं एक खून के मामले की जाच कर रहा हूँ। खून आपके भाइ का ही हुआ है। मै आपसे मदद पाने की पूरी उम्मीद लेकर आया था, पर आप मुझे किस्से कहानिया सुना रही है। सुबह के वक्त मेरे पास बहुत जरूरी काम होते है। इस वक्त मैं यह किस्से नही सुन सकता। मैं जा रहा हूँ। अब दुबारा हमारी बातचीत थाने मे होगी। तब तक शायद आप सही वाक्यित बताने के बारे मे अपनी राय भी कायम कर लेंगी।'

रत्ना भी खडी हो गयी। उसने बिगडकर कहा 'आप मुझे झूठा समझ रह हैं।'

अचानक सिद्दीकी की आवाज मुलायम हो गयी। उसने कहा, "जी हा। और इसके बाद सिफ एक बात कहनी है। आपको शायद पता नही है, हमसे सच छिपाने की कोशिश न करनी चाहिए। हम जो जानना चाहते है, वह चौबीस घण्टे के अन्दर जान लेंगे। पर यह तब होगा जब आप अपने को झूठा साबित कर चुकी होगी।"

इतना कहकर वह रुका, और चलने को हो रहा था कि ठिठका और बडी नर्मी से बोला मिसज रत्ना आप अब भी नही बतायेंगी कि इस बच्चे के सदीप के माँ बाप कौन है?'

रत्ना थोडी देर अनिश्चय के साथ खडी रही। फिर बोली, 'आप बैठ जाइए। अजीत के खूनी का पता लगाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ।' उसने साँस खीचकर कहा 'पर आप मुझसे एक एसी बात पूछ रहे हैं जिसका जवाब मेरे पास नही है।'

सिद्दीकी इतमीनान से फिर कुर्सी पर बैठ गया। उसन सिर हिलाया जैसे वह रत्ना की स्थिति समझ रहा हो। उसकी आवाज सहज हो गयी। कुछ सोचते हुए उसन कहा "ठीक है। आपने जितना बताया है उतना काफी है। बहुत बहुत शुक्रिया। पर आखिर मे मैं सिफ एक और सवाल पूछना चाहता हूँ यह तसवीर अजीतसिंह के पास कैसे आयी?"

रत्ना कुछ याद करने की कोशिश करती रही। बोली "इस्पेक्टर

साहब, निश्चित रूप से कुछ भी बताना मुश्किल होगा। पर दो साल पहले जाडों की छुट्टियों में संदीप शेरवुड से घर आया था। उन्हीं दिनों रूबी भी दिल्ली लौटते वक्त मरठ में हमारे यहाँ दो तीन दिन के लिए रुकी थी। रूबी संदीप को बहुत प्यार करती है। शायद इसलिए भी कि उसके कोई बच्चा नहीं है। वह उसकी फोटो अपने पास रखना चाहती थी और अलग में उसे न लेकर उसने यह बेहतर समझा था कि हम लोगों का एक ग्रुप ले लिया जाय। यह फोटो तभी मेरे पति ने खींची थी। रूबी के जाने के पहले ही अजीत हमारे यहाँ एक सप्ताह तक रहने के लिए आ गया था। वहीं उसकी रूबी से पहली मुलाकात हुई थी। उसने यह फोटो बाद में वहाँ देखी थी और इसकी काफी तारीफ भी की थी। उसका ख्याल था कि हम तीनों का पोज बहुत अच्छा आया है।'

सिद्दीकी ने कहना चाहा कि उसका ख्याल सही था। खास तौर से रूबी इस तसवीर में बहुत ही आकर्षक दीख रही थी। पर उसने अपने को रोक लिया।

रत्ना कहती रही, "इस फोटो के दो तीन प्रिण्ट हुए थे। एक रूबी अपने साथ ले गयी थी। हो सकता है अजीत भी एक प्रिण्ट अपने साथ लेता गया हो।"

सिद्दीकी चुप होकर थोड़ी देर जमीन की ओर देखता रहा। रत्ना ने कहा, 'अगर आपको कुछ और न पूछना हो तो मैं चलूँ। कुछ जरूरी काम है।

सिद्दीकी ने ऐसे सिर हिलाया जैसे उसे कोई ऐतराज न हो। रत्ना उठकर खड़ी हो गयी। वह भी उठ खड़ा हुआ। पर जैसे ही रत्ना ने जाने के लिए पीठ फेरी, सिद्दीकी ने कहा, "मैडम !"

वह चौंककर घूमी। सिद्दीकी ने कहा, "प्लीज। हमारा काम न बढ़ाइए। हमारा एक आदमी अभी मेरठ गया है। आपके पति से भी वह वहाँ मिलेगा। हमें पता लग ही जायगा। इससे अच्छा होगा कि आप ही बता दें संदीप किसका लड़का है ?"

मैंने कह तो दिया " उसने तेजी से कहना शुरू किया, पर अचानक सिद्दीकी की सधी हुई निगाह के सामने वह अचकचा गयी। कुछ रुककर उसने मजबूरी से दोनों होंठ दबाये, जैसे वह किसी निश्चय पर पहुँच रही हो। सिद्दीकी ने कड़ी, पर धीमी आवाज में कहा, "अजीतसिंह का खून बड़ी निर्दयता के साथ हुआ है। आपको इस वक्त हमारे साथ रहना चाहिए

अजीतसिंह के लिए । हम हर हालत में खूनी का पता लगाना है।"

वह सांस खीचकर फिर कुर्सी पर बैठ गयी। सहज आवाज में बोली, 'आप बैठ जाइए मैं बता रही हूँ। सदीप की मां का नाम रूबी है।'

'रूबी ?" सिद्दीकी शायद किसी अचम्भे के लिए पहले से तैयार था, 'पर उसकी शादी तो १९६२ के लगभग हुई थी।'

"जी हाँ। पर सदीप शादी के पहले पैदा हुआ था।"

वह उसे देखता रहा जैसे किसी और बात का अभी इंतजार कर रहा हो। पर रत्ना चुप हो गयी थी। सहसा उसने पूछा, "आपके पति ने या किसी और ने क्या अजीतसिंह को बताया था कि रूबी सदीप की मां है ?"

"नहीं। मैंने कभी नहीं कहा। पर शायद मेरे पति ने मैं कह नहीं सकती।'

सिद्दीकी ने पूछा, 'रूबी जब आपके कालिज में थी, क्या सदीप तभी पैदा हुआ था ?"

"जी हां ?"

"इसका पिता कौन है ?"

रत्ना चुप रही। फिर तमककर बोली, "मुझसे रूबी को कितना धोखा दिलाइगा ? अब आप खुद रूबी से ही क्यों नहीं पूछते ?"

सात

फुटपाथ पर आकर सिद्दीकी ने चारों ओर देखा। सूरज ने हवा की रही-सही ठण्डक सोख ली है। छाया से बाहर आते ही उसे एक तिलमिलाहट का अनुभव हुआ।

मोटर साइकिल स्टार्ट करके वह सड़क पर आ गया। लगभग तीन फर्लांग आगे उसे एक पुलिस चौकी मिली। वहाँ एक हेड-कांस्टेबुल से उसने कागज पर एक पता लिखकर कहा, "इस नम्बर पर हमारे सब इंस्पेक्टर असथाना होंगे। उन्हें इसी वक्त यह खबर पहुंचा दो कि वह मिसेज रूबी को अपने साथ लेकर जितनी जल्दी हो सके कैसरबाग वाली पर आ जायें। उन्हें बता देना, मैं मिसेज रूबी से थाने पर ही बात करना चाहूँगा।'

हेड कांस्टेबुल ने पूरी बात पचाकर पूछा, "ये मिसेज रूबी कौन हैं ?"

तुम्हारी मां है।' सिद्दीकी ने बिगड़कर जवाब दिया फिर संभलकर बोला 'तुम पुलिस में काम करते हो या भाड़ झोंकते हो ? आज के अख-

बार की शक्ल नहीं देखी ?"

हेड का स्टेबुल की अक्ल भाड झोंककर वापस आ गयी। बोला, 'ओह ! अरे वा !"

"जी हा ! वा "

चौकी से बाहर आकर वह सी० आई० डी० से सुपरिंटेंडण्ट विद्यानाथ सिनहा के बँगले पर पहुँचा। वहा लगभग घण्टे-भर उनसे सलाह मशविरा करता रहा। जब वह बाहर आया तब दस बजनेवाले थे। वहा से वह सीधा कोतवाली पहुँचा। थोडी देर वहा दफ्तरवाले कमरे पर जाकर रुका रहा और बातचीत करता रहा। कोतवाली पर निचली मजिल के कोने में एक कमरे के पास एक कार खडी हुई थी। यह वही कमरा था जहा 'चचा' इस्पक्टर ने अजीतसिंह के पोस्टमार्टम की रिपोर्ट टेलीफोन पर पायी थी और जिससे उसकी हत्या के मामले की पूरी शक्ल ही बदल गयी थी। इस समय उस कमरे मे सब इस्पक्टर अस्थाना के साथ रूबी और एक दूसरा व्यक्ति बैठा हुआ था। सिद्दीकी ने बिना पूछे ही समझ लिया कि यह व्यक्ति रूबी का वही रिश्तेदार होगा जिसके यहा वह पिछली दो रातो से रह रही है। वही उसे अपनी कार मे वहाँ लाया था। सिद्दीकी के कमरे मे आकर बैठ जाने के बाद, एक-दूसरे का परिचय हो चुकने पर उसने कहा, "मिस्टर सिद्दीकी, यह बडे ताज्जुब की बात है कि हमसे बात करने के लिए आपने हम यहा बुलाया है। शायद यह कहने की जरूरत नहीं कि मिसेज हरिश्चन्द्र को इस समय आप सबकी हमदर्दी की जरूरत है। मैं समझता हूँ कि यह ज्यादा स्वाभाविक होता कि आप खुद इस समय हमारे यहा तशरीफ लाये होते !'

सिद्दीकी ने कुछ कहने के लिए मुह खोला, पर चुप हो गया। अचानक उसने कडी आवाज मे कहा, "आप बगल के कमरे मे जाकर बैठिए। जब जरूरत होगी, मैं आपको यहा बुला लूगा।"

सिद्दीकी की बात से उस व्यक्ति को एक झटका सा लगा। उसने कहा, "यह सब क्या है ? थर्ड डिग्री ?"

सिद्दीकी ने कहा, "आप चाहे जो समझें पर हम एक खून की जाच कर रहे हैं। उसमे एक गोली से घायल और बेहोश इन्सान को जहर देकर मारा गया है। अब आप बाहर तशरीफ ले जायें।"

रूबी अब तक चुपचाप बैठी हुई थी। उस आदमी के चले जाने के बाद उसने सिद्दीकी से स्पष्ट स्वर मे कहा, 'जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मेरे

लिए इसमे कोई फर्क नही पडता है कि आप मुझसे मेरे घर पर बात करें या यहा पर। आप बतायें, मैं इस मामले म क्या मदद कर सकती हूँ।'

सिद्दीकी उस पर अपनी निगाह जमाये रहा। फिर धीरे धीरे, एक-एक शब्द का स्पष्ट करते हुए उसने कहा 'मिसेज रवी हमे सब कुछ मालूम है। आप हमारी यही मदद कर सकती हैं कि आपने जो कुछ किया है हम सच सच बता दीजिए। उसम हम दोनो को आसानी होगी।'

अब रवी ने सिद्दीकी को शक की निगाहो से देखा। उसका गोरा चेहरा तमतमा उठा था। उसने धीरे से पूछा, 'मैंने क्या किया है?"

सिद्दीकी बड़े नाटकीय ढग से अपनी कुर्सी से उठकर खडा हो गया। मेज के कोने पर टिकते हुए उसने इतमीनान से सिगरेट सुलगायी और धीरे धीरे कहता गया, 'लगभग दस साल पहले—१९५६ की बात है—आप मेरठ म एम० जी० गर्ल्स कालेज म लेक्चरर थी। तब आपकी शादी नही हुई थी। उस वक्त आपका एक बच्चे से परिचय हुआ था। बच्चे का नाम सदीप है। उसकी उम्र अब दस साल से ज्यादा हो चुकी है और वह नैनीताल के एक पब्लिक स्कूल म पढ रहा है। वह आपकी दोस्त मिसेज रत्ना का दत्तक पुत्र है। क्या आप बता सकती हैं, सदीप और आपका क्या रिश्ता है?'

स्त्री का चेहरा पीला पड गया था। वस भी इस वक्त उसके चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था। सवेरे के स्नान की ताजगी ही उसकी सहज सुन्दरता का बढाने में मदद कर रही थी। पर इस सवाल ने एकदम से उसके चेहरे की कान्ति छीन ली। उसने कहा, 'आप यह सब क्या पूछ रहे हैं?"

उसके हाठो के कोने कापने लगे थे। सिद्दीकी उसे बराबर घूरता रहा। फिर अपने बठने का ढग बदलकर बोला 'देखिए, मैं आपको ज्यादा पसोपेश मे नहीं डालना चाहता। आपके बारे म मुझे जितना मालूम है, वह मैं खुद बताये देता हूँ। आप सुनकर सिर्फ इतना बता दें, यह सही है या गलत।'

उसकी निगाहो से लगता था, वह एक ऐसे जाल मे फँस गयी है जिसे तोडकर निकला नही जा सकता। थोडी देर सन्नाटा रहा। फिर सिद्दीकी ने, जसे वह कोई फैसला सुना रहा हो, सधी आवाज म रुक रुककर कहना शुरू किया 'मुझे मालूम है कि सदीप आपका ही लडका है और वह आपकी शादी के पहले पैदा हुआ था।"

कहकर वह चुप हो गया जसे वह किसी पत्थर के टुकडे को किसी

स्विमिंग पूल म डूबता हुआ देख रहा हो और उसके नह मे जाकर बैठ जाने का इंतजार कर रहा हो। रूबी की आँखें फटी की फटी रह गयी। सिद्दीकी ने कहा, "मुझे यह सब कहते हुए अफसोस होता है। पर अब असलियत का छिपना नामुमकिन है।'

थोडी देर चुप रहकर उसने कहा, "सदीप और आपके रिश्ते की बात दो-तीन लोगों को छोडकर और कोई नही जानता। यकीनन आपके पति मिस्टर हरिश्चन्द्र भी इसे नही जानते। पर यही बात अजीतसिंह के बारे में नही कही जा सकती। वह जानता था कि सदीप की माँ आप है

'अजीतसिंह के घर मे एक फोटो मिला है। इसे आप देख सकती हैं।' कहकर उसने अपनी जेब से फोटो निकाला और अपनी दो उँगलियो म थामकर उसे रूबी की आँखो के सामने हिलाया। वह कहता रहा "इसमे आप अपने बच्चे के साथ मौजूद है। इसमें मिसेज रत्ना भी है। अजीतसिंह ने यह फोटो बडी होशियारी से छिपाकर रखा था। अजीतसिंह से आप पिछले दिनो काफी मिलती रही हैं। पर वह आपके घर पर ज्यादा नहीं बैठता था। ज्यादातर आप ही उसके साथ बाहर जाती थीं। परसो आपने आठ हजार रुपये बैंक से निकालकर अजीतसिंह को दिये। वह रुपया अजीतसिंह के घर से बरामद हुआ है। उसी शाम को किसी ने अजीतसिंह के घर का ताला तोडकर वहा की बडी जल्दबाजी म तलाशी ली है। शायद तलाशी ही के दौरान उसके जूडे मे लगी हुई गुलाब की एक कली उसके रेडियोग्राम के पास गिर गयी थी, जो बाद मे हमे मिली है। वह किसी फूलदान की कली नही हो सकती, क्योकि उस फ्लैट म और सब कुछ है, सिर्फ ताजे फूलो के लिए फूलदान ही नही है।

"परसो की ही रात ११ बजे अजीतसिंह को अस्पताल म किसी ने जहर दे दिया। उसकी मृत्यु उसी जहर से हुई। जहर की शीशी अस्पताल के कम्पाउण्ड मे एक डस्टबिन मे पायी गयी है। वह एक छोटी सी कत्थई रग की शीशी है जिसम एक औंस से ज्यादा पानी आ सकता है। वैसी ही कुछ शीशियाँ आपके घर पर, आपके अपने कमरे मे भी हैं।

"मिसेज रूबी, परसो रात ११ बजे के लगभग आप अजीतसिंह को अस्पताल मे देखने भी गयी थी और आप उसके पास तीन मिनट तक अकेली रही थीं। इन सब बातो को एकसाथ देखने से कुछ नतीजे निकलते हैं। पूरे मामले की सचाई उन्ही नतीजो मे छिपी हुई है। मैं चाहता हूँ कि आप खुद वह सचाई हमारे सामने प्रकट कर दें। इसी म आपकी भलाई है।

लगा कि रूबी बेहोश होने जा रही है। वह कुर्सी से पीठ टिकाकर बठ गयी। उसन आखें बन्द कर ली और कुछ देर तक कुछ नही बोली। आखिर मे उसन आखें खोली और अपने पर काबू पान की पूरी कोशिश करके बोली, 'इस्पेक्टर साहब, आप क्या कहना चाहते हैं? यही न कि अजीतसिंह मेरे और सदीप के रिश्त को जानकर मुझे ब्लकमेल करने की कोशिश करता था और मैंने मौका मिलन पर उसे जहर देकर मार डाला। बोलिए, आपका यही मतलब है न?"

सिद्दीकी कुछ नही बोला। चुपचाप सिगरेट पीता रहा। उसकी निगाह से ऐसा लगा कि वह खुद रूबी के बोलन का इन्तजार कर रहा है। अन्त मे रूबी ने ही कहा, "आपन जितन नतीजे निकाले है, सब गलत हैं।"

सिद्दीकी के कुछ कहन के पहले ही रूबी का रिश्तेदार आधी की तरह कमरे मे घुस आया। उसे देखते ही सिद्दीकी उठ खडा हुआ। रिश्तदार रूबी की बेंच के पीछे खडा हो गया, जैसे रूबी के लिए वह सिद्दीकी के सभी वार झेलन के लिए तयार हो। सिद्दीकी ने कडी आवाज म कहा, "आपको बाहर रहन के लिए कहा गया था?'

मालूम है। पर इन्ह बरगलाकर आप इनका उल्टा सीधा बयान नही ले सकते।'

सिद्दीकी ने उसकी ओर तीखी निगाह से देखा। बोला 'आप बाहर चले जायें। वरना मैं आपको कमरे के बाहर फेंक दूगा। उससे आपको तकलीफ होगी।"

वह रूबी के पीछे पहले ही की तरह खडा रहा। बोला, "यह आपका घर नही है। सरकारी जगह है।" कहकर वह रूबी से बाला 'रूबी तुम यहाँ कोई भी बयान मत दो। बिल्कुल खामोश रहो। यह तुम्हे कुछ भी कहने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। मैं वकील को बुलाने जा रहा हूँ।'

रूबी ने बैठे ही बैठे उसका हाथ थपथपाया और कहा 'नही, मुझे इनसे कुछ भी नही छिपाना है। सुनिए " वह सिद्दीकी से कहन लगी, 'यह सरासर झूठ है कि म अजीतसिंह क फ्लैट पर कभी तलाशी लेने के लिए गयी थी। परसो शाम मैं दो एक मिनट के लिए उसकी मौजूदगी म जरूर गयी थी। हो सकता है तभी मेरे बालो स वह फूल वहा गिर गया हो। और यह भी सरासर झूठ है कि मैंने अजीतसिंह को अस्पताल म जहर दिया है।'

उसका रिश्तेदार चीखकर बोला 'तो अब आप लोग रूबी को खून मे फँसाने की कोशिश मे हैं। आपको कोई और नही मिला?'

सिद्दीकी धीरे धीरे फिर पहले की तरह अपनी जगह बैठ गया था। सयत होकर बोला, "आप ठीक समझे है। अब तक हमे जितना सबूत मिला है, उससे मिसेज रूबी का ही जुर्म प्रकट होता है।"

"तो क्या आप इन्हे गिरफ्तार कर रहे हैं ?"

सिद्दीकी कुछ सोचता रहा। फिर बोला "आप यह भी ठीक ही समझे है।"

रूबी को जैसे विश्वास नही हो रहा हो। उसने कहा, "क्या सचमुच आप अब मुझे घर न जाने देंगे।'

'मुझे अफसोस है। पर मुझे अब आपको थाने पर ही रखना होगा। हो सकता है अजीतसिंह को जहर आपने न दिया हो। पर पूरे वाकिआत आपके खिलाफ पडते है और मामले की जाच पूरी होने तक आपको हमे गिरफ्तारी मे रखना पडेगा। इसकी सूचना आपके पति को या जिसे बतायें उसे दे दी जाये।"

उसने रूबी के रिश्तेदार से कहा, आप जायें। अपने वकील को बता दें।' पर ये शब्द सहजता से कह गये थे। इनमे मखौल नही था। थोडी देर कमरे मे शान्ति रही। अब तक रूबी ने अपने को पूरी तौर से सयत कर लिया था। बोली 'कृपया इसकी इत्तिला मेरे पति को इसी वक्त भेज दें। बल्कि मैं चाहूँगी कि आप मुझे इजाजत दे दें कि मैं उन्हे फोन कर दू।"

सिद्दीकी ने अस्थाना को उस कमरे मे फोन ले आने का इशारा किया। अस्थाना बाहर चला गया। रूबी थोडी देर सिर झुकाये बैठी रही। उसकी आखो के आगे अगले दिन के अखबार की सुर्खिया नाच रही थी, जिनमे कहा जायेगा कि पति ने पहले अजीतसिंह को गोली चलाकर मारना चाहा और बाद मे पत्नी ने उसे जहर देकर खत्म कर दिया। उसको गले मे जकडन सी महसूस हुई। पर उसने कमरे के चारो ओर और दरवाजे के बाहर देखकर अपने को इतमीनान दिलाया कि अभी सब कुछ खत्म नही हुआ है। बाहर वैसे ही हवा बह रही है, सूरज वैसा ही चमक रहा है।

जब वह बोली तब उसकी आवाज सधी हुई थी "अपने पति के अलावा मैं अपने परिवार के एक मित्र को भी बुलाना चाहती हूँ। शायद आपको इसमे कोई एतराज न होगा।"

"क्या नाम है उनका ?'

'उमाकान्त।"

"उ मा का त।" सिद्दीकी न एक एक अक्षर अपने होठो से धीरे धीरे निकाला। कुछ देर वह रबी की ओर देखता रहा।

आठ

शेविंग ब्रुश का हैण्डिल टूटा हुआ था। इसलिए शेविंग क्रीम का फेना दाढी पर फलन के बजाय उमाकान्त की उगलियो पर फैलकर कुहनी तक बहन लगा था। शीशे मे अपने चेहरे को घूरते हुए उमाकान्त न चालीसवी बार अपने को हुक्म दिया 'नया ब्रुश खरीदना आज मत भूलना।

उमाकान्त एक पत्रकार था। पहले वह दिल्ली मे एक प्रसिद्ध अखबार के विशेष सवाददाता का काम करता था। अपराधो की रिपोर्टिंग करन म वह बडा होशियार समझा जाता था। अपराध और अपराधियो के बारे म उसकी गहरी जानकारी थी।

पिछले कई दिनो म वह इसी वक्त अपन को यह हुक्म सुनाता आ रहा था। पर घर मे बाहर निकलते ही रोज अपने हुक्म की तामील करना भूल जाता था। सवेरे दाढी बनाने के लिए फिर वही टूटा ब्रुश उसके हाथ मे होता था। किसी तरह दाढी खरोचकर गैस के स्टोव पर उबलते हुए दो अण्डो की ओर उसने ध्यान दिया—जाहिर था कि वे पत्थर की तरह कडे हो गये होगे। उसने स्टोव के दूसरे रिंग पर चाय का पानी रख दिया और बाथरूम म घुस गया। थोडी देर म बाथरूम के फव्वारे स पानी गिरने की आवाज ने फ्लैट की सभी आवाजो को चित कर दिया।

पर फोन की घण्टी की आवाज ऐसी आवाजो को हमेशा ही मात देती रहती है। सामने के कमरे म फोन बडी जिद के साथ बजा और तब तक बजता रहा जब तक कि उमाकान्त ने साबुन से पुते हुए जिस्म पर तौलिया लपटकर, एक झपट मे बाथरूम स निकलकर रिसीवर अपने कान म नही लगा लिया "हलो, मैं उमाकान्त '

उधर से किसी की बात पूरी होने के पहले ही वह चीखा, ' मरे कमरे मे बाढ आ रही है। अपनी बात जल्दी खत्म कीजिए।"

सचमुच ही उसके जिस्म से गिरी हुई पानी की बूदो न मिलकर कमरे म दो तीन पतली नदियाँ फश पर बहा दी थी।

वह थोडी देर कान पर रिसीवर लगाय सुनता रहा, फिर बोला, ' वे कहते है रबी ने खून किया है ? तब तो मुझ उसका दशन करन आना ही

पडेगा। ऐसी शक्ल सूरतवाले खूनी आजकल कहा मिलते है ?'

दो मिनट मे जिस्म पर पुता हुआ साबुन शावर के नीचे बहाकर, खूब कडे अण्डे, खूब काली काफी और खूब जले हुए टास्टो का दिन के ग्यारह बजे नाश्ता करके, वह स्कूटर पर तेजी से कोतवाली की ओर चल दिया।

अपराधो की रिपोर्टिंग करते वक्त उमाका न्त मे तीन विषयो की दिलचस्पी पैदा हुई—उसने समाज शास्त्र का नियमित अध्ययन किया, अपराध शास्त्र के बारे मे लेख लिखने शुरू किए, और अपराधो की, खास तौर से खून के मामलो की, निजी तौर से जाच पडताल करने लगा। इससे बाद मे कई आश्चर्यजनक परिणाम निकले। खून के कई ऐसे मामले, जिन्हे पुलिस यह समझकर खत्म कर चुकी थी कि अपराधी का पता नही चलेगा, उसकी कोशिश मे सुलझ गये। यही नही, कई ऐसे मामलो मे जिनमे पुलिस एक रास्ते से चल रही थी उसने दूसरे रास्ते से चलना शुरू किया और बाद मे साबित हुआ कि पुलिस गलत आदमी को अपराधी समझ रही थी। इससे पुलिस के ऊचे वर्गो मे उमाकान्त की हैसियत बढी। पर नीचे के वर्गो मे उसका पुलिस से प्रेम और घृणा का मिला जुला रिश्ता बनता गया। अपराधो की दुनिया मे जिसे 'अण्डरवर्ल्ड' कहा जाता है, उसमे उसका अजब-सा सम्बन्ध बन चुका था। बहुत से अपराधी, खास तौर से वे जो उस दुनिया से हटकर साधारण जीवन बिताने लगे थे, उसे अपना साथी समझते थे और उसका आदर करते थे।

उधर जनसाधारण मे उमाकान्त को धीरे धीरे क्राइम रिपोटर के बजाय एक 'प्राइवेट जासूस' गिना जाने लगा। पर अभी हमारे यहाँ प्राइवेट जासूसो का वर्ग विकसित नही हुआ है, इसलिए अपनी ओर से वह क्राइम रिपोटर ही रहा, पशेवर जासूस नही।

पिछले पाच वर्षों से उमाकान्त लखनऊ आ गया था और अब बम्बई के एक अखबार का सवाददाता था। पर उसके लिए ज्यादा काम नही था। इससे उसे अपराधो की जाच-पडताल करने का काफी समय मिल जाता था। इस वक्त, दिन के साढे ग्यारह बजे, वह कोतवाली के एक कमरे मे बैठा हुआ था। कमरे मे उसके अलावा रूबी और हरिश्चन्द्र थे। कमरा बहुत छोटा था और चार पाँच कुर्सियो को छोडकर उसमे कुछ भी नही था। उसने रूबी से कहा, "आपकी मदद करने के पहले मैं एक मामूली-सा सवाल पूछना चाहता हूँ।" उसने पूछा, "अजीतसिंह को आपने जहर दिया था या

नहीं ?"

यह सवाल उसी लहजे में किया गया जैसे पूछा गया हो कि आज आपने चाय पी या नहीं ?

रूबी ने लगभग चौंककर कहा, "मैं आपसे पहले ही कह चुकी हूँ '

उमाकान्त ने उसकी बात बीच ही में काट दी। बोला, "इस बारे में आपने मुझसे पहले कुछ नहीं कहा है। अभी तक आपने मुझे जितनी बातें बतायी उनसे सिर्फ यह पता चलता है कि पुलिस आपके खिलाफ क्या-क्या सोच रही है और क्या करने जा रही है। खुद आपने मुझे अपने बारे में साफ तौर से कुछ नहीं बताया। मैं सब कुछ जानना चाहूँगा। और कुछ और जानने के पहले पहली बात यही जानना चाहूँगा कि अजीत-सिंह को आपने जहर दिया है या नहीं ?"

रूबी ने जोर से कहा, 'नहीं, नहीं, नहीं।' लगा कि अब वह रो देगी।

उमाकान्त ने यह बात चुपचाप सुन ली। फिर बिना किसी आवेग के कहने लगा, 'सिर्फ एक ही नहीं काफी है।"

थोड़ी देर कमरे में शान्ति रही। फिर उमाकान्त ने कहा, "अब आप मुझे अपने और अजीतसिंह के सम्बन्धों के बारे में पूरी पूरी बात बतायें।"

अब तक रूबी अपने को संयत कर चुकी थी। उसने हरिश्चन्द्र की ओर गम्भीरता के साथ देखा और बोली 'मैं अपनी बात खास तौर से तुम्हें सुनाना चाहती हूँ। तुमने पहले भी कई बार अजीतसिंह के साथ मेरे मेल जोल को लेकर अपनी नाराजगी दिखायी थी। तुम यही समझते रहे कि मेरा और उसका प्रेम-सम्बन्ध है। मैंने पहले भी कई बार तुम्हारा सन्देह मिटाने की कोशिश की थी। अब आज शायद आखिरी बार मैं यह दोहराना चाहती हूँ कि तुम्हारा शक बिल्कुल गलत था। मेरा अजीत सिंह से ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं था।'

हरिश्चन्द्र चुपचाप उसकी बात सुनता रहा। उमाकान्त ने एक अखबार के पन्ने उलटने शुरू कर दिये थे, मानो इन घरेलू बातों में उसका कोई सरोकार न हो। रूबी कहती रही, 'मैंने अपनी यह मुसीबत अपने हाथों पैदा की है। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि तुमसे शादी के पहले या उसके बाद सच बात बता देती। अजीतसिंह मेरी इसी कमजोरी का फायदा उठाता रहा।'

इसके बाद वह उमावा त की ओर मुखातिब हुई। वह कुर्सी पर निश्चल बैठी हुई थी और सधी आवाज मे बात कर रही थी। उसके मन मे अगर कोई आवेग था तो वह उसके हाथो की उँगलियो से ही प्रकट हो रहा था। वह बराबर अपनी कुर्सी के हत्थे पर उँगलिया फेरती जाती थी। उसन कहना शुरू किया, 'बात १९५८ के शुरू के दिना की है। तब मैं लगभग चौबीस साल की थी और " यहा वह उदास ढग स मुसकरायी बदसूरत नही थी। हमारे मा-बाप दिल्ली म थे। उ ह छोडकर मै मरठ के एम० जी० गल्स कालेज मे लेक्चरर होकर आयी थी। रत्ना भी वही पर लेक्चरर थी। उसकी शादी हो चुकी थी। मेरी उसकी बडी घनिष्ठ मित्रता थी। जब मैं यूनिवर्सिटी म थी तभी मेरी मित्रता आनन्द से हा गयी थी। आनन्द लुधियाना का रहनेवाला था और फौज मे सेकिण्ड लेफ्टिनेंट की हैसियत से दिल्ली म नियुक्त हुआ था। मेरठ म मेरे आ जान के बाद वह मेरठ आकर मुझस मिलता रहा। कभी कभी उससे मिलन के लिए मैं दिल्ली भी जाती थी। आनन्द की ज्यादा प्रशसा करके मै इनका (यहा उसन हरिश्चन्द्र की ओर देखा) उलझन मे नही डालना चाहती। शायद इतना कहना काफी है कि वह बडा ही सभ्य, बडा ही शरीफ इन्सान था। हमन काफी पहले तय कर लिया था कि हम शादी करेंगे। पर शादी करन के पहले वह कैप्टेन हो जाना चाहता था और उसकी इच्छा थी कि उसकी नियुक्ति किसी ऐस स्टशन पर हा जाये जहा वह मुझे लेकर रह सके।

"१९५७ के अन्त म वह कैप्टेन बन गया और उसकी नियुक्ति उत्तर-पूर्वी सीमा त क्षेत्र म हुई। वहा जाने के पहले वह चार दिन के लिए मेरठ आया और हम लोग साथ साथ रह। उसी के दो महीने बाद उसे अपनी बहन की शादी म भाग लेने दो चार दिन के लिए वापस आना था। हमन तय किया कि उसी समय हम लोग भी अपनी शादी कर लेंगे। पर नेफा म जान के बाद वह वापस नहीं आया। दो महीने के भीतर ही एक एक्सिडेण्ट म वह मारा गया। उसकी जीप सडक स फिसलकर एक गहरे खडड म गिर गयी थी और उस दुघटना म काई भी नही बचा था। आनन्द को बहुत पहले ही मैं अपना पति बना चुकी थी। कानून की निगाहा म वह भले ही मेरा काई न हा, पर मैं उसे अपना सब कुछ समझती थी। नेफा म उसके नियुक्त होन के कुछ दिना बाद ही मुझे पता चला, मैं मा बननेवाली हूँ। पर उस वक्त मुझे कोई घबराहट

नहीं हुई। मैंने आनन्द को खत भेजकर पूरी बात बता दी थी और उसने जवाब भी भेजा था कि वह जल्दी ही वापस आकर शादी की रस्म पूरी कर डालेगा। उसके खत आज भी मेरे पास मौजूद हैं। पर आनन्द के न रहने से मेरी हैसियत एकदम से बदल गयी थी। मेरी ओर से कल तक जो एक स्वाभाविक व्यवहार की बात थी, वही अब अचानक अपराध बन गयी और मेरे लिए लाजमी हो गया कि मैं झूठ का सहारा लूं।

"रत्ना को यह सभी घटनाएँ शुरू से मालूम थी। विपत्ति के उन दिनों में उसने मेरा बड़ा साथ दिया। मैंने कालेज से छुट्टी ले ली। सदीप के पैदा हो जाने पर कुछ दिनों तक उसे हमने दिल्ली के एक बालगृह में रखा और साल भर बाद ही रत्ना ने उसे अपने दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। उसके बाद वह रत्ना के यहां रहने के लिए आ गया। वह रत्ना को ही अपनी मां समझता है और उसके नाते मुझे भी अब तक बहुत प्यार करता है। अब आगे वह मेरे बारे में क्या सोचेगा, यह मैं सोच भी नहीं पा रही हूँ। यह सब नौ दस साल पहले की बातें हैं। धीरे धीरे जिन्दगी फिर अपने पुराने ढर्रे पर चलने लगी। पर मुझे लगता रहा, मेरा सब कुछ खो गया है और मुझे सारा जीवन इसी तरह चारों ओर से वंचित रहकर बिताना पड़ेगा। पर दो साल बाद ही अचानक मेरी तुमसे मुलाकात हुई।'

यह बात उसने हरिश्चन्द्र से कही। वह उसे कुछ देर उदासी के साथ देखती रही। कमरे में खामोशी थी। उमाकान्त और हरिश्चन्द्र में से किसी ने भी उसे तोड़ने की कोशिश नहीं की। कुछ देर बाद रूबी ने ही कहना शुरू किया, उसके बाद ही मुझे लगा, अभी मेरे लिए सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। यह बात सुनने में भले ही खोखली मालूम दे पर सही है कि तुम्हें जितनी गहराई से मैंने चाहना शुरू किया उसमें पिछले दिनों का सारा दुख डूबकर खत्म हो गया था। मैं जानती थी, कभी न कभी वे पिछले दिन मुझसे बदला जरूर लेंगे। पर तुमसे मिलने के चार महीने बाद ही मुझे लगने लगा कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं रह सकती। मजबूरन मुझे झूठ का सहारा लेना पड़ा। पहले मैं रोज सोचती थी कि तुमसे शादी करने के पहले तुम्हें पूरी बात बता दूं। पर मेरी हिम्मत मुझे हमेशा धोखा देती रही और आखिर में शादी के बाद मैं बिल्कुल ही कमजोर हो गयी। तुम्हें सदीप के बारे में सब कुछ बता देने की रही सही ताकत भी जाती रही। मैं अपने को इस धोखे में रखने लगी कि इन दिनों र

ही हम दोना अपने विवाहित जीवन म सुखी रह सकत है। अफसोस यही है कि मैं तब भी भीतर से यही जानती थी कि मैं गलत सोच रही हूँ। उसके बाद जो कुछ हुआ, शायद उसकी तुम्ह जानकारी हो ही गयी हो। अजीतसिंह रत्ना का चचेरा भाई था। वह एक बार मेरठ एम मौके पर आया जब वहाँ सदीप भी मौजूद था। रत्ना और सदीप के साथ मेरा एक फोटो लिया गया था जिसकी एक कॉपी अजीतसिंह न रत्ना के यहाँ से किसी तरह पा ली थी। उस शायद रत्ना के पति स ही यह मालूम हो गया कि सदीप मेरा लडका है। यह जानकारी उसन शायद अब से दो साल पहले पायी थी क्योंकि तभी मेरठ से लौटत हुए, जब वह एक बार रत्ना के साथ हमारे घर आया, उसन मुझसे एकान्त म बात करने की इच्छा प्रकट की। मैंने उससे पूछा कि वह कौन सी जरूरी बात हो सकती है जिस पर आप इस तरह बात करना चाहते हैं। तब उसन कहा कि मैं 'जनक्रान्ति' का सम्पादक हूँ। उसम मुझे एक लेख निकालना है, जिसके लिए मुझे आपसे मदद लनी है।

और उसके बाद ब्लैकमेल का दौर शुरू हुआ। उसन मुझे बताया था कि सदीप के बारे म सिर्फ फोटो ही नही बल्कि और कई तरह के प्रमाण भी उसन इकट्ठे कर लिये हैं। आनन्द के परिवारवालो से उसने यह जानकारी ल ली थी कि वह मुझम शादी करनेवाला था। नेफा जाने जाने से पहले मेरठ म जब आनन्द मेरे पास चार दिन के लिए आया था तब उसके मेरे साथ रहने के कई प्रमाण भी उसने शायद खोज लिये थे। वह मुझे बराबर भय दिखाता था कि 'जनक्रान्ति' म वह मेरे पिछले जीवन के बारे म, बिना मेरा नाम दिये, एक कहानी छापेगा। उस कहानी के सिलसिले म हमारा और सदीप का फोटो भी उसी के साथ ही प्रकाशित करेगा। मैं जानती थी कि मेरे सामाजिक और विवाहित जीवन को खतम कर देने के लिए इतना बहुत काफी होगा। यह भी सही है कि वह मुझसे सिर्फ रुपया ही नही चाहता था, अगर मैं उसकी बात मानती तो वह मुझे अपनी प्रेमिका भी बनाकर रखता। इस बात का कई बार वह इशारा भी कर चुका था। शायद इसीलिए वह जिद करता था कि मैं उससे अपने घर से बाहर मिलूँ। वह पहले भी मुझे अपने साथ डायमण्ड होटल ले जा चुका था। वहाँ उसका अलग से एक कमरा था जिसम वह अपनी गन्दी लिखा पढी का काम मौके-बेमौके आकर करता रहता था। वह प्राय यही चाहता कि डायमण्ड होटल म मैं उसके कमरे मे जाकर

बैठू। उसकी बातें सुनू, उसे रुपया दू और यदि हो सके तो उसकी दूसरी इच्छाओं का भी पूरा करूँ।

" पर उसका जोर ज्यादातर रुपये ही पर था। रुपये की एक किस्त पाकर वह सन्तुष्ट हो जाता था और फिर मुझसे किसी दूसरी प्रकार की आशा नहीं करता था। कुछ दिनों के बाद हो वह मुझे फिर परेशान करना शुरू करता। इन आठ हजार रुपयों के अलावा वह मुझसे अलग अलग मौकों पर सात आठ हजार रुपये अलग से ले चुका होगा। आखिर मे मेरे बहुत खुशामद करने पर वह इस बात के लिए तैयार हो गया था कि वह मुझे फोटो वापस करके हमेशा के लिए छुट्टी दे देगा। पर इसके लिए उसने मुझसे एक भारी रकम मागी थी और आखिर म बात आठ हजार पर तय हुई थी।

उसके बाद की घटनाएँ तुम्हें मालूम ही हैं।" उसने हरिश्चन्द्र स कहा, 'अब तुम्हें सब कुछ मालूम हो गया है। अजीतसिंह खत्म हो गया है। मैंने उसकी हत्या नहीं की है, पर उसकी हत्या हो जाने पर मैं बहुत खुश हूँ।

यहा उमाकान्त ने, जैसे वह किसी मीटिंग म अपने दोस्त का समर्थन कर रहा हो कहा, "मैं भी।"

रूबी ने आख उठाकर उसकी ओर देखा, एक गहरी सास ली और हरिश्चन्द्र से कहती रही 'पर यह दूसरी बात है कि हम दोनो उसकी हत्या के साथ ही भारी मुसीबत में पड गये हैं। मगर मैं इससे भी बडी-बडी मुसीबतें झेल सकती हूँ। पर यह तभी हो सकेगा जब मुझे यकीन हो जाये कि तुमने मुझे माफ कर दिया है।'

वह चुप हो गयी और खामोश निगाहो से जमीन की ओर देखने लगी। हरिश्चन्द्र ने हिचकिचाते हुए अपना हाथ आगे बढाया और धीरे-स उसकी उँगलियो पर अपनी उँगलियां रख दीं।

सहसा उमाकान्त ने कहा 'इन्स्पेक्टर सिद्दीकी न मुझे बताया है कि वह अपने सुपरिंटेंडेण्ट से पहले ही राय ले चुके हैं। वे मानते हैं कि हत्या के आरोप पर अभी वे एकदम से आपका चालान नहीं कर सकते। पर आपको रिमाण्ड म लेने के लिए उनकी निगाह में काफी सबूत मौजूद हैं। आज आपको यहीं हवालात म रहना होगा और शाम तक शायद वे आपको जेल भेज देंगे।"

उसने हरिश्चन्द्र स कहा, 'पति पत्नी के आपसी मामलों में कोई भी

राय देना खतरनाक है। खास तौर से मुझ जैसे आदमी के लिए, जिसके न कभी कोई पत्नी रही और जो न खुद कभी पति ही बन पाया। फिर भी अपने पुराने सम्बन्धों के नाते मैं एक सलाह देना चाहता हूँ, और वह यह है कि आप पर धारा ३०७ का मुकदमा चलने जा रहा है। बहुत मुमकिन है कि स्त्री पर भी पुलिस धारा ३०२ का मुकदमा चलाने का पूरा पूरा सबूत इकट्ठा कर ले और इनका भी चालान हो। सही घटना मालूम करने की मैं पूरी कोशिश करूँगा, पर उसका क्या नतीजा होगा, यह बताना मुश्किल है। इसलिए आप यही मानकर चलें कि आप दोनों अभी इन भारी मुसीबतों के नीचे दबे हुए हैं और आपका सारा ध्यान इन्हीं से लड़ने में रहना चाहिए। स्त्री की पिछली जिन्दगी और आपके विवाहित जीवन के भविष्य का सवाल मेरी निगाह में बहुत ही मामूली है। स्त्री ने कोई गलती भी की थी या नहीं, और की थी तो उसे आप माफ कर सकेंगे या नहीं, यह सब फिलहाल फालतू मसले हैं जिन पर इस वक्त तो आपको बिल्कुल ही नहीं सोचना चाहिए।'

फिर वह मुसकराता हुआ खड़ा हो गया और बोला, "ता लीजिए, यह उपदेश तो पति पत्नी के आगे काम आयगा। फिलहाल आप स्त्री की जमानत की दरख्वास्त आज ही अदालत में पेश करा दें। मैं जानता हूँ कि वह खारिज हो जायेगी। फिर भी अदालत में उसका पहुँच जाना जरूरी है।'

उन दोनों को कमरे के अन्दर छोड़कर वह बाहर आया। दरवाजे पर दो कान्स्टेबिल खड़े थे। उन्हें नजरअन्दाज करते हुए वह आगे बढ़ा।

कुछ दूरी पर बरामदे में सिद्दीकी खड़ा हुआ था। उसने हाथ हिलाकर उमाकान्त का अभिवादन किया। वहीं से बोला, 'कहिए भाई साहब, क्या नतीजा निकला ? असली खूनी का आपने पता लगा लिया हो तो मिसेज स्त्री को इसी वक्त छोड़ दिया जाय।

कुछ दिनों पहले अखबारों में एक शब्द बहुत ही लोकप्रिय हो गया था—पारक्लाम्। उस जमाने के कांग्रेस अध्यक्ष कामराज से पत्रकार लोग जब किसी पेचीदा समस्या के बारे में पूछते तब उन्हें तमिल में जवाब मिलता—पारक्लाम। इसका मतलब था—देखते रहिए, इन्तजार कीजिए।

जैसे कोई चोटी का नेता विदेशी पत्रकारों की भीड़ में वक्तव्य दे रहा हो, कुछ उसी अन्दाज में उमाकान्त ने मुसकराकर सिद्दीकी से कहा, 'पारक्लाम्।'

नौ

बादशाह को दफा ४२० के जुर्म में पहली बार पांच साल जेल की सजा हुई तो पुलिस ने चैन की सांस ली। उसके बाद वे बराबर चैन की ही सांस लेते रहे क्योंकि जेल से बाहर आकर बादशाह ने चार सौ बीस का धंधा ही छोड़ दिया।

पर जब तक वह उस धंधे में था उसकी अच्छी खासी धाक थी। उसका नाम उत्तर प्रदेश से बाहर के कई राज्यों में भी फैला हुआ था और कई जगहों की पुलिस उसके आने की भनक तक पाकर अपने कान खड़े कर लेती थी। उसके कई किस्से मशहूर हो गये थे और बहुत से लोग उससे सावधान रहने की कोशिश में ही गच्चा खा जाते थे।

बादशाह की सबसे बड़ी खूबी थी उसके स्वभाव की मिलनसारी और भलमनसाहत की बातचीत। जेल जाने के पहले, जेल के भीतर, और जेल के बाद किसी भी समय उसके स्वभाव का मीठापन खत्म नहीं हुआ था। जिन्दगी को वह इस तरह देखता था जैसे वह कोई मजेदार नाटक हो। *इसीलिए उसे कभी दोस्तों और हितैषियों की कमी नहीं हुई।*

किस्सा मशहूर है कि बादशाह जब दुलीचन्द उर्फ दीपंकर बोस उर्फ समुअल डिकुन्हा उर्फ सन्तोषसिंह उर्फ 'बादशाह' के नाम से गिरफ्तार हुआ तो उसे बड़ी इज्जत से बरेली के जेल में रखा गया। पुलिस को डर था कि वह चकमा देकर हवालात से किसी भी वक्त भाग सकता है। इसलिए अदालत में उसे न ले जाकर पुलिस ने इन्तजाम कराया कि जज जेल ही में जाकर उसका मुकदमा सुन लें। जज साहब उसके लिए जेल ही में इजलास लगाने लगे।

जज साहब की उम्र ज्यादा न थी और बादशाह में उनकी दिलचस्पी पैदा हो गयी थी। इसलिए मुकदमे की सुनवायी खत्म हो जाने पर वे बादशाह से उसके बारे में थोड़ी देर बात कर लिया करते। वे उसके अनुभव सुनने के लिए उतावले थे। पर बादशाह भगवान और भाग्य का नाम लेकर उनकी बात टाल दिया करता था।

एक दिन बादशाह को जब वार्डर जज साहब के आगे से बैरक की ओर ले जाने लगे तो उन्होंने उसे रोक लिया। बोले, "बादशाह, आज तुम कोई करिश्मा दिखा ही दो। मैं जानना चाहता हूँ कि तुममें ऐसी क्या बात है कि बात की बात में तुम लोगों की जेब खाली कर देते हो।'

बादशाह ने मुसकराकर कहा, "हुजूर का ख्याल मेरे बारे में पहले ही से सरार हो चुका है।"

उन्होंने कहा, "उससे कोई फर्क नहीं पडता। मेरे सामनेवाला मुकदमा तो इस वक्त के किस्से को लेकर है। पुरानी घटनाओं से मेरा कोई मतलब नहीं।"

बादशाह जज साहब के सामने फर्श पर बैठ गया। बोला, 'हुजूर, मेरे पास कोई भी करिश्मा नहीं है। दोस्तों की मेहरबानी है पब्लिक भी मुझे अपना समझती है। इसीलिए लोग अपने आप मुझे अपना रुपया दे जाते हैं। वरना मैं किस लायक हूँ।"

"पर अजनबी लोग तुम्हें इस तरह अपना रुपया क्या देंगे?"

"उनकी मेहरबानी है हुजूर, या ज्यादा से ज्यादा मेरी किस्मत कह लीजिए।"

जज साहब ने जिद की, 'फिर भी कोई एक करिश्मा तो दिखा ही दो।'

बादशाह ने मजबूरी से कहा, "मेरे पास कोई करिश्मा नहीं है, हुजूर। पर आपका हुक्म है तामील करनी ही पड़ेगी।'

कहकर उसने जादूगरों की तरह चुस्त आवाज में कहा, 'तो हुजूर, एक रुपया तो दीजिएगा जरा।

जज साहब ने एक रुपये का नोट निकालकर बादशाह को दे दिया। उसने नोट को गौर से देखा। फिर उलट-पलटकर उसे मोड़ा और अपने दायें हाथ की मुट्ठी में लेकर बैठ गया।

जज साहब उत्सुकता से उसे देखते रहे। बादशाह नोट को मुट्ठी में लिये बैठा रहा। लगभग पाँच मिनट हो गये।

जज साहब ने पूछा, 'अब?"

"अब क्या हुजूर?"

'अब इसके बाद क्या होगा?"

बादशाह ने कहा, "अब इसके बाद होना ही क्या है हुजूर। आपसे पहले ही अर्ज किया था लोगों की मुझ पर मेहरबानी रहती है। खुद मुझे अपना रुपया पैसा सौंप जाते हैं। आपने भी मुझे अपना एक रुपया सौंप दिया है।'

जज साहब का चेहरा लाल हो गया। बोले "वह रुपया वापस करो।'

बादशाह ने गिड़गिड़ाकर कहा, 'हुजूर, मुझे क्या आप एक रुपये के पीछे जलील करेंगे? मैं तो हुजूर इसे अपना ही समझ बैठा था। अब बिना

जोर जब्र के यह रुपया ता मेरे पास से कोई ले नही पायगा ! आप क्या चाहेंगे कि इसी के पीछे जेल मे एक तमाशा खडा हो ?"

जज साहब चलने के लिए कुर्सी स उठ खडे हुए। बाले, "तुम अव्वल दर्जे के हरामजादे हो !"

वादशाह ने इत्मीनान से रुपया अपनी जेब म रख लिया। सलाम करके कहा, 'हुजूर की मेहरबानी है। वर्ना, मैंने पहले ही कहा था, मैं कोई करिश्मा करना नही जानता।"

यही वादशाह उमाकान्त का साथी था और उसके इशारे पर नाचता था।

बादशाह के कई नामो मे पुलिस का 'दुलीचन्द' का नाम खास तौर स याद था, परन्तु पुलिस जानती थी कि यह भी उसका असली नाम नही है। अपने जमाने म 'अण्डरवल्ड' के चोर उचक्को मे उसे 'श्री चार सौ बीस' कहा जाता था। पुलिस अफसर, इन्कमटैक्स अफसर, किसी बडी विदेशी फर्म का प्रतिनिधि या कलकत्ता या बम्बई का एक बडा व्यापारी बनकर वह लोगो को सकडो वार उनकी रुपये की थैलियो से फुसत दे चुका था। वह कहा तक पढा था, बताना मुश्किल है। पर उसे कई भाषाएँ आती थी और बडे स बडे होशियार लोग उसके चक्कर म आ जाते थ। बादशाह उर्फ दुलीचन्द उर्फ 'श्री चार सौ बीस' सच्चे अर्थों मे चार सौ बीस था।

बाद म उसको बरेली म एक बैक से जाली चैक देकर रुपया निकालने के आरोप मे गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी भी उसके एक बहुत प्यारे दोस्त की दगाबाजी के कारण हुई। बहुत से अपराधो के आरोप म उसका चालान किया गया, पर ज्यादातर मुकदमे बहुत जल्द खत्म हो गये क्योकि उनमे सबूत काफी नही थे। बादशाह के पास काफी रुपया था और वह अच्छे स अच्छा वकील कर सकता था। पर वकीलो स बात करके उसे यकीन हो गया था कि बरेली के इस बैक वाले मुकदमे मे वह बुरा फँस गया है और उसकी बचत नही है। इसलिए उसने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। बरेली म उसने महमूद हसन के नाम स बैक मे जाली चैक पेश किया था। महमूद हसन की ही शैली म उसने अपना बयान दिया, "अल्लाह के करम स और दोस्तो की मेहरबानी से इतने दिनो तक कमाता-खाता रहा। जमाने ने मेरा बडा साथ दिया। अब हुजूर जितने दिनो के लिए चाहे, जेल भेज दें। वहाँ तो कमाने खाने के लिए किसी दूसरे की मेहरबानी की भी जरूरत नही। अल्लाह के करम स ही काम चल जायगा।"

उसे पाच साल की सजा हुई।

पाच साल पूरे हान के पहले ही वह छूट गया और छूटत ही कुछ अच्छे मामाजिक कायकताम्रा के हाथा मे गया। वे जेल से निकले हुए अपराधियो की भलाई के लिए दिल्ली म एक सस्था चला रहे थे। वहा उनको पढाया लिखाया जाता, तरह तरह के व्यवसाय सिखाये जात और बाद मे उन्हे काम मे लगान के लिए मदद भी दी जाती थी।

बादशाह इस सस्था में दा साल तक रहा। उमाकात उन दिनो दिल्ली मे ही था। वही उसकी उमाकान्त से जान पहचान हुई। उमाकान्त न दखा, वह असाधारण तरीके का होशियार, समझदार और खुशमिजाज आदमी है। वह उसम कुछ ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा। इन दो सालो मे बादशाह उस सस्था के 'मस' का इन्तजाम देखता रहा था। उमाकान्त ने बादशाह को कई जगहा स आर्थिक सहायता दिलायी और 'मेस' के तजुर्बे के आधार पर उसे एक ढाबा चलाने की सलाह दी। इसके लिए उस लख नऊ म यह दुकान भी मिल गयी। इस ढाबे का नाम बादशाह ने 'डी लक्स होटल' रखा।

इसके साथ ही उसने अपराधो की जिन्दगी पूरी तौर से पीछे छाड दी। पर वह अपना अनुभव और दिमाग, और अल्लाह का करम, पीछे नही छाड सका। ढाबे से काफी पैसा आता था और दूसरो के मामला म दिल-चस्पी लेन के लिए समय भी उसके पास काफी था, जिसका उपयोग वह अपराधो की छानबीन म पुलिस को सहायता देने मे करने लगा। उसके सम्पर्क चारो ओर फल हुए थे। उनसे और अपनी काबलियत के सहारे पुलिस के लिए वह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ। कुछ दिना बाद उमा कात भी लखनऊ आ गया। तब स अपराधा के मामले म वह उमाकान्त की ओर से भी दौड धूप करन लगा। पुलिस से अब भी उसका साथ था, पर यह रिश्ता 'प्रेमपूर्ण तटस्थता' का था।

बादशाह अपने पैस का अपने साथियो पर खुलकर इस्तमाल करता था। उसके प्रभाव म बहुत से नौजवान लडके थे और वह शहर के सभी हिस्सो म फल हुए थे। य नौजवान बेकार ता थे पर अपराधी नहीं थे। उन्हे वह जरूरत पडन पर अच्छा खाना खिलाता, सिगरेट देता कभी कभी रुपये भी देता। उनस वह इधर उधर की सूचनाएँ मँगवाना और अपने और दूसरा के काम कराता। प्राय यह सभी लडके चुस्त और चौकन्न थे और अपन का मुसीवन के रास्त से अलग रखकर काम निकालने की कला म

माहिर थे।

बादशाह का ढाबानुमा होटल शहर की घनी बस्ती में था, जहाँ पैदल मुसाफिरों, साइकिलों और रिक्शा के मारे मोटरवालों को आने की हिम्मत न पड़ती थी। होटल के दरवाजे पर दोनों ओर खाने की सामग्री की फेहरिस्त साइन-बोर्डों पर लिखी हुई थी और उनमें हर चीज की कीमत भी दी गयी थी। उसी से जाहिर था कि यहाँ खाना बहुत सस्ता मिलता है। अन्दर सस्ती बेंचों पर बैठे हुए लोग दोपहर का खाना खा रहे थे और कुछ लोग खाने की कोई बेंच खाली होने का इंतजार कर रहे थे। खाने का कमरा लगभग चौदह फुट चौड़ा और बहुत काफी लम्बा था। उसके दूसरे सिरे पर खाने की बेंच पर बादशाह कैशमेमो और कुछ कागज फैलाये हुए बैठा था। मैनेजर के बैठने की यही जगह थी।

उमाकान्त को देखते ही बादशाह आदर से उठ खड़ा हुआ। उमाकान्त कुछ बोला नहीं, सिर्फ बहुत हल्के ढंग से मुसकराते हुए वह उसके पास आया और उसी की बगल में बैठ गया। बादशाह भी उमाकान्त से लगभग सटकर बैठ गया। फिर बिना किसी प्रस्तावना के वे दोनों आपस में फुसफुसाकर बात करने लगे। दो मिनट बाद ही उसने एक बैरा से कहा 'जाओ झपटकर बनर्जी को बुला लाओ।'

कुछ मिनटों के बाद एक नौजवान उनके सामने आकर खड़ा हो गया। यह बनर्जी था। बादशाह ने उसे सामने फैले हुए कागजों के पास बैठने का इशारा किया, जिसका मतलब था कि इस वक्त काउण्टर का काम वह सम्हाले। उसके बाद वह उस काउण्टर के पास से थोड़ा खिसककर उमाकान्त की ओर झुका और उसकी बातें सुनने में दत्तचित्त हो गया।

खुद बादशाह का व्यक्तित्व इस ढाबे की तरह मटमैला और सस्ता नहीं था। वह निहायत साफ-सुथरा और चुस्त इन्सान था। उसकी उम्र पचपन साल के करीब होगी। रंग गोरा, कद नाटा, चेहरा बहुत खुश और दूसरों को बहुत जल्दी आत्मीयता के साथ अपनी ओर खींचनेवाला। इस समय वह सफेद मखमली पतलून और टेरीलीन की सफेद बुश्शर्ट पहने हुए था। मूँछें बड़े करीने और अतिरिक्त नुकीलेपन के साथ तराशी गयी थीं। उसे देखते ही लगता था कि वह मजाक के किसी भी इशारे पर खुले मन से हँस सकता है।

उमाकान्त ने अजीतसिंह की हत्या की सभी बातें बादशाह को धीरे-धीरे बता दीं। थोड़ी ही देर में यह तय हुआ कि बादशाह बड़े-बड़े जाल

लेकर इंसानियत के तालाव मे चार तरह की मछलिया के ऊपर फेंके और देखे कि उनमे सबसे दिलचस्प मछली कौन-सी है ! पर इसके पहले चारो तरह की मछलियो की लिस्ट बनायी गयी। पहली लिस्ट मे उनके नाम होते थे जो अजीतसिह की हत्या की रात उसी के वार्ड मे मरीज की हैसियत से पडे थे। दूसरी लिस्ट अस्पताल के स्टाफ मे उन लोगो की होनी थी जो अजीतसिह के वार्ड मे ड्यूटी पर थे या किसी दूसरी वजह से वार्ड के अन्दर गये थे। तीसरी सूची उन बाहरी लोगो की थी जो अजीतसिह का आपरेशन के बाद वार्ड के अन्दर देखने आये थे। चौथी सूची उनकी थी जो आपरेशन के वक्त या उसके बाद ऑपरेशन थियेटर और वार्ड के बाहर रहकर अजीतसिह के बारे मे पूछताछ करते रहे थे। उनमे भी उन पर विशेष ध्यान देना था जो ऑपरेशन के बाद वहाँ मौजूद थे।

उमाकान्त ने कहा, "चौथी लिस्ट की मछलियो को भी अच्छी इज्जत मिलनी चाहिए। मान लो, अजीतसिह का कोई दुश्मन है जो उसे दुनिया से हटाना चाहता है। उस पर गोली चलाने के बाद वह बहुत खुश होकर अस्पताल आया होगा। खुद न आया होगा तो उसका कोई आदमी आया होगा पर उसे यह खबर नही मिली होगी कि दुश्मन मारा गया। बल्कि आपरेशन के बाद सुना गया होगा कि दुश्मन मे जान बाकी है और उसके बच जाने की उम्मीद है। तभी उसे जहर देने की प्लान बनी होगी। सोचा होगा, गोली से नही तो जहर ही से सही। सवाल यह है कि ऑपरेशन के बाद वहा कौन कौन लोग थे जिन्हे यह मालूम हुआ कि अजीतसिह बच सकता है। उन्ही मे से किसी ने जहर देने मे या दिलाने मे, या जहर देनेवाले को खबर देने मे दिलचस्पी दिखायी होगी। यह जरूरी नही कि वह आदमी वार्ड मे गया ही हो पर पूरे नाटक मे उसकी हैसियत हीरो की नही तो हीरो से कुछ ही घटकर होगी।

"यह चौथी लिस्ट इसीलिए है। उसमे अजीतसिह का हत्यारा या उसका कोई न कोई एजेण्ट मौजूद हो सकता है। उमाकान्त ने अपनी बात पूरी की, "इन सभी सूचियो की छानबीन करने के बाद यह देखना होगा कि इनमे कोई दिलचस्प आदमी हो सकता है या नही ?'"

'दिलचस्प आदमी का मतलब बादशाह अच्छी तरह समझता था। जब किसी ऐसे आदमी का जिक्र आता जिसके बारे मे किसी जुर्म को लेकर छानबीन करने की जरूरत होती तो वह दोनो उसे दिलचस्प आदमी' कहते थे।

उस वक्त दाफ्तर का एक बज चुका था। उमाकान्त के जाते ही बादशाह ने बनर्जी को, जो इस समय काउण्टर का काम देख रहा था, बंगाली में कुछ हिदायतें देनी शुरू कीं। ऐसी बंगाली, बंगाल का पैदायशी बंगाली ही बोल सकता था। जाहिर था कि इसी के सहारे बादशाह ने कभी कलकतिया व्यापारी की भूमिका अदा की होगी। उसकी बात का कुल यही मतलब था कि नौजवान को होटल का इन्तजाम आज रात तक देखना पड़ेगा। होटल को बनर्जी के हवाले छोड़कर वह बाहर सड़क पर आ गया। उसके पास एक पचीस साल पुरानी ऑस्टिन थी, जिसके स्टार्ट होते ही एक्जास्ट पाइप से नीले धुएँ के घने बादल उड़ने लगते थे। उन बादलों को पीछे छोड़ता हुआ बादशाह सीधे अस्पताल पहुँचा।

दिन भर वह अस्पताल में और स्टाफ-क्वार्टरों के आस पास चक्कर काटता रहा। उसकी एक पुरानी दोस्त अस्पताल में मैट्रन थी। दोस्ती की बुनियाद में भी सिर्फ दोस्ती थी, कोई और बात नहीं। शाम को बादशाह ने उसे एक फैशनेबुल रेस्तराँ में ले जाकर आइसक्रीम खिलायी। फिर दोनों थोड़ी देर तक मौसम की, पुरानी फिल्मों की, मुहब्बत की तकलीफों और उसकी नियामतों की दंगा फसाद खून, जहर और नामाकूल आदमियों की बातें करते रहे। मैट्रन से फुरसत लेकर उसने दो कम्पाउण्डरों को एक बार में ले जाकर रम पिलायी। कुछ 'वार्ड-ब्वायों' पर उनकी याद के कोने उभारने के लिए पाँच रुपये वाले नोटों को नाव इस्तेमाल की। जूनियर डॉक्टरों से हँसी मजाक किया। दो चार जाने पहचाने मरीजों की हालत देखी। फिर इधर उधर भटकता हुआ, बहुत से लोगों के साथ हँसता और बहुतों को हँसाता आखिर में एक थका हुआ गम्भीर चेहरा लेकर लगभग ग्यारह बजे रात को वह उमाकान्त के घर पहुँचा।

नग्न बदन, सिर्फ एक पायजामा पहने हुए उमाकान्त ने दरवाजा खोला। बिना किसी प्रस्तावना के, बादशाह ने उससे कहा, उस्ताद, एक दिलचस्प आदमी का पता लगा है।'

उमाकान्त ने उसे अन्दर आने का इशारा किया पर वह दरवाजे पर ही खड़ा रहा और बोला, "रम बड़ी खराब चीज है, उस्ताद ! अगर अन्दर आकर बैठूँगा तो बैठते ही सो जाऊँगा।"

उमाकान्त ने कहा, "ठीक है यहीं खड़े खड़े अपने दिलचस्प आदमी' का हालचाल बताओ।"

'आदमी नहीं उस्ताद वह औरत है। उसका नाम मिस लायल है।"

"सिस्टर लायल ? जिसकी उस रात वार्ड में ड्यूटी थी ?"

'बिल्कुल वही उस्ताद !' बादशाह अपनी कार की ओर बढ़ने लगा। कहता रहा, 'दिलचस्पी की बात यह है कि मिस लायल को अफीम खाने का शौक है। अगर उसके घर की तलाशी ली जाय तो मुझे शुबहा है कि वहाँ अफीम बरामद होगी।"

इसके पहले कि उमाकान्त कुछ कह सके बादशाह ने अपनी पीठ घुमा ली। चलते चलते बोला, 'आज मैं बहुत थक गया हूँ उस्ताद, इसलिए जा रहा हूँ। कल सुबह हाजिर होऊँगा। मिस लायल के बारे में दिलचस्पी की अब जो दूसरी बातें पैदा होंगी, उन पर निगाह रखी जायगी।"

उमाकान्त ने यह सूचना चुपचाप पचा ली। इसे मालूम था कि मुर्गी सोने का अण्डा दे चुकी है, अब कुछ नहीं देगी। बादशाह को इस समय अगर उलटकर झोले की तरह झटका जाये, तो भी उससे कोई और चीज नहीं निकलेगी, उसके लिए दिन का काम खत्म हो गया है।

तब तक बादशाह अपनी कार के पास पहुँच गया था। दरवाजे से पुकारकर उमाकान्त ने कहा, 'शुक्रिया बादशाह !"

पर उसने सुना नहीं, क्योंकि तब तक उसकी आस्टिन शोर मचाकर स्टार्ट हो चुकी थी और सड़क पर नीले धुएँ में गायब होने लगी थी।

दस

दूसरे दिन उमाकान्त ने मिस लायल से मिलने की कोशिश की। पर उसकी सवेरे से ही अस्पताल में ड्यूटी लगी थी और शाम को छह बजे खत्म होनी थी। वह छह बजे के करीब अस्पताल पहुँचा पर पता लगा कि वह कुछ पहले ही वहाँ से जा चुकी है। उमाकान्त को मिस लायल के मकान का नम्बर मालूम हो गया था। वह किसी पुराने ताल्लुकेदार की कोठी के किनारे बने हुए कई एक सस्ते फ्लैटों में से था। मिस लायल का फ्लैट नीचे की ही मंजिल पर था। इसलिए उसे सामने कुछ सहन भी मिल गया था।

बाँस का छोटा फाटक एक किनारे हटाकर, नन्हे से बाग को पार करके उमाकान्त जैसे ही बरामदे में आया, उसे एक औरत की तेज चीख सुनायी दी। उसने आगे बढ़कर दरवाजा खोला। किवाड़ अन्दर से बन्द नहीं थे, दरवाजा खुल गया। इस मकान पर वह एक बड़े ही नाटकीय मौके पर पहुँचा था। एक साँवली औरत, उठंग और ऊलजलूल ढंग से साड़ी

पहने हुए, कमरे म एक किनारे खड़ी हुई एक फूलदान फेंकने जा रही थी। फूलदान उसके हाथ म था। कमरे के दूसरे किनारे पर एक आदमी आराम-कुर्सी पर बैठा हुआ, अपने को बचाने क लिए नीचे की ओर एक तरफ सिर झुका रहा था।

उमाकान्त ने बड़ी शिष्टता से, जसे वह किसी ड्राइंग रूम का, सहज और सभ्य जिन्दगी का दृश्य देख रहा हो, पूछा, 'क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

औरत फूलदान फेंकते फेंकते ठिठककर रुक गयी। पर पहले ही की तरह चीखकर बोली, "नहीं, यहा इस वक्त कोई नहीं आ सकता।'

पर तब तक उमाकान्त कमरे के अन्दर आकर खड़ा हो गया था। जेब मे सिगरेट निकालते हुए उसने बड़ी बेतकल्लुफी से पूछा, "यह क्या हो रहा है मिस लायल? इससे पब्लिक के आराम म क्या खलल नहीं पड़ेगा ?" दूसरा वाक्य उसने अंग्रेजी म कहा।

सावली औरत मिस लायल ही थी। वह पहले की तरह ही चीखकर बोली "आराम जाय जहन्नुम म।

उमाकान्त ने कहा 'गनीमत है मिस लायल तुमने पब्लिक को जहन्नुम म नहीं भेजा।

अचानक जसे पहली बार किसी अजनबी को अपने कमरे म देखा हो, मिस लायल न अधिकार के लहजे म पूछा "और तुम कौन हो ? यहा कैसे आये ? फौरन बाहर जाओ।"

उमाकान्त एक कुर्सी पर, पैर पर पैर चढ़ाकर, आराम से बठ गया। उसके सामने एक अस्तव्यस्त कमरा था, जिसम एक सस्ते ढग का बिस्तर लगा था एक कोने म चाय के कुछ बर्तन मेज पर रखे थे, कुछ सिनेमा की रग बिरगी पत्रिकाएँ फर्श पर लोट रही थीं, किसी ऐक्ट्रेस के जिस्म का रगीन उभार हवा के झोके मे फड़फड़ा रहा था पत्रिका का पन्ना फटने ही वाला था। तीन चार कुर्सियां इधर उधर बेतरतीबी से पड़ी थीं। उसने कहा, "घबराइए नहीं, मैं बता रहा हूँ कि मैं कौन हू। पर बातचीत करने के लिए इतना चीखने की जरूरत नहीं।

मिस लायल एकदम फौजी ढग से तनकर खड़ी हो गयी। उसने चिल्लाकर कहा "मैं क्या न चीखू ? यह मेरा घर है। जितना चाहूँगी चीखूंगी। तुम मुझे रोकनेवाले कौन होते हो ?'

उमाकान्त न कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप उसने सिगरेट का एक

कश खींचा।

इस बार वह तेजी से उमाकान्त की ओर बढ़ी और उसी तरह चिल्लाकर बोली "देखना, मैं अब चीखने जा रही हूँ। हिम्मत हो तो मुझे रोको।"

उमाकान्त ने जैसे यह सुना ही न हो। वह सिगरेट पीता रहा।

अचानक वह पीछे की ओर मुड़ी और चीखने के बजाय एक दरवाजे के अन्दर जाकर गायब हो गयी। उधर शायद बाथ रूम था। दरवाजे के दूसरी ओर चीजों के उठाने रखने की खटपट शुरू हो गयी। उमाकान्त ने अब अपने से डेढ़ गज की दूरी पर बैठे हुए आदमी की ओर देखा। अगर मिस लायल की उम्र पतीस साल के लगभग थी तो यह आदमी पैतालीस के करीब होगा। उसने बड़े दयनीय भाव से उमाकान्त की ओर देखा जैसे वह मिस लायल के व्यवहार की माफी माँग रहा हो। वह बोला, "मेम साहब को बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है।"

उमाकान्त ने इसे अनसुना कर दिया। कड़ाई से पूछा "तुम कौन हो?"

"मैं!" वह अचकचाकर बोला, "मैं खेती करता हूँ।"

"मुझे यहाँ कोई खेत तो नजर आता नहीं। उमाकान्त ने उसी तरह कड़ाई से कहा, 'या तुम्हारी खेती दरवाजे के उस तरफ होती है?" उसने बाथ रूम की ओर इशारा किया।

वह आदमी धोती और कुर्ता पहने था, होठों के कोनों से पान की पीक टपक रही थी। उमाकान्त ने फिर उसी तरह अकड़कर पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस आदमी ने इज्जतदार बनने की कोशिश करते हुए कहा, "मुझसे इस तरह मत बोलिए। मैं कोई ऐरा गैरा आदमी नहीं हूँ। यहाँ से चालीस मील आगे मेरा फार्म है। मैं वहाँ रहता हूँ। ट्रैक्टर से गिर जाने पर मेरा दाया पाँव टूट गया था।" उसने हाथ से अपना पैर उठाकर फैलाया। घुटने के नीचे वहाँ अब भी प्लास्टर बँधा था। वह कहता रहा, "अब तो जुड़ गया है, पर आराम के लिए इसे फिर से प्लास्टर में डाल दिया गया है। पन्द्रह दिन मैं यहीं अस्पताल में पड़ा रहा हूँ। कल मुझे यहाँ से छोड़ा गया है। पर अभी कुछ दिन मैं शहर ही में रहूँगा।"

उमाकान्त ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?'

"नाम जानना हो तो पहले अपना नाम बताइए साहब।" उस आदमी ने अब महन्त भाव से बात शुरू कर दी।

"मेरा नाम उमाकान्त है।" उमाकान्त ने कहा, "यहाँ अस्पताल में एक

घायल ग्रादमी को जहर देकर मार डाला गया है। मैं उसी मामले की जाच कर रहा हूँ।'

प्लास्टरवाले पाव के बावजूद वह ग्रादमी हडबडाकर कुर्सी से खडा हो गया। हाथ जोडकर बोला, "माफ कीजिएगा। मैंने ग्रापको पहचाना नही था। हम ग्रापकी पूरी पूरी मदद करेंगे।"

उसने ग्रपनी ग्रोर से फिर कहा, "मैं भी तो कल तक उसी वाड म था।"

"उसी वाड म, जिसम ग्रजीतसिंह भर्ती हुग्रा था ?"

"जी हा।"

उमाकात समझ गया कि उसे इस ग्रादमी ने पुलिस का ग्रादमी समझा है। उसने उसका भ्रम दूर करने की कोशिश नही की। उसने फिर पूछा, "ग्रब ग्रपना नाम बताग्रो।"

'मेरा नाम हरीसिंह है, साहब।"

"तुम यहा क्या कर रह हो ?'

'यहा ऐसे ही ग्राया था साहब।

'ऐस ही का क्या मतलब ?'

हरीसिंह जवाब दन से हिचका। उमाका त ने नर्मी से कहा, "बताग्रो न ठाकुर साहब, यहा क्या कर रहे हो ?"

वह ग्रादमी चुप रहा। कुछ सोचकर बोला, 'ग्रापस क्या छिपाना है सरकार ! हम लोग पुरान रईस हैं। जमाना खराब लगा है, इसलिए कुछ कहते सुनत नही बनता। पर कुछ रईस ग्रब भी बाकी है। मैं यहा ग्रस्पताल म पडा था। इन मेम साहब ने वहा हमारी बडी सवा की। तभी मेरी इनसे दास्ती हो गयी। मै ता यहा भी दोस्ती ही म ग्राया था। यह न जाने क्यो नाराज हान लगी।" फिर जसे उसने ग्रपने ग्रापको समझाते हुए कहा, "ग्रभी फिर दास्ती हो जायगी। मैं इनके स्वभाव का समझता हूँ।'

'इसका मतलब है दोस्ती गहरी हो गयी है।'

हरीसिंह के चेहरे स खुशी टपकने लगी। वह बोला, "मैं जब दोस्ती करता हूँ, तब गहरी ही करता हूँ।"

'क्या नही ! क्या नही !" उमाकान्त न कहा, यह तो ग्राप लोगो का पुश्तनी काम है।"

हरीसिंह न ग्रभिमान क साथ कहा, "नही साहब मैं यह सब नही करता। पुश्तनी काम तो रण्डियाँ रखन का था। मैं यह सब चक्कर नही पालता। फिर कुछ रुककर बोला, 'पर दोस्ती की बात ग्रौर है।'

उमाकान्त ने सिर हिलाया, जैसे उसने कोई बडी ऊँची बात सुनी हो। अचानक उसने पूछा "वार्ड मे तुम्हारा पलग अजीतसिह से कितनी दूर था ?"

"नजदीक ही था साहब ।' बात का रुख बदलने से हरीसिह कुछ लडखडाया, पर अपने को सँभालकर बोला, "जिस कोने मे अजीतसिह था उसी के सामने एक पलग हटकर मैं पडा था।'

सामने का दरवाजा खुला और मिस लायल कमरे के अन्दर आयी। उसके कपडे अब अस्तव्यस्त नही थे। चेहरे पर शान्ति थी और उसका रग वापस आ गया था। आखो मे एक अजब सा आकर्षण था। हरीसिह ने उसे मुग्ध भाव से देखा और किसी के बोलने के पहले ही कहा मेम साहब, ये पुलिस के बडे भारी अफसर हैं। इनके सामने तुम मुझे मारने जा रही थी मुझे कुछ हो जाता तो मुसीबत मे पड जाती कि नही ?"

और वह अपने ही मजाक पर हँसने लगा।

मिस लायल के स्वभाव का चिडचिडापन खत्म हो गया था। वह बडी शिष्टता से बोली "मुझे पता नही था कि आप पुलिस के आदमी हैं। माफी चाहती हूँ।"

उसने हरीसिह की ओर इशारा करके कहा "यह मेरा कजिन है।"

यह कहने की कोई जरूरत नही थी। फिर भी उमाकान्त ने इस सूचना को खुशी के साथ स्वीकार किया। वह मिस लायल को शुरू से ही देख रहा था। उसके चेहरे और भाव भगिमा मे एक अजीब सी शान्ति और सहजता आ गयी थी। उसने मिस लायल से कहा 'आपसे मैं सिर्फ दो तीन सवाल पूछने आया था। आप जल्दी से जवाब दे दें तो मैं जाऊँ। फिर आप अपने कजिन पर मनमाने फ्लावर वास तोडती रहें, मुझे कोई एतराज न होगा।

मिस लायल मीठे ढग से हँसी, पर इस हँसी मे धार न था, एक हल्की सी लहर भर थी। उमाकान्त ने कहा, 'पहला सवाल अफीम के बारे में है।'

मिस लायल चौंक पडी। वह कहता रहा आप चाहे तो मैं बाहर से सिपाहियो को बुला सकता हू। पर ज्यादा अच्छा होगा कि आप मुझे ही सारी बात बता दें। मैं जानना चाहता हूँ कि आपके घर मे इस वक्त कितनी अफीम मौजूद है ?"

हरीसिह घबराकर बोला, "अरे साहब यहा अफीम कहा।

पर मिस लायल ने कोई जवाब नही दिया। उमाकान्त ने

आदमी का

"अगर आप मुझे सही बात बता दें तो मैं वादा करता हूँ, अफीम रखने पर कम से कम मैं अपनी तरफ से आपका चालान नहीं करूँगा।"

मिस लायल इस बार कुर्सी पर और आराम से बैठ गयी। उसके चेहरे पर मुसकराहट सी खेलने लगी। उमाकांत कहता रहा, "मुझे मालूम है कि आपको अफीम खाने की आदत है और अभी अभी आप उसके लिए ही अन्दर गयी थी।"

मिस लायल ने इस बार जबान खोली। बड़ी शिष्टता से कहा, 'आपको गलत मालूम हुआ है। मैं अफीम खाती नहीं हूँ। आपको किसने बताया कि मैं अफीम खाती हूँ?"

उमाकान्त मिस लायल के चेहरे को देखता रहा, फिर उसने बड़े घरेलू ढंग से पूछा, "खाती नहीं है तो फिर किस तरह लेती हैं?'

मिस लायल बोली, 'मैं इस गन्दी, कूड़ अफीम से कोई सरोकार नहीं रखती। अस्पताल में तो कई लोग जानते हैं, आप भी जान लें तो कोई हर्ज नहीं है। मैं हैरोइन का इन्जेक्शन लिया करती हूँ। आप चाहें तो अन्दर आकर देख लें। इन्जेक्शन की दो तीन खुराकों के सिवाय मेरे घर में कहीं भी किसी तरह की अफीम नहीं मिलेगी।"

उमाकान्त उठकर सीधा खड़ा हो गया। उसने सामने का दरवाजा खोला। अन्दर बाथ रूम था। वहाँ एक गन्दी सी मेज पर एक हाइपोडर्मिक सुई और एकाध शीशियाँ रखी थी। वह अपनी कुर्सी पर वापस आकर बैठ गया।

मिस लायल ने अपनी एक बाँह बड़ी ही आकर्षक अदा से उठायी और बोली, "इसे भी देख लीजिए। इस पर सुइयों के निशान मिल जायेंगे। पर यह न भूलिएगा, आपने वादा किया है, कि आप मेरा चालान नहीं करेंगे।'

उमाकान्त बैठा हुआ कुछ सोचता रहा। मिस लायल ने ही अपनी ओर से बात उठायी, "मैंने आपको आज अस्पताल में देखा था। अगर आप अजीतसिंह के खून की जाँच कर रहे हैं तो मेरे यहाँ आपको कुछ नहीं मिलेगा। उसे अफीम का टिंक्चर पिलाया गया था। मैं तो बस भी मुसीबत में पड़ गयी हूँ। डिपार्टमेंट मुझे लापरवाही के चार्ज पर मुअत्तल करने जा रहा है। अब रही सही कमी पूरी करने के लिए आप मुझ पर अजीतसिंह का जहर देने का मुकदमा चला दें। बस, इतना ही रह गया है।"

उमाकान्त बड़े गौर से मिस लायल की बातें सुन रहा था। वह मुसकरा रही थी। उसने पूछा, "तो असली खूनी कौन है?'

"उन्ही म स कोई एक औरत । एक को तो आपन गिरफ्तार ही कर रखा है। दूसरी वही बुर्केवाली है।"

"बुर्केवाली कान ? क्या जरीना ?" उमाकान्त न पूछा।

'मैं उसका नाम नही जानती, पर वह अजीतसिंह को देखने आयी थी। नियम तो यही है कि वाड मे सुबह और शाम के ग्रलावा कोई मरीज से नही मिल सकता। पर खास खास मामले म हम कुछ ढील भी कर देते है। तभी य औरतें अजीतसिंह को देखने जा पायी थी।"

अचानक उसन मुह बनाकर कहा, 'कितना गन्दा आदमी था! औरतें! औरतें! बस उस औरतें ही घेरे हुई थी!"

उमाकान्त ने आखिरी बात पर ध्यान नही दिया। उसने कुछ याद सा किया और कहा, पर जरीना तो अजीतसिंह के पास, सुनते है, अकेली रही ही नही। वहा एक वाड ब्वाय भी मौजूद था।"

मिस लायल ने जार की जम्हाई ली और कहा, "पर वह बुर्केवाली जब दुबारा वाड क अन्दर गयी, तब "

अचानक हरीसिंह ने उसे टोकते हुए बीच ही मे कहा, 'क्या बक रही हो मेम साहब ? वह दुबारा अन्दर कब गयी ?'

मिस लायल ने हरीसिंह की ओर देखकर दायें बायें दो चार बार सिर हिलाया और कहा, 'आओ ठाकुर साहब, इन्ह अभी से सच बात बता दी जाय। नही तो डिपार्टमेण्ट की कारवाई के साथ, यह मुझे खून म भी फंसा देंगे।"

उमाकान्त का चेहरा गम्भीरता स खिच गया था। उसने पूछा, "यह बुर्केवाली लडकी वाड म दुबारा कब गयी थी ?"

वह लगभग साढे ग्यारह बजे वाड के बाहर आयी थी। उसके करीब दस मिनट बाद ही वह फिर वापस लौटी। मैं वाड के बाहर मेज के सहारे कुर्सी पर बैठी थी। मुझे कुछ झपकी सी आने लगी थी। वह मेरे पास आकर मुझसे फुसफुसाकर कहने लगी—भीतर मैं अपना पस भूल आयी हूँ। लेने जा रही हूँ। मैने ज्यादा गौर नही किया। मैने कहा—चली जाओ। उसके बाद मैं ऊँघ गयी। बाद म मुझे पता चला, उस वक्त वहा से वाड ब्वाय भी चला गया था।'

कहते कहते मिस लायल की आखें झपकने लगी।

हरीसिंह घबराया हुआ चेहरा लेकर पूरी बात सुनता रहा। मिस लायल की बात खत्म होते होते उसने जोर-जोर स कहा, 'मैंने देखा था।

वह बुर्केवाली दुबारा आयी थी। वाड म अजीतसिंह के बेड के पास वह पर्दा उठाकर गयी थी। मैंने अपनी आखा से देखा था। मैं हलफ लेकर बयान दन को तैयार हूँ। पर मेम साहब का कोई कसूर नही। मैं कहे देता हूँ इन्हे झूठमूठ फँसाने की कोशिश की गयी तो मैं सुप्रीम कोट तक लड़ूगा।"

उमाकान्त उठ खडा हुआ और बाला, "मैं समझता हूँ कि आप दोनो म से किसी न भी यह बात पहल किसी का नहीं बतायी है ?"

मिस लायल ने बीच ही मे आख खोलकर कहा, 'किसी ने पूछा ही नही।"

ठीक है। ठीक है। उमाकान्त ने उसे आश्वासन दिया, "और फिलहाल किसी दूसरे स बतान की जरूरत भी नहीं। पर याद रखें, आप दोना की अदालत मे गवाही हा सकती है। इसलिए पूरी घटना का अच्छी तरह याद रखें।'

उसन एक नोटबुक निकालकर हरीसिंह से उसके शहर का पता पूछा। फिर उस बुर्केवाली लडकी के दुबारा वाड मे आने के बारे म कुछ और सवाल करके वह बादशाह की खोज म डीलक्स होटल की ओर चल दिया।

ग्यारह

अभी सूरज नही निकला था। उमाकान्त गस के स्टोव पर चाय का पानी रखकर रसोईघर के पास एक खम्भे के सहारे टिककर खडा था और आगन की ओर देख रहा था। उसके हाथ मे सिगरेट थी पर चेहरे से लगता था, उस उसका अहसास नही है। पानी के खौलन की हल्की सी सनसनाहट उसके कान म पडी। वह रसोईघर की तरफ मुडा। तभी दरवाजे पर किसी ने घण्टी बजायी। उमाकान्त ने वहीं स पुकारकर कहा, 'अन्दर आ जाइए।" और केटली मे चाय डालन लगा।

अन्दर आनेवाला व्यक्ति हरिश्चन्द्र था। उसकी दाढ़ी दो-तीन दिन पुरानी मालूम दता थी, बाल रूखे थ। वह सामने के कमरे से अन्दर की तरफ नही आया, बल्कि कमरे ही म एक कोने म पड़े हुए सोफे पर बैठ गया। अन्दर गर्मी थी पर उसन पखा नहीं चलाया। उमाकान्त न उसे अन्दर बरामदे म खुलनेवाली खिडकी स झाँककर देखा। फिर ट्रे पर

चाय लेकर कमरे में आया। बड़े उत्साह के साथ, जैसे कहीं कोई भी गड़-बड़ी न हो, उसने ट्रे को मेज पर रखकर हरिश्चन्द्र के पास बैठते हुए कहा, "कहिए हरिश्चन्द्र साहब, क्या हाल हैं ?"

इसके बाद हरिश्चन्द्र के जवाब का इन्तजार किये बिना वह दो प्यालों में चाय डालने लगा। हरिश्चन्द्र ने भर्राई हुई आवाज में कहा "रूबी की जमानत नहीं हो सकी। कल शाम सेशन जज ने भी हमारी दरख्वास्त खारिज कर दी।'

उमाकान्त ने उसकी ओर चाय का प्याला बढ़ाते हुए कहा, "उसे फिलहाल भूल जाइए। लीजिए चाय पीजिए।" हरिश्चन्द्र ने प्याला हाथ में ले लिया, पर उसका हाथ काँप रहा था।

उमाकान्त ने चाय की पहली चुस्की ली, दूसरी सिगरेट जलाई और ऊपर की ओर धुआँ छोड़ते हुए इत्मीनान से कहा, "जमानत की दरख्वास्त तो खारिज होनी ही थी, उसमें परेशानी की बात नहीं। परेशानी की बात यह है कि आपने तीन दिन से शेव नहीं किया है और रूखे बालों और बिना पालिश के जूतों की नुमायश दिखाते हुए घूम रहे हैं।"

उसने मुसकराकर अपनी बात खत्म की, "आपको उसी पुराने ढंग से स्मार्ट दिखना चाहिए, नहीं तो जेल से बाहर आकर रूबी क्या कहेगी ?'

हरिश्चन्द्र के मुँह से एक ऐसी आवाज निकली जैसे वह अभी रो देगा। पर उसने अपने को संयत किया और चुपचाप चाय पीने लगा।

कुछ देर बाद हरिश्चन्द्र ने धीरे धीरे कहना शुरू किया, 'मुझे अफसोस है कि मैं इस हालत में आपके सामने बैठा हुआ हूँ। पर मैं क्या करूँ ? मुझे रात को नींद नहीं आ रही। मेरे और रूबी के खिलाफ कोर्ट में जो भी फैसला हो, इसकी मुझे उतनी चिन्ता नहीं है। पर मुझे दिन रात यही बात कचोटती रहती है कि मैंने रूबी के साथ बेइन्साफी की है। अजीतसिंह उसे दो साल से सता रहा था पर मैंने उसकी मुसीबत को नहीं समझा। मदद करने के बजाय मैं उसके चरित्र पर सन्देह करता रहा।'

उसकी आवाज तेज हो गयी। उसने उमाकान्त से पूछा, "आप ही बताइए, आप मेरी जगह होते तो क्या आपको पछतावा न होता ?"

'नहीं,' उमाकान्त ने शान्ति के साथ कहा, "मुझे पछतावा न होता। पछताने की मेरी आदत नहीं है। मैं आपकी जगह होता तो पीछे की सब बातें भूलकर कामकाजी ढंग से सिर्फ यह देखता कि अब क्या क्या करना चाहिए।'

हरिश्चन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी निगाह चाय के प्याले पर जमी रही। सहसा उमाकान्त ने सामने मैंटल पीस पर रखी घडी की ओर देखा। छह बज रहे थे। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "यहां बहुत सडी हुई गर्मी पडने लगी है। अगर आप खाली हों तो चलिए, हम लोग नैनीताल हो आयें।"

हरिश्चन्द्र ने चौंककर कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है? स्त्री को इस हालत में छोडकर हम लोग वहां कैसे जा सकते हैं? कम से कम मैं तो नहीं जा सकता।

उमाकान्त ने कहा, "अगर आपसे कहा जाये कि मेरे और आपके नैनीताल चलने से स्त्री का फायदा होगा तो उस हालत में भी क्या आपका यही जवाब होगा?'

हरिश्चन्द्र की आंखों में एक अजब सी चमक आ गयी "उस हालत में तो मैं दुनिया के आखिरी छोर तक चलने के लिए तैयार हूं।"

उमाकान्त ने घडी की ओर दुबारा देखा और कुर्सी पर फैलकर जम्हाई लेते हुए कहा, "तो चलिए। फिलहाल दुनिया के आखिरी छोर तक न सही हम लोग नैनीताल तक ही हो आयें।'

इसके बाद वह बडे कामकाजी ढंग से कहने लगा, "हमें सात बजे तक यहां से चल देना है। आप अपनी कार लेकर एक घण्टे में यहां आ जायें। और देखिए मेरे साथ चलने की शर्त यह है कि यह बढी हुई दाढी और रूखे बालोंवाला हुलिया बदलकर अपनी पहलीवाली सूरत में आयें। नहीं तो मुझे नैनीताल के लिए कोई दूसरा मोटरवाला साथी खोजना पडेगा।'

ठीक सात बजे हरिश्चन्द्र अपनी कार लेकर उसके दरवाजे पर आ गया। उमाकान्त ने अटैची कार की पिछली सीट पर फेंक दी और खुद हरिश्चन्द्र की बगल में बैठ गया। हरिश्चन्द्र ने पूछा, "आपका बिस्तर कहां है? उसे ले चलना जरूरी है। रात को काफी सर्दी होगी।"

उमाकान्त ने अन्दर बैठकर कार का दरवाजा बन्द किया और बोला, 'बिस्तर की जरूरत नहीं है, क्योंकि रात शायद हम वापस आकर लखनऊ ही में बितायें।'

सडक अच्छी और साफ सुथरी थी। मौसम, गर्मी के बावजूद भला था। उनकी कार आसानी से पचपन मील की घण्टे की रफ्तार से चिकनी सडक पर खिसक रही थी। एक बजे के लगभग वे नैनीताल पहुंच गये।

कार को नैनीताल झील के किनारे खडी करके वे लोग नैनीताल की

प्रमुख सड़क 'माल रोड' पर आ गये। हरिश्चन्द्र अब हल्की फुल्की बातें कर रहा था और लग रहा था कि पहले की अपेक्षा मन में वह ज्यादा स्वस्थ है। लगभग तीन फर्लांग बाद वे सड़क छोड़कर एक पगडण्डी से पहाड़ी पर चढ़ने लगे। कुछ ऊँचाई पर जाकर उमाकान्त खड़ा हो गया। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, 'यह तो आप समझ ही गये होंगे कि इस वक्त हम यहां सिर्फ आबो हवा बदलने के लिए नहीं आये हैं। हमें यहां कुछ काम भी करना होगा। अब बताइए, क्या आपने जरीना का नाम सुना है?"

हरिश्चन्द्र शायद कुछ इसी तरह की बात सुनने के लिए पहले से ही तैयार था। बोला 'जरीना का नाम अजीतसिंह की हत्या के सिलसिले में ही मेरे सुनने में आया है। वह अजीतसिंह के पड़ोस में रहती है। पुलिस-वालों से मुझे पता चला है कि वह खून की रात बारह बजे के पहले अजीतसिंह को देखने अस्पताल गयी थी।

करीब तीन सौ फुट की ऊंचाई पर एक मामूली से मकान की छत दिखायी दे रही है। सामने का हिस्सा पेड़ों के पीछे था। उसकी ओर इशारा करके उमाकान्त ने कहा, "इस वक्त कुमारी जरीना इसी मकान में हैं।' उमाकान्त ने जेब से एक कागज निकालकर उस पर बने हुए एक स्केच को ध्यान से देखा और अपनी बात दुहरायी, "ठीक, वह यहीं रहती है। अजीतसिंह की हत्या के दूसरे दिन ही रात की गाड़ी से वह यहां चली आयी है। उसके मामा यहीं के रहनेवाले हैं। हमलोगों को मिस जरीना से बात करनी होगी और चूंकि इस समय आप मेरे साथ हैं, इसलिए कुछ काम आपको भी करना होगा।"

"क्या?"

'कोई खास काम नहीं,' उमाकान्त ने कहा, 'सिर्फ यही कि आपको हम लोगों से कुछ दूरी पर खड़े रहना होगा। अगर जरूरत पड़ी तो मैं आपको बुला लूंगा।'

'किस तरह की जरूरत पड़ सकती है?"

'मुझे खुद नहीं मालूम। पर किसी अजनबी लड़की से बात करते समय अपने मुल्क में हर बात के लिए तैयार रहना चाहिए। फिर इस वक्त हम उसकी मदद की जरूरत है।"

हरिश्चन्द्र ने असमंजस में पड़कर पूछा, "पर मिस जरीना का व्यव-हार तो खुद सुबह से खाली नहीं है। अजीतसिंह की हत्या होने ही दूसरे

दिन वह नैनीताल भाग आयी। उसे इस जल्दी मे लखनऊ छोडने की क्या जरूरत थी? मुझे तो आश्चर्य है कि पुलिस ने इसकी ओर ध्यान क्यों नही दिया।"

उमाकान्त बोला, "पुलिस ने ध्यान दिया है। यह मालूम हो चुका है कि नैनीताल आने के लिए उसने बहुत पहले से रेल का रिजर्वेशन करा रखा था। इसलिए ऐसा नहीं है कि अजीतसिंह की हत्या के बाद उसने नैनीताल आने का अचानक ही फैसला किया। पर इसके बावजूद दो चार ऐसी बातें हैं जिनके बारे मे जरीना से बात करना जरूरी है।'

मकान के अगले हिस्से मे कोई दूसरा परिवार रहता था। जरीना के मामा पिछली ओर रहते थे। वहा उन लोगो को मालूम हुआ कि वह झील की ओर गयी है।

वे लोग पहाडी से नीचे उतरकर झील के किनारे आये। पर्यटकों की अच्छी-खासी भीड थी और उसमे जरीना का पता लगाना असम्भव-सा था। पर उन्हें बताया गया था कि वह नाव पर झील की सैर कर रही होगी। वे झील के उस किनारे पर जहा नावें आकर रुकती थी, एक बच के पास बैठ गये और नावों का आना जाना देखते रहे। एक नाव पर चार पाच मुसलमान लडकियाँ बुर्के मे बैठी थी। उन्होने नकाब उलट रखे थे और उनके गोरे चेहरे धूप मे चमक रहे थे। उमाकान्त ने उनकी ओर एक बार ध्यान से देखा और फिर उन्हें भुला दिया। जरीना के बारे मे वह पिछली रात ही बादशाह से काफी बातें जान चुका था। उसे बताया गया था कि वह साँवले रंग की लम्बे चेहरेवाली लडकी है। इस जानकारी के सहारे वह जरीना के आने का इतजार करता रहा। उसने तय कर लिया था कि यदि वह उस वक्त नहीं मिली तो अँधेरा होते होते उन्हें फिर उसके मकान पर जाना होगा।

पर इसकी जरूरत नही पडी। उसकी निगाह एक छरहरे जिस्म की आकर्षक युवती पर पडी जो नाव से नीचे उतर रही थी। उसका रंग साँवला और चेहरा लम्बा था। बडी बडी आँखें बरबस दूसरों की आखो को अपनी ओर खीचती थी। वह लडकी साडी पहने हुए थी और उसके हाथ मे कपडे का एक छोटा सा बण्डल था। उमाकान्त ने देखा कि वह कपडा काले रंग का है और उसे लगा कि वह एक बुर्का है।

लडकी की उम्र बाईस तईस साल की होगी। उसके साथ आठ दस साल की दो छोटी छोटी लडकियाँ थी। जरीना के मामा ने बताया था

कि वह उनकी बच्चियों को लेकर झील पर गयी है। उमाकांत ने समझ लिया कि यह लड़की जरीना ही है जो नैनीताल के उन्मुक्त वातावरण में बुर्के के बंधन के बाहर आ गयी है। वह बेंच पर बैठा हुआ जरीना के अपनी ओर आने का इंतजार करता रहा।

जरीना उसके पास से निकली और वह उसके पीछे पीछे चलने लगा। हरिश्चन्द्र भी उसके पीछे चलने लगा। कुछ दूर बाद वे सड़क के पास पहुँच गये। वहां पेड़ों के नीचे बेंच पड़ी हुई थी। जरीना के साथ की दोनों बच्चियाँ उछलकर एक बेंच पर बैठ गयी। जरीना उन्हीं के पास खड़ी होकर उनसे बात करने लगी।

तभी उमाकांत ने उसके सामने आकर कहा, 'मिस जरीना ? '

जरीना ने चौंककर उसकी ओर देखा। उमाकांत ने मुसकराकर उसे बेंच पर बैठने का इशारा किया। बोला, "मैं आपसे दो मिनट बात करना चाहूंगा।"

"आप कौन हैं ?" उसने कहा और कुछ पीछे हट आयी।

अपने आप उसकी निगाहें चारों ओर घूम गयी। सड़क पर बराबर लोग आ जा रहे थे। उसके पीछे झील में लोग नावों पर गा रहे थे, ट्रांजिस्टर से आनेवाले फिल्मी गीत सुन रहे थे, चीख रहे थे। उसे शायद इत्मीनान हो गया कि उसे किसी भी तरह का खतरा नहीं है। उसने उमाकांत को तीखेपन से देखा।

उमाकांत ने कहा, 'मैं अजीतसिंह का दोस्त हूँ और उसके हत्यारे से बदला लेना चाहता हूँ।"

जरीना ने कुछ दूरी पर खड़े हुए हरिश्चन्द्र की तरफ देखा। उसकी निगाह थोड़ी देर वहीं अटकी रही। फिर वह बेंच पर बैठ गयी और उमाकांत से धीरे से बोली, 'मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ ?"

उमाकांत ने कहा, मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने हैं। पहला सवाल यह है कि अजीतसिंह की हत्या की रात जब आप उसे वार्ड में देखने गयी थीं तब उसके पास आपके सिवाय कोई और मौजूद था या नहीं ?

जरीना की आंखों से चिनगारियां सी निकलने लगी। उसने कड़ी आवाज में कहा 'तो इसका मतलब यह है कि आप भी सी० आई० डी० इंस्पेक्टर हैं। पिछले दो तीन दिनों से आपके आदमियों ने आकर मुझसे न जाने कितनी बार यह सवाल पूछा है। आप लोगों का इत्मीनान क्यों नहीं होता ? अजीतसिंह को जब मैं देखने गयी थी तब एक वार्ड ब्वाय

दिन वह नैनीताल भाग ग्रायी। उसे इस जल्दी म लखनऊ छोडन की क्या जरूरत थी ? मुझे तो आश्चय है कि पुलिस ने इसकी ओर ध्यान क्या नही दिया !"

उमाकान्त बोला, "पुलिस ने ध्यान दिया है। यह मालूम हो चुका है कि ननीनाल आने के लिए उसने बहुत पहल स रेल का रिजर्वेशन करा रखा था। इसलिए ऐसा नही है कि अजीतसिंह की हत्या के बाद उसन नैनीताल आने का अचानक ही फसला किया। पर इसके बावजूद दो चार ऐसी बातें हैं जिनके बारे मे जरीना से बात करना जरूरी है।"

मकान के अगले हिस्से मे कोई दूसरा परिवार रहता था। जरीना के मामा पिछली ओर रहते थे। वहा उन लोगो को मालूम हुआ कि वह झील की आर गयी है।

वे लोग पहाडी से नीचे उतरकर झील के किनार आय। पयटको की अच्छी-खासी भीड थी और उसम जरीना का पता लगाना असम्भव सा था। पर उन्ह बताया गया था कि वह नाव पर झील की सर कर रही होगी। वे झील के उस किनारे पर जहा नावें आकर रुकती थी, एक बच के पास बठ गये और नावो का आना जाना देखते रहे। एक नाव पर चार पाच मुसलमान लडकिया बुर्के मे बैठी थी। उन्होने नकाब उलट रखे थे और उनके गोरे चेहरे धूप मे चमक रह थे। उमाकान्त ने उनकी ओर एक बार ध्यान से देखा और फिर उन्हें भुला दिया। जरीना के बार म वह पिछली रात ही बादशाह से काफी बातें जान चुका था। उस बताया गया था कि वह सावरे रग की लम्बे चेहरेवाली लडकी है। इस जानकारी के सहारे वह जरीना के आने का इतजार करता रहा। उसन तय कर लिया था कि यदि वह उस वहा नही मिली तो अँधेरा होत होते उन्हें फिर उसके मकान पर जाना होगा।

पर इसकी जरूरत नही पडी। उसकी निगाह एक छरहरे जिस्म की आकर्षक युवती पर पडी जो नाव से नीचे उतर रही थी। उसका रग साँवला और चेहरा लम्बा था। बडी बडी आखें बरबस दूसरी आँखो को अपनी ओर खीचती थी। वह लडकी मान्नी पहने हुए थी और उसके हाथ म कपडे का एक छोटा सा बण्डल था। उमाकान्त न देखा कि वह कपडा काले रग का है और उसे लगा कि वह एक बुर्का है।

लडकी की उम्र बाईस-तेईस साल की होगी। उसके साथ आठ - साल की दो छोटी छोटी लडकिया थी। जरीना के मामा ने

"जी हा।"

"लगभग तीन मिनट बाद आप वाड के बाहर गयी और दस मिनट बाहर रहकर फिर वाड के अन्दर आयी। यह भी सही है न ?"

जरीना न अपनी भौहें सिकोडकर कुछ सोचा। फिर एकदम से घबराकर बोली, "यह आप क्या कह रहे हैं ? लगता है, मुझे फँसाने की कोशिश की जा रही है। आपसे किसन कहा कि मैं वाड छोडा के दस मिनट बाद वापस आयी ?"

उमाकान्त न उसी तरह धीरे से कहा, "घबराइए नहीं। आपको कोई भी नही फँसा रहा है। सिफ मेरे सवालो का जवाब हा' या नहीं मे देती जाइए और सिर्फ इतना ध्यान रखिए कि कोई भी जवाब गलत न हो, क्योंकि हो सकता है यही सवाल सी० आई० डी० के आदमी भी आपसे करेंगे और उनके सामने अगर आपने इस तरह की घबराहट दिखायी तो उसका नतीजा बुरा हो सकता है।"

जरीना ने अनावश्यक रूप से जोर देकर कहा, "मै हलफ लेकर कह सकती हूँ कि वाड से बाहर आकर मैं फिर उधर नहीं गयी। बस सीधे अपने घर गयी थी।"

उमाकान्त थोडी देर चुप रहा। वह बराबर जरीना की ओर देख रहा था। कुछ देर बाद उसने फिर धीरे से पूछा, "जब आप वाड मे पहली बार गयी थी, तब एक सिस्टर वाड के बाहर बैठी हुई थी। आपने उसे देखा था ?"

"जी हा।"

"दुबारा वाड मे जाते हुए आपने उससे फुसफुसाकर कहा था कि आप अपना पस अजीतसिंह की बेड के पास भूल आयी है और उसे लेने जा रही हैं। यह सही है ?"

जरीना ने जोर से कुछ कहने के लिए मुह खोला, पर अपने होठ बन्द कर लिये। फिर सिर हिलाकर धीरे से कहा, "यह सरासर झूठ है। न मैं अपना पस वहा छोड आयी थी न मैं दुबारा वाड की ओर गयी न मैंने सिस्टर से ऐसी कोई बात कही। वार्ड से निकलकर मैं सीधे अपने घर गयी थी।"

उमाकान्त चुपचाप सुनता रहा। फिर बोला, 'सी० आई० डी० वाले आपसे कब मिले थे ?"

"एक आदमी तो परसों मिला था। यानी जिस दिन मैं यहाँ आयी,

वहा मौजूद था। मुश्किल से दस सेकिण्ड के लिए वह वहा से दरवाजे की ओर मुडा होगा। पर किसी वजह से फिर वापस लौट आया था। मैं उसके पास एक मिनट के लिए भी अकेली नही रही।'

इतना कहकर जरीना चुप हो गयी। फिर दाँतो से होठ काटकर बोली 'अब मैं आपके किसी भी सवाल का जवाब नही दूगी।' फिर अपने साथ की बच्चियो से उसने कहा, "चलो।" और वह उठ खडी हुई।

उमाकान्त ने कहा, 'मिस जरीना, आप गलत समझ रही हैं। मैं सी० आइ० डी० इस्पेक्टर नही हूँ। वह होता तो यहा, रास्ते मे, आपके हमदद की तरह बात न करता। तब मैं आपको थाने पर बुला सकता था और जरूरत पडती तो चौबीस घण्टे तक आपको हिरासत मे रखकर जितने चाहता उतने सवाल पूछ सकता था। मुझे पता नही कि सी० आई० डी० के व कौन से आदमी हैं जो आपसे बात करने के लिए आ चुके हैं। पर इतना यकीन मानिए कि मैं उनमे से होता तो न आप मुझे इस तरह का जवाब दे सकती थी और न मैं इस तरह का जवाब सुन सकता था।'

जरीना ठिठक गयी।

उमाकान्त ने अपनी आवाज म कुछ नाटकीयता भरकर जो उसकी समझ म नौजवान लडकियो पर असर डालने के लिए जरूरी थी, कहा "अजीतसिह आप लोगो का हितैषी था। आप उसे अपना भाई मानती थी। मैं भी उसका दोस्त हूँ। मैंने तय किया है कि पुलिस से अलग जाकर हमे अजीतसिह के हत्यारे का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मैं सिर्फ आपसे मिलने के लिए इतनी दूर आया हूँ। आपको हमारी मदद करनी ही चाहिए।"

जरीना ने एक बार फिर दूर खडे हुए हरिश्चन्द्र की ओर ध्यान से देखा। पर उसने अपना मुह झील की तरफ कर लिया था। जरीना ने धीरे से सास छोडी और कहा, 'आप और क्या जानना चाहते है?"

उमाकान्त ने उसे बेंच पर बैठने का दुबारा इशारा किया। वह बच्चियो के पास बेंच के दूसरे छोर पर बैठ गयी। बेंच के सिरे पर अपना एक पैर रखकर उमाकान्त, चारो ओर गौर से देखने के बाद बहुत धीरे से बोला, 'आप पौने बारह बजे के करीब अजीतसिह के वार्ड मे गयी थी। तब शायद उसे नीद आ गयी थी। आप वहाँ लगभग तीन मिनट रही। यह सही है न?

"लगभग तीन मिनट बाद आप वाड के बाहर गयी और दस मिनट बाहर रहकर फिर वाड के अन्दर आयी। यह भी सही है न ?"

जरीना न अपनी भौंहें सिकोडकर कुछ सोचा। फिर एकदम से घबराकर बोली, "यह आप क्या कह रह हैं ? लगता है, मुझे फँसान की कोशिश की जा रही है। आपसे किसने कहा कि मैं वाड छोडने के दस मिनट बाद वापस आयी ?"

उमाकान्त न उसी तरह धीरे से कहा, "घबराइए नही। आपको कोई भी नही फँसा रहा है। सिर्फ मेरे सवालो का जवाब हाँ या नहीं' मे देती जाइए और सिर्फ इतना ध्यान रखिए कि कोई भी जवाब गलत न हो, क्योंकि हो सकता है यही सवाल सी० आई० डी० के आदमी भी आपसे करेंगे और उनके सामने अगर आपने इस तरह की घबराहट दिखायी तो उसका नतीजा बुरा हो सकता है।"

जरीना ने अनावश्यक रूप से जोर देकर कहा, "मैं हलफ लेकर कह सकती हूँ कि वाड से बाहर आकर मैं फिर उधर नही गयी। बस सीधे अपने घर गयी थी।"

उमाकान्त थोडी देर चुप रहा। वह बराबर जरीना की ओर देख रहा था। कुछ देर बाद उसने फिर धीरे से पूछा, "जब आप वाड मे पहली बार गयी थी, तब एक सिस्टर वाड के बाहर बैठी हुई थी। आपने उसे देखा था ?"

'जी हाँ।"

'दुबारा वाड मे जाते हुए आपने उससे फुसफुसाकर कहा था कि आप अपना पर्स अजीतसिंह की बेड के पास भूल आयी है और उसे लेने जा रही हैं। यह सही है ?"

जरीना ने जोर से कुछ कहने के लिए मुह खोला, पर अपने होठ बन्द कर लिये। फिर सिर हिलाकर धीरे से कहा, 'यह सरासर झूठ है। न मैं अपना पर्स वहा छोड आयी थी न मैं दुबारा वाड की ओर गयी न मैंने सिस्टर से ऐसी कोई बात कही। वाड से निकलकर मैं सीधे अपने घर गयी थी।'

उमाकान्त चुपचाप सुनता रहा। फिर बोला, 'सी० आई० डी० वाले आपसे कब मिले थे ?"

"एक आदमी तो परसो मिला था। यानी जिस दिन मैं यहा आयी,

उसी दिन। और एक आदमी आज सवेरे आया था।"

"और उसने आपसे वाड में पस छूटने की बावत भी बात की थी?"

"नहीं।"

"और वाड मे दुबारा जाने के बारे में?"

नहीं।'

उमाकान्त फिर थोड़ी देर चुप रहा। आखिर में बोला, "मुझे यकीन है आपने मुझसे जो कहा है, सच ही कहा है। आप एक बार फिर सोच लीजिए। अगर आपने मुझसे झूठ बोला होगा, तो इत्मीनान रखिए, आप कल से ही ऐसी मुसीबत में फँसेंगी कि दुनिया की कोई भी ताकत आपको नहीं बचा पायेगी।

जरीना ने उसकी ओर सीधे देखते हुए कहा, मुझे 'धमकाइए नहीं, इसकी जरूरत नहीं है।" फिर कुछ हिचककर बोली आपने मुझे अपना नाम नहीं बताया।'

उसने कहा, "मैं उमाकान्त हूँ और "

'और' जरीना ने बड़ी सादगी से कहा, "आपके इन दोस्त का नाम, वहाँ जा उधर पेड़ के पास खड़े हैं, हरिश्चन्द्र है। इन्होंने ही शायद अजीतसिंह पर गोली चलायी थी, और शायद इन्हीं की बीवी मिसज रूबी ने अजीत सिंह को जहर दिया है और शायद इन्हीं दोनों की मदद के लिए आप नैनीताल तशरीफ लाये हैं और अजीतसिंह आपके कभी दोस्त नहीं थे, आपके असली दोस्त मि० हरिश्चन्द्र हैं।'

उमाकान्त का मजाक उड़ाते हुए उसने कहा, "क्या यह सही है?"

उमाकान्त ने पूरी बात चुपचाप सुन ली। फिर वह धीरे से मुसकराया और बोला, "आपकी पूरी बात लगभग सही है। बस, इतना गलत है कि अजीतसिंह को रूबी ने जहर दिया है। जो भी हो आपने मेरी मदद की है तो उसका अफसोस न कीजिए। यकीन रखिए इसी के सहारे सचाई का पता लगेगा। बहुत बहुत शुक्रिया।"

जरीना ने व्यंग से कहा, 'सचाई का पता पुलिस को लग चुका है, आप अपना वक्त क्या बरबाद कर रहे हैं। कुछ दिनों यहाँ नैनीताल में आराम कीजिए, तब तक पुलिस को रही सही सचाई का भी पता लग जायेगा।'

'जो भी हो, आपकी मदद का शुक्रिया।' कहकर वह बड़े प्रसन्न भाव से सड़क की ओर चल दिया। उसके पीछे हरिश्चन्द्र भी चला, पर

उसके चेहरे पर उलझन झलक रही थी। लगभग पचास गज चलते ही किसी ने उसका कंधा पीछे से छुआ। उसने देखा, सी० आई० डी० इंस्पेक्टर सिद्दीकी खड़ा हुआ है। वह बड़े उत्साह से बोला, "हलो सिद्दीकी।"

सिद्दीकी ने सिर हिलाते हुए, जैसे उसे कोई खेल दिखाया गया हो पर जमा न हो, कहा "इतनी मेहनत की जरूरत नहीं थी। आप मुझसे लखनऊ ही में पूछ लेते तो मालूम हो जाता कि जरीना का पीछा करना बेकार है।

"गर्मी में नैनीताल कौन नहीं आना चाहता? आप कहीं इस धोखे में तो नहीं हैं कि सीजन की यह सारी भीड़ जरीना के पीछे ही आयी हुई है?'

सिद्दीकी ने कहा "मुझे कोई धोखा नहीं है। पर आपका काम आसान कर दूं। जरीना पर शुबहा करना बेकार है। जिस रात अजीतसिंह पर आपके इन दोस्त ने गोली चलायी थी जरीना सिनेमा का पहला शो देखने गयी थी। वह पौने दस बजे अपने घर पहुँची और वहीं जनक्रांति प्रेस के सामने उसे मालूम हुआ कि अजीतसिंह पर गोली चलायी गयी है। वह अपनी एक सहेली के साथ सिनेमा देखने गयी थी, जो उसके पड़ोस में ही रहती है। उसे छोड़कर वह अपने पिता के साथ सीधे अस्पताल गयी। तब तक अजीतसिंह को होश नहीं आया था। वह वार्ड के बाहर उसके होश में आने का इंतजार करती रही। अजीतसिंह को मन्ना ग्यारह बजे होश आया और उसके लगभग आधा घण्टे बाद स्टाफ की इजाजत लेकर वह उसे देखने गयी। अस्पताल पहुँचने के पहले उसे किसी भी तरह यह खबर नहीं मिल सकती थी कि अजीतसिंह के बच जाने की आशा है। इसलिए उसे मारने के लिए जहर भी देना जरूरी होगा, यह बात वह पहले से किसी भी हालत में नहीं जान सकती थी। और यह भी तय है कि अस्पताल जाकर वह और उसके वालिद फिर कहीं गये नहीं। वे अजीतसिंह को देखकर ही वापस लौटे। इसलिए हमारी राय में यह असम्भव है कि जरीना अजीतसिंह को जहर देने का इन्तजाम करके उससे मिली होगी।'

उमाकान्त ने पूरी बात गौर से सुनी। उसने देखा कि सिद्दीकी को यह नहीं मालूम है कि जरीना दस मिनट बाद दुबारा भी वापस आ सकती थी। वह चुपचाप सिद्दीकी की बात सुनता रहा।

सिद्दीकी ने सिर हिलाते हुए अपनी बात पूरी की, "मिस्टर उमाकान्त,

यह सब मैं आपसे इसीलिए बता रहा हूँ कि आप अब इस मामले मे ज्यादा टाग न अड़ायें। रूबी को आप बचा नहीं पायेंगे और वह बच भी गयी तो इसका यही मतलब होगा कि एक खूनी कानून के चगुल से छूट गया है।"

उमाकान्त ने सिगरेट का पकेट निकालकर सिद्दीकी की ओर बढाया और मुसकराते हुए कहा, "इन सूचनाओ के लिए बहुत बहुत शुक्रिया। पर मेरे दिमाग मे इस वक्त अजीतसिंह का खून नहीं, नैनीताल का मौसम घूम रहा है। इजाजत हो तो मैं उधर फ्लैट की ओर हो लू ?'

दो कदम आगे बढकर वह घूम पडा और बोला, "मि० सिद्दीकी, आपके काम म मैं दखल नही द रहा हूँ, पर एक सुझाव देना चाहता हूँ कि जब तक आपकी जाच खत्म न हो जाय जरीना को हाथ स बाहर मत जाने दीजिएगा। उस पर निगाह रखना जरूरी है।"

"शुक्रिया पर घबराइए नहीं। खूबसूरत लडकियो को वैसे भी हाथ स बाहर नहीं जाने दिया जाता। आप जब चाहेंगे, उसे आपकी खिदमत म पेश कर दूगा।' यह बात सिद्दीकी ने उसका मजाक उडाते हुए कही थी, पर उमाकान्त को यकीन हो गया कि उसका सुझाव सिद्दीकी के तेज दिमाग मे बैठ गया है।

उसी शाम सात बजे के करीब वे नैनीताल से वापस चल दिये। उमाकान्त को यात्रा म विस्तार की जरूरत नहीं पडी।

बारह

बादशाह ने कहा, "उस्ताद मैं समझता हूँ अब सब सी० आई० डी० का बता दिया जाये। हमारी दौड धूप का अब कोई नतीजा नहीं निकलेगा।'

बादशाह के ढाबे से कुछ आगे एक साफ सुथरा रेस्तरां था। उसम कूलर लगे थ और अन्दर काफी ठण्डक थी। उसी के एक कोने म बैठे हुए दोनो ठण्डी कॉफी पी रहे थ। उमाकान्त ने भौंह उठाकर सवाल सा किया। पूछा, 'सी० आई० डी० को क्या बता दिया जाय ? हमारे पास बताने के लिए है ही क्या ?'

बादशाह ने कहा "उस्ताद, हमारी छानबीन से कुछ बातें बिल्कुल साफ हो जाती हैं। पुलिस ने रूबी को सन्देह के आधार पर गिरफ्तार किया है। अजीतसिंह जब हरिश्चन्द्र की *गोली से बच गया तब बहुत मुमकिन है* कि रूबी न उसे अपने निजी झगडे को लेकर मारना चाहा हो। अजीतसिंह

रूबी का जितना दुह सकता था उसने उतना दुहा था। मैं अगर रूबी की जगह होता तो एस मौके पर उसे छोडता ही नही। यानी रूबी के खिलाफ हत्या करने की वजह पूरी तौर से साबित है। पर सवाल यह है कि पुलिस के पास हत्या करन का कोई सबूत भी है या नही? सिवाय इसके कि वह अस्पताल म कुछ दर उसके पास अकेले म रही, रूबी के खिलाफ जहर देन का कोई भी सबूत नही। इस तरह के सबूत का कोई मतलब नही है, उस्ताद! कोई भी अच्छा वकील दो मिनट मे ऐसे सबूत के चिथडे उडा देगा। रूबी के खिलाफ दूसरा सबूत यह है कि उसके कमरे से कत्थई रग की वसी ही छोटी शीशिया बरामद हुई है जैसी कि अजीतसिह को जहर दत समय इस्तमाल हुई थी। यह सबूत भी कोई ऐसा सबूत नही है। हर भला आदमी आजकल अपने घर मे आठ दस दवाएँ रखना ही है। और उस्ताद अगर तुम्हारे ही घर की तलाशी ली जाय तो अजब नही कि दो चार उस तरह की शीशिया वहा भी निकल आयें। कम स कम मेरे घर म ऐसी आधा दजन शीशिया हागी।

"एक और बचकाना सबूत है गुलाब की कली का। पुलिस को वह अजीतसिह के घर से मिली है। वे समझते है कि रूबी गोली काण्ड के बाद उसके घर गयी थी और उसने वहा की तलाशी ली थी। पर पुलिस को यह भी मालूम है कि वह उसके पहले भी वहा गयी थी। इसी से इस सबूत की काई कीमत नही रहती। पुलिस न अभी रूबी का चालान नही किया है। इसकी यही वजह है कि वह अभी उसके खिलाफ किसी और वजनदार सबूत की खोज कर रही है।"

उमाका त बादशाह की बातें ध्यान से सुन रहा था। बाला, 'ठीक।'

बादशाह कहता रहा, "दूसरी ओर हमारे सामन दो और मुल्जिम मौजूद है—एक है मिस लायल और दूसरी मिस जरीना।"

उमाका त ने मुसकराकर कहा, "और एक तीसरा भी हो सकता है—हरीसिह।"

बादशाह ने गम्भीरता से कहा "जी हा जनाब। हरीसिह भी हा सकता ह। पर पहल इन देवियो को देख लिया जाय। रूबी के साथ हत्या करने का कारण मौजूद है। पर इनके साथ हम किसी एसे कारण का पता नही। पर रूबी के खिलाफ जहर दन का कोई अच्छा सबूत नही है जबकि इन दोनो के खिलाफ इसका बहुत अच्छा सबूत मौजूद है। पहल मिस लायल को लीजिए। वह वाड म दस बजे रात से छह बजे सुबह तक ड्यूटी

पर रही। अजीतसिंह के पास अकेले मे वह किसी भी वक्त पहुँच सकती थी। उसे अफीम खाने की आदत है और उसके घर पर अफीम जरूर रही होगी। वह भले ही इंजेक्शन लेकर नशा करती हो, पर अजीतसिंह के आसपास जितने आदमी थे, उनमे अकेली वही एक ऐसी है जिसके पास अफीम किसी न किसी शक्ल मे मौजूद थी।'

उमाकान्त ने उसे टोककर कहा, "पर केमिकल एक्जामिनर की रिपोर्ट से पता चलता है कि उसे अफीम टिंक्चर दी गयी थी। मिस लायल जैसी अफीम लेती है और जिस तरह से लेती है उसका इस हत्या से शायद ही कोई सम्बन्ध हो।"

बादशाह ने कहा "यहा तो हमे सी० आई० डी० की मदद की जरूरत है। वसे बहुत देर हो चुकी है और मिस लायल के यहा तलाशी लेने से कुछ भी हाथ नही लगेगा, पर इसमे हर्ज ही क्या है ? पुलिस को उसके घर की बाकायदा तलाशी लेनी चाहिए। जिसे सुई से अफीम लेने की आदत हो वह जरूरत पड़ने पर मुह से भी ले सकती है। हो सकता है कि मिस लायल के घर पर जहर पिलाने का कोई सबूत निकल आये। मिस लायल की अजीतसिंह से शायद कोई दुश्मनी नहीं थी। पर हो सकता है कि मौका देखकर किसी ने उसे अजीतसिंह को जहर देने के लिए इस्तेमाल किया हो। आप ही बता रहे थे कि मिस लायल और हरीसिंह ने पूरा ड्रामा खेलकर यह बताने की कोशिश की कि जरीना अजीतसिंह के पास दूसरी बार भी गयी थी और उस समय वहा कोई नही था। यह हो सकता है कि दोनो मिलकर पुलिस को जरीना के पीछे लगा देना चाहते हो और इस तरह मिस लायल साफ बच जाना चाहती हो।"

उमाकान्त ने कॉफी का गिलास खत्म करके दूर खिसका दिया और इत्मीनान से कहा, 'इसी के साथ हरीसिंह का भी स्पष्ट करते चलो।"

बादशाह ने कहा "हरीसिंह भी खूनी हो सकता है, उस्ताद ! वार्ड की लम्बाई म दोनो तरफ बीच म रास्ता छोडकर, मरीजो की चारपाइयाँ पडी थी। आप बताते हैं कि हरीसिंह की चारपाई अजीतसिंह के सामने एक चारपाई छोडकर थी। दोनो के बीच मुश्किल से तीन गज का फासला रहा होगा। मिस लायल और हरीसिंह की साँठ गाँठ है ही। हरीसिंह के बायें पर म प्लास्टर भले ही बँधा हो पर वह दूसरा प्लास्टर है और उसकी हड्डी काफी पहले जुड चुकी है। यह जाहिर है कि अब तक वह उस वार्ड के अन्दर सिर्फ मिस लायल के पास रहने के लालच से पड़ा हुआ था। वह

लँगडाता जरूर है, पर आसानी से चल सकता है। जिन वजहो से मिस लायल अजीतसिंह को जहर पिला सकती थी, उन्ही वजहो से मिस लायल की दोस्ती मे हरीसिंह भी वह काम कर सकता था। कम से कम इतना तो साबित है ही कि दोनो एक ही थैली के चट्टे बट्टे है।"

उमाकान्त ने कहा "और मिस जरीना ?"

बादशाह बोला, 'अगर मिस लायल या हरीसिंह खूनी नही है तो बहुत मुमकिन है कि जरीना ही ने यह खून किया हो। अगर वे दोनो निर्दोष है तो कोई वजह नही कि वे झूठ मूठ ऐसा बयान दें जो जरीना के बिल्कुल खिलाफ पडता हो। तब तो हम यही मानना होगा कि वाड से बाहर जाकर दस मिनट बाद जरीना फिर वापस आयी। मिस लायल उस वक्त नशे की झोक मे रही होगी। उससे उसने फुसफुसाकर अन्दर जाने की इजाजत मागी और फिर अजीतसिंह के पास जाकर उसे जहर पिला दिया। ये दोनो कहते ही है कि जब जरीना दुबारा अजीतसिंह के पास गयी तब वाड ब्वाय वहा मौजूद नही था। वाड ब्वाय से आज मेरे चेले ने बात भी की थी। वह कसम खाता है कि उसके सामने कोई भी बुर्केवाली औरत अजीतसिंह के पास दुबारा नही गयी, या एक के सिवाय कोई दूसरी औरत बुर्के मे उसे देखने के लिए नही गयी।"

बादशाह अपनी बात सुनाकर चुप हो गया। उन लोगो की मेज के पास एक कूलर चल रहा था। थोडी देर तक वे दोनो उसकी भनभनाहट मे खोये से बैठे रहे। उमाकान्त सिगरेट जलाकर चुपचाप कश खीचता रहा। बाद मे उसने धीरे से सिर हिलाया और कहा "नही बादशाह सी० आइ० डी० से अभी कुछ कहना बेकार है। उन्हे बीबी पर सन्देह है। सन्देह के जवाब मे हम उन्हे सन्देह भर दे सकेंगे, कोई सबूत नही। उन्होने मिस लायल और जरीना से कई बार बात की है। अगर उन्हे उनके बारे मे ये बातें नही मालूम हो पायी, जो हमे मालूम हैं तो उन्हे कुछ और बताने से कोई फायदा नही। उन्होने एक थ्योरी बना ली है और उसी पर चल रहे है। जितनी जानकारी हमारे पास है उसके सहारे उन्हे अपनी थ्योरी से हटाना मुश्किल होगा।

रही मिस लायल के घर की तलाशी की बात। वह बेकार है। कोई भी खूनी खून का सामान अपने छोटे-से मकान मे छिपाकर नही रखेगा, खास तौर से ऐसा सामान जो एक छोटी सी पुडिया या शीशी मे रह सकता हो और उसे बाहर हटा देने का उसको पूरा मौका मिल गया हो। फिर

मिस लायल ने मुझे अपने मकान की तलाशी लेने की खुली छूट दे दी थी। वह मुझे पुलिस का आदमी समझ रही थी। होशियार से होशियार खूनी भी इतना बडा ब्लफ खेलने की हिम्मत नही करगा। रही जरीना की बात। तो उसके खिलाफ भी कोई खास सबूत नही है। अगर मिस लायल एव हरीसिंह का कहना सही है तो उससे यही साबित होता है कि जरीना के जाने के दस मिनट बाद एक औरत बुर्के म आयी और अजीतसिंह को देखने गयी। उन दोनो मे से कोई भी यह नही कह सकता कि यह औरत जरीना ही थी। वह जरीना भी हो सकती है और कोइ दूसरी औरत भी।'

थोडी देर वे दोनो चुपचाप बठे रह। अचानक उमाकात न कहा, "बादशाह अपनी नोटबुक इधर तो बढाना। उन नामो को मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ।

बादशाह ने एक मोटी-सी नोटबुक उमाकात को दी। मेज पर रोशनी अच्छी नही थी पर उमाकान्त ने उसे वही उलटना पुलटना शुरू किया। उसने खून की रात अजीतसिंह के आसपास रहनेवालो की जो सूचिया बनवायी थी वे इस नोटबुक मे दर्ज थी। पहली सूची म उन मरीजो के नाम थे जो सर्जिकल वार्ड म उस रात मौजूद थ। ऐसे मरीज सख्या म ग्यारह थे। अजीतसिंह तो मर ही चुका था। उसके अलावा तब से अब तक केवल दो आदमी वार्ड से हटे थ। बाकी नौ मरीज अब भी वार्ड मे थे। बादशाह का एक साथी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे दो दिन पहले इन सबसे मिल आया था। उनम कोई भी ऐसी हालत म नही था जो अपनी चारपाई से उठ सकता हो। वार्ड से हटे हुए मरीजो म हरीसिंह को छोडकर दूसरे मरीज की भी छानबीन की जा चुकी थी। उसम कोई दिलचस्पीवाली बात नही थी।

दूसरी सूची अस्पताल के स्टाफ की थी। इस मामले को हाथ म लेने के दिन ही बादशाह न उन सबकी छानबीन कर ली थी। उनम मिस लायल को छोडकर कोई भी दिलचस्प आदमी नही था।

तीसरी सूची म, यानी उन लोगो म जिन्होने अजीतसिंह का वार्ड के अन्दर जाकर देखा केवल तीन आदमी थे—उसका नौकर महीपाल, रुबा और जरीना। सी० आई० डी० की ड्यूटी पर गुवाहा था और बाकी दो के बारे म उन्होने छानबीन करके इत्मीनान कर लिया था कि व निर्दोष हैं। महीपाल तो अपने मालिक के घायल होने की खबर पाते ही अस्पताल गया था और वहाँ वह दूसरे दिन तक बराबर मौजूद रहा था। उसके

के छल्ले आसमान की ओर उडाय और कूलर के भोंके म घुमा इधर-उधर बिखर गया। आगे सिकोडकर वह कुछ देर धुएँ के मिटत हुए जाला को देखता रहा। फिर बादशाह् स बाला, 'चलो बादशाह, यहा स चला जाय। अभी एक तमाशा दखना बाकी है।"

बिल चुकाकर व रेस्तरा स बाहर आय। उमाकान्त के पास अपना स्कूटर था। उसी पर दाना बैठकर शहर का भीडवाला रास्ता छोडत हुए उस सडक स निकल, जिस पर मिस लायल का मकान पडता था। मकान के अहात को एक किनारे छाडत हुए व दो-तीन फर्लांग आग निकल गय। एक पुरानी सी इमारत के सामन उन्होने अपना स्कूटर रोका।

इमारत पर धुधले हरे अक्षरा म लिखा था, 'पैराडाइज होटल एण्ड बार'। उसके नीचे हिन्दी उर्दू और अँग्रेजी तीना भाषाओ म लिखा गया था, यहा रहन और खान पीन का बढिया इन्तजाम है।' व दोनो इमारत के बरामदे से चलकर पिछवाडे की ओर गय। वहा बरामदा सँकरा हो गया था और सामन एक गली पडती थी। गली से हल्की-सी बदबू आ रही थी और स्पष्ट था कि यह दोना ओर म मकाना के पिछवाडेवाली गली है जिसम लोग ऊपर से कूडा फकन के आदी है। इस इमारत क पिछले बरामद स मिल हुए दो तीन छाट-छाट कमरे थ। लागा के रहन और खान पीन के बढिया इन्तजाम म इन कमरो का भी उपयोग होता था।

उमाकान्त न बरामदे मे जलत हुए बल्ब की धीमी रोशनी म एक कमरे के ऊपर लिखा हुआ नम्बर दखा और दरवाजे की ओर मुडा। बादशाह उसके पीछे था। दरवाजा आधा खुला था। अन्दर प्रवेश करत ही उसकी निगाह हरीसिह पर पडी। वह चारपाई पर नग बदन लेटा था। उसमे कुछ दूर एक माढे पर एक टबल फैन रखा था जिसके चलन स जार की आवाज हा रही थी। हरीसिह तकिय के सहारे लेटा हुआ था आर उसकी धोती घुटना के ऊपर तक उठी हुई थी। पहली निगाह म ही उमाकान्त न दख लिया कि उसके पर का प्लास्टर कट चुका था।

हरीसिह के सामने एक बिना पालिश की मज पर रम की बातल रखी थी जो लगभग आधी खाली हो चुकी थी। एक गन्दी सी प्लेट मे प्याज के कट हुए टुकडे पडे थे। वहीं एक पानी का लोटा और शीशे का गिलास रखा था। गिलास खाली था।

उन लोगा को देखत ही हरीसिह ने चारपाई से उठन की कोशिश

की। पर उमाकान्त ने कहा, "आप आराम से लेट रहिए। तकलीफ की कोई जरूरत नही।" और वह मेज के पास ही पडी हुई एक ऊँची कुर्सी पर बैठ गया। हरीसिंह ने भी दुबारा उठने की कोशिश नहीं की। विनम्रता से हँसकर बोला, "जी हाँ जी हाँ, यह तो घर का मामला है। आइए, इस्पेक्टर साहब।"

बादशाह अब तक हरीसिंह की ही चारपाई पर बैठ गया था। हरीसिंह ने कहा, "यह कौन बाबू साहब हैं ?'

उमाकान्त की नाक मे रम और प्याज की तेज बू बसती जा रही थी। वह ऐसी जगह बैठा था जहा टेबल फैन की हवा भी नही आ रही थी। बैठते ही उसके माथे पर पसीना छलक आया। हरीसिंह की आवाज और बोतल की हालत से उसने अन्दाज लगा लिया कि इस समय वह नशे मे है। उसने बडी प्रसन्न मुद्रा मे कहा, "यह बाबू साहब मेरे दोस्त है। आप भी इनसे दोस्ती कर लीजिए। यह पक्के चार सौ बीस हैं और हमेशा आपके काम आयेंगे।'

हरीसिंह ठठाकर हँसने लगा। हँसते हँसते बोला, "वाह इस्पेक्टर साहब!"

बादशाह ने भी हँसी मे उसका साथ दिया। अचानक हरीसिंह की हँसी रुक गयी। वह चारपाई पर सिमटकर दीवार के सहारे बैठ गया और बोला, "उधर अलमारी मे गिलास रखे है। आप लोग लें, तो मैं भी अपना गिलास भर लू।'

बादशाह ने हरीसिंह की चापलूसी करते हुए कहा "ठाकुर साहब के बडे ठाठ है।" उसने अलमारी से एक पीतल का गिलास निकाला। वास्तव मे वहा एक वही गिलास था फिर बोला, "यह हमारे उस्ताद तो पीने वाला मे है नही। सिर्फ सिगरेट से काम चला लेते हैं। आइए, मैं आपका साथ दू।' उसके बाद बादशाह ने अपने और हरीसिंह के गिलासो मे रम डालकर तैयार की। पहली चुस्की मे ही बादशाह को मालूम हो गया कि लोटे के पानी मे बर्फ नहीं थी।

हाथो मे गिलास पहुच जाने के बाद हरीसिंह का नशा कुछ कम हो गया था। उसने उमाकान्त से पूछा, "कहिए इस्पेक्टर साहब, इधर कैसे भूल पडे ?"

उमाकान्त ने उसे खुश करने के लिए, "रमते जोगी, बहते पानी, और जासूस के आने का कोई ठिकाना है ? इस नौकरी के पीछे न जाने कब

कहा पहुँच जाना पड जाये ।" फिर उसने बड़े स्नेह से कहा, "इस वक्त तो सिर्फ इधर से निकल रहा था । सोचा आपसे भी मिलता चलू ।'

हरीसिंह न रम का एक लम्बा घूट गले से नीचे उतारा । खुश होकर बोला, "क्यो नही, क्यो नही ! आप तो घर के आदमी हैं ।" अचानक उसने पूछा, "क्या हुआ, उस जहरवाले मामले मे मेरी गवाही कब करा रहे हैं ?"

"बस कुछ ही दिना की देर है । जाच खत्म होनेवाली है ।" फिर जसे उसे कोई भूली हुई बात याद आयी हो, बोला, "आपस भी एक छोटी-सी बात पूछनी है । बताइए, वह बुर्केवाली लडकी जब दुबारा वाड मे आयी तो उस वक्त आप जाग रह थे न ?"

हरीसिंह ने आखें फैलाकर कहा, "बिल्कुल ।"

ता बताइए, अजीतसिंह की बेड के पास जाकर वह फिर कहा गयी?'

हरीसिंह ने एक और घूट गले के नीचे उतारा और बडे घरेलू ढग से बोला, "आपस पूरी बात बता दू तो आप मारेंगे तो नही ?"

उमाकान्त हँसने लगा ।

हरीसिंह उसी तरह बोला, "डाटेंगे तो नही ?"

बादशाह ने कहा, आप तो ठाकुर साहब घर के आदमी हैं । हम लोगा से क्या छिपाना ?"

'ता सुनिए ! उसने आवाज धीमी करके, जैसे किसी बडे भेद की बात बतायी जा रही हो, कहा, 'मैं तो, आप जानते ही हैं, जरा रईस तबियत का आदमी हू । रोज शाम को थाडी सी पीनेवाली चीज होनी चाहिए । वहा अस्पताल मे पडे हुए इसी की तक्लीफ थी । पर बाद म मेम साहब ने मुश्किल आसान कर दी । उन्ही स मैं कभी-कभी दारू का पौआ मँगा लिया करता था । उस दिन भी एक पौआ मँगाकर मैं धीरे-धीरे पी गया था और अपने बिस्तर पर आराम कर रहा था । तभी वे अजीतसिंह को बेहोशी की हालत मे ले आये । उसे मेरे सामनवाले बिस्तर पर एक कोने म लिटा दिया गया और उसके चारा ओर पर्दे खीच दिये गय । उसके आसपास डाक्टर और अस्पतालवाले काफी देर तक मँडराते रहे । कुछ देर बाद, क्या बताऊ, औरतें आने लगी । अब आप तो जानते ही हैं इस्पेक्टर साहब, मैं रईस आदमी ! आराम से दारू पिये हुए अपने बिस्तर पर पडा था । औरतो को देखकर कहा माननेवाला ! तबियत मचल गयी । पहले तो वही औरत आयी जिसे अब पुलिस ने बन्द कर दिया है—रूबी । उसके भी हुस्न का कोई जवाब नही । उसके जाने के कुछ देर बाद

एक दूसरी औरत बुर्के म आयी। उसकी शक्ल मैं देख नही सका। मन मसोमकर रह गया।

'वह चली गयी। और थोडी देर बाद फिर लौटी। इस बार जब वह अजीतसिंह के बिस्तर के पास जा रही थी, मेरी निगाह उसके पैरा पर पडी। अब क्या बताऊँ इस्पेक्टर साहब, उन पावो की खूबसूरती भी गजब की थी। इतने गोर और चिकने पाव बडी बडी रानिया महारानिया के भी न होगे। मैं दखता ही रह गया। अजीतसिंह के बिस्तर के पास दा तीन मिनट रुककर वह बाहर आयी और बगल के दरवाजे स लेवटरी की ओर चली गयी। मैं बडे चक्कर मे पडा कि यह औरत रास्ता भूलकर उधर कैसे जा रही है। औरतो को उधर ता जाना नही चाहिए! पर वह लेवेटरी के अ दर चली गयी और उसने धीरे स दरवाजा ब द कर लिया। लगभग प द्रह मिनट तक मैं उसके बाहर निकलन का इन्तजार करता रहा। आपस क्या छिपाना? उसके गोरे गोरे पाव मेरे मन म घर कर गये थे। मैं यही साच रहा था कि जिसके पाव इस तरह के है, उसकी सूरत कसी होगी! आखिर मे मुझसे न रहा गया। अपनी चारपाई से उठकर लँगडाता हुआ मै भी लेवटरी की ओर गया। वहा जान म मुझे कोई डर नही था, क्योकि चार पाच दिनो से मैं बिस्तर स उठकर नित्य-कम के लिए वही जान लगा था। अन्दर पहुचते ही मैंन ध्यान लगाकर सुना। कही कोई आवाज नही हो रही थी। मैंन अन्दर स दरवाजा बन्द कर लिया और उसे खोजन लगा। मैं जानता था कि वह मर्दो की लेवेटरी मे गयी है तो चिल्लायेगी नहो, और चिल्लायगी भी ता मैं पहले ही से चिल्लाने लगूगा कि वह वहा कैस आयी है। पर यह सब बेकार था। मैंने उसे चारो ओर खोजा, पर वहा उसका कोई भी निशान बाकी नही था।

'बाद मे मैंने बाहर बरामद मे खुलनेवाला दरवाजा दखा। वह अन्दर से खुला हुआ था। तब मै समझ गया कि वह इसी रास्त स बाहर चली गयी है। इश्क के रास्ते म बडी बडी चोटें सही हैं। यह चोट सहना भी मेरे लिए कोई बडी बात नही थी। दरवाजा खालकर मैं फिर वार्ड क अन्दर आ गया और अपनी चारपाई पर पड रहा।'

कुछ रुककर हरीसिह न पूछा, 'बताइए इस्पक्टर साहब क्या यह सब भी गवाही मे कहना पडेगा?'

उमाका त ने सिगरेट जला ली थी और कुछ सोचने लगा था। जमीन पर निगाह लगाये हुए उसन पूछा, "उसके पाव बहुत गारे थे?"

"जी हा, वहुत गोरे थे।"

"तुम्हे अच्छी तरह याद है ?"

हरीसिह ने श्राशिकों की तरह लम्बी आह भरकर कहा, "जी हा, इस्पेक्टर साहब, अच्छी तरह याद है और उम्र भर याद रहेगा।"

उमाकान्त ने बान्शाह से कहा, "उठिए श्रीमान चार सौ बीस जी। अब ठाकुर साहब को आराम करने दीजिए।"

वह खुद भी उठ खडा हुआ। चलते चलते बोला "तुम्हारा सवाल सही है ठाकुर साहब। गवाही म तुम्हें यह भी बताना पडेगा।"

तेरह

वानपुर मे टरिलीन, नाइलान, घडी, सोने आदि का तस्कर व्यापार करनेवालो का एक अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह पकडा गया था। बम्बई के एक मशहूर साप्ताहिक पत्र ने, जो इस तरह की खबरो को चन्द्रमा तक अन्तरिक्ष-यान ले जाने के मुकाबले ज्यादा महत्त्व देता था, उमाकान्त को तार भेजा। प्रार्थना की थी कि वह इस मामले की 'स्टोरी' जल्दी से जल्दी भेजे। यह साप्ताहिक उमाकान्त को सबसे ज्यादा पसे देता था। फिर भी उमाकान्त उस स्टोरी के पीछे नही भागा। उसके पीछे उसने अपना एक सहायक पत्रकार लगा दिया। खुद एक जहरीले आदमी की तलाश मे खोया रहा।

तीन चार दिनो से यह मसला उसके दिमाग पर बुरी तरह हावी था। पिछली रात वह जब हरीसिह के होटल से लौटकर बिस्तर पर लेटा तो उसे नीद नही आयी। वह बराबर सोचता रहा। रात को पिछले पहर उसे झपकी आ गयी। जब नीद खुली तब सूरज निकल आया था। तयार होकर उसने अपना स्कूटर निकाला और रूबी के उस रिश्तेदार के घर पहुँचा जहा अजीतसिह की हत्या की रात रूबी रात भर रही थी। वहा उसे मालूम हुआ कि अजीतसिह पर गोली चलने के बाद जैसे ही पुलिस हरिश्चन्द्र का थाने पर और अजीतसिह को अस्पताल ले गयी रूबी ने अपने इस रिश्तेदार को फोन किया था। वह रूबी को डायमण्ड होटल से ले आया था। तब से वह अपनी गिरफ्तारी के वक्त तक, उसके या उसके परिवार के साथ रही। रूबी को वह अपनी कार पर ही अस्पताल लाया था। अस्पताल म रूबी काफी देर उसके साथ रुकी रही, बाद म अजीत सिह को देख लेने के बाद उसी के साथ उसके घर वापस गयी थी। उसी

रिश्तेदार के साथ वह हरिश्चन्द्र से मिलने पाने पर भी गयी थी।

वह गोरे पाँवावाली औरत, जिसे बुर्के में देखकर पुराने रहम हरीसिंह का मन मसोसने लगा था स्त्री क्या नहीं हो सकती—उमाकान्त सोचता रहा।

वहाँ से वह हरिश्चन्द्र के घर पहुँचा। वह दुकान पर जाने की तयारी मे था। उसने बताया कि अब स्त्री को जमानत पर छोडने की दरख्वास्त हाईकोट म दी जा रही है। उसने यह भी बताया कि सी० आई० डी० ने अपनी जाँच लगभग खत्म कर ली है। उन्हे कई मरीजो की गवाही मिल गयी है जिन्होने स्त्री को अजीतसिंह के बिस्तर के पास अकेले जाते हुए देखा था। उस वक्त वहाँ कोई वाड-ब्वाय भी नही था।

और वाड ब्वाय ? सी० आई० डी० वाड ब्वाय के खिलाफ कुछ क्या नही सोचती ? अचानक उमाकान्त ने हरिश्चन्द्र से कहा, "आपका फोन कहाँ है ?"

"उधर—गलरी म। क्या ?"

उसने 'क्या' का जवाब नही दिया। गलरी म जाकर बादशाह को फोन मिलाया और पूछा "बादशाह, तुमने उस वाड-ब्वाय का क्या नाम बताया था ? '

बादशाह ने जवाब दिया, "रामप्रकाश। सर्जिकल वाट मे उस रात वह ड्यूटी पर था।"

'उसके बारे म कुछ पता लगाया था ?"

'हाँ उस्ताद! वह बिहार का रहनेवाला है। कुछ [illegible] एक अस्पताल मे काम करता रहा था। अभी एक [illegible], इस अस्पताल मे बदलकर आया है। उसकी चाल ढाल पर [illegible] की निगाह लगी है। पर उसके खिलाफ कोई भी [illegible] नही आयी। वह शहर मे बहुत कम लोगो को जानता है। [illegible] अपने घर जाता है। उसके साथ सिर्फ [illegible] है। [illegible] वह पडोस म एक हनुमानजी के मन्दिर [illegible] है। [illegible] के वक्त घर वापस लौट जाता है। माँ [illegible] शायद किसी स कोई सरोकार नहीं है।'

'ओह!

"जो मसाला था उस पर तो तुमने पहने ही पानी फेंक दिया है।" कहकर उमाकान्त टेलीफोन रखने जा रहा था, पर कुछ सोचकर रुक गया। उसने कहा, "बादशाह, पांच छह बजे अपने होटल में ही रहना।"

गैलरी में हरिश्चन्द्र की ओर आते आते उसने कहा, "हम लोग क्या आज रूबी से नहीं मिल सकते ?"

हरिश्चन्द्र सोचता रहा, फिर बोला, "एक डिप्टी जेलर मेरा मुलाकाती है। अगर वह हुआ तो शायद आज ही मुलाकात हो जाय। नहीं तो तीन दिन तक इन्तजार करना पड़ेगा।"

"पर रूबी से मैं अकेले मिलना चाहता हूँ।"

हरिश्चन्द्र ने उदास होकर कहा, "ठीक है। चलिए, हम लोग पहले डिप्टी जेलर ही के पास चलें।

रूबी से मुलाकात करने में खास दिक्कत नहीं हुई। डिप्टी जेलर ने उसे अपने कमरे में ही बुला दिया और उमाकान्त से कहा, "मैं पाँच मिनट बाद आ रहा हूँ।'

बातचीत के लिए उसे सिर्फ पाँच मिनट मिले थे।

रूबी का चेहरा पहले से और भी ज्यादा पीला था। उसकी आवाज धीमी थी। साड़ी, लगता था कल से नहीं बदली गयी है और सोया भी उसी में गया है। उमाकान्त ने कहा, "अच्छा हुआ, हरिश्चन्द्र मेरे साथ नहीं आये। वे आपको इस हालत में देख लेते तो उन्हें शायद चार दिन तक नींद न आती।'

रूबी ने पहले ही की तरह धीरे से कहा, "आई एम सॉरी। पर ।" उमाकान्त की निगाह जमीन पर, और वास्तव में रूबी के पैरों पर थी। गोरे और चिकने पैर। हरीसिंह इन पैरों को देखकर क्या सोचेगा ? उमाकान्त ने मन ही मन अपने से सवाल किया। पर उसकी बात का सम्बन्ध पैरों से न था, उसने कहा, "मैं सिर्फ एक सवाल पूछने आया था। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम उस रात अजीतसिंह को अस्पताल में देखने क्या गयी थी ?"

वह सोचती रही। फिर धीरे से बोली, "क्या आप भी सोचने लगे हैं कि मैं उसे जहर देने गयी थी ?"

'मेरे सोचने या न सोचने का कोई मतलब नहीं। असलियत यह है कि सी० आई० डी० वाले यही सोच रहे हैं। तभी यह सवाल पैदा हुआ है। अजीतसिंह तुम्हारा दुश्मन था। तुम्हें उससे कोई हमदर्दी न थी, फिर भी

तुम उसे अस्पताल मे देखने गयी। क्यो ?"

"यह मेरी बेवकूफी थी।"

"पर, क्यो ?"

रूबी ने सिसकना शुरू कर दिया। उमाकान्त उसी तरह कहता रहा, "मेरे लिए यह जानना बहुत जरूरी है। तुम वहा गयी क्यो थी ?"

रूबी ने अपने का सयत किया और धीरे से बोली "इसका मेरे पास कोई भी जवाब नही है, सिवाय इसके कि मैं नही चाहती थी कि वह मेरे पति की गोली से मरे। मैं अपने पति की बचत के लिए चाहती थी कि चाह जैसे हो, अजीतसिंह को बच जाना चाहिए। इसीलिए मैं बराबर घर पर उसके बचने की प्राथना करती रही। अचानक मेरे मन मे आया, मैं अगर उसके पास जाकर, उसकी हालत देखकर ईश्वर से उसके लिए माफी मागू और वहा उसके लिए प्राथना करूँ, तो शायद वह ज्यादा कारगर होगी।' उसने फिर सिसकना शुरू कर दिया। बोली, "उमाकान्त जी, यकीन मानिए, मैं वहा उसकी जीवन रक्षा की प्राथना करने गयी थी, उसे जहर देने नही।'

उमाकान्त की निगाह उसके पैरो से हटकर सामने एक अलमारी पर टिक गयी थी। रूबी के चुप हो जाने पर भी वह उसी तरह बैठा रहा। थोडी देर बाद वह एक सास खीचकर उठा और धीरे-धीरे रूबी का कधा थपथपाकर कमरे से बाहर चला आया।

चौदह

शाम को छह बजे वह बादशाह का साथ लेकर जनक्रान्ति प्रेस गया। वहा पडोस मे पता चला, ऊपर के मकान मे अजीतसिंह की जगह उसकी चचेरी बहन रत्ना अपने पति के साथ आकर कुछ दिनो के लिए टिक गयी है। इस समय वहाँ उनका ताला लगा हुआ था। वे दोनो कही बाहर गये थे। नीचे काम खत्म करके बुड्ढा कम्पोजीटर प्रेस बन्द करने जा रहा था। वह बाहर से दरवाजा बन्द कर रहा था कि वे दोनो तेजी से उसकी ओर बढे और दरवाजे को धक्का देकर अन्दर घुस गये। कम्पोजीटर की कलाई पकडकर बादशाह ने उसे अपनी ओर खीच लिया और कहा, 'अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर लो। आँधी बडे जोरो पर है।'

प्रेस तक पहुँचते पहुँचते बडी जोरो की आधी आ गयी थी।

हवा के पहले दो झोंको मे ही कम्पोजीटर के मुह मे गद भर गयी थी। तेजी से अन्दर आकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया। प्रेस के बडे हॉल म अँधेरा छा गया। कम्पोजीटर ने होठो-ही-होठो अपने आपसे कुछ कहा और टटोलकर बिजली का स्विच दबाया। हॉल मे एक तेज बल्ब की नगी रोशनी फैल गयी।

बाहर आँधी के उठने का शोर हो रहा था। बादशाह एक बडी-सी मशीन की बगल मे खडा था। उमाकान्त दरवाजे के पास ही पडे हुए एक मोढे पर बठ गया। कम्पोजीटर दूसरी ओर एक मेज से टिककर खडा हो गया। उसने शिष्टता से कहा, 'आप लोग बडे मौके मे इधर भाग आये। बाहर बडा अन्धड चल रहा है।"

बादशाह न अपनी जगह पर खडे-खडे जवाब दिया, 'किस्मत की बात है।"

उमाकान्त ने सिगरेट का पकेट निकाला। कम्पोजीटर की ओर बढाते हुए कहा 'पियेंगे?"

उसन एक सिगरेट ले ली। बोला, 'अपनी सिगरेटवाली हसियत नहीं है। बीडी पीता हूँ। पर आप दे रहे हैं तो '

उमाकान्त उठकर कम्पोजीटर के पास आया। दियासलाई जलाकर उसकी सिगरेट सुलगायी, फिर उसी से अपनी सिगरेट भी जलाकर वह फिर मोढे पर वापस आ गया और आपसी बातचीत के लहजे मे पूछा, "अब प्रेस कैसा चल रहा ह?"

कम्पोजीटर ने बुड्ढो की तरह रुक रुककर कहना शुरू किया, "अब बडी मुश्किल है, साहब। अखबार तो मालिक के न रहने स बन्द ही हो गया। अब नय मालिक क्या करेंगे, कुछ कहा नही जा सकता। दूसरा काम भी कोई ज्यादा नही है। आजकल शादी-ब्याह हो रह हैं। वही दो-चार निमन्त्रण पत्र छापने का काम आ जाता है।"

उमाकान्त ने फिर उसी तरह पूछा, 'आपके मालिक तो ऊपर ही रहते थे?

"जी हा,' उसने शिकायत की आवाज मे कहा "उसम तो अब नये मालिक आ गय हैं।'

अजीत सिंह जी का सारा माल असबाब ता ऊपर ही होगा?"

जसे इसस बढकर बेवकूफी का कोई दूसरा सवाल न हो सकता हो। कम्पोजीटर हँसने लगा। बोला, "और कहाँ होगा? सडक पर?"

"क्यो ? यहा प्रेस म नही हो सकता ?"

कम्पोजीटर की हँसी थम गयी। उसने सन्देह के साथ पूछा, "आप ? आप कौन हैं ?"

उमाकान्त वतकरलुफी स सिगरेट पीता रहा। बोला, 'मेरा नाम उमाकान्त है। म भी एक पत्रकार हू। अजीतसिंह जी मेरे दास्त थे।"

बादशाह अपनी जगह स टहलता हुआ कमरे के दूसरी ओर अँधेरे मे चला गया था। कम्पाजीटर ने ऊँची आवाज मे, जो उसकी उम्र के बावजूद काफी कडकदार थी, कहा, "ऐ, उधर कहा जा रहे हो ? इस तरफ आओ।"

बादशाह न वहीं से कहा, 'घबरान की जरूरत नही। मैं कुछ छू नही रहा हूँ।'

वह एक ऐसी जगह खडा था जहा पुरानी डेस्कें कमरे की पूरी चौडाई मे लगी हुई थी। उनमे सैकडो खाने बने थे और उनके अन्दर विभिन्न अक्षरो के टाइप रखे थे। मशीन के तल की गन्ध आसपास फैल रही थी। कम्पोजीटर न दरवाजा खोल दिया। खोलते ही आधी और धूल का एक बगूला कमरे के अन्दर भर गया। खासते-खासत बोला 'आप लोगो को ठीक से एक जगह न बैठना हा तो बाहर चले जाइए।"

उमाकान्त ने तेजी से बढकर दरवाजा बन्द कर दिया, फिर बडी मुलायमियत से बोला, "नाराज न होओ भाई, मैं पूरी बात बताये देता हूँ। अजीतसिंह जी मरे दास्त रहे हैं। उन्हाने मुझस दा लख लिये थे। उन्हे वे 'जनक्रान्ति' म छापना चाहते थ। पर इसके पहले ही उनका देहान्त हो गया। अब तुम ता सब समझते ही हो। इतन बडे प्रेस के कम्पोजीटर हो। कम्पोजीटर क्या किसी पत्रकार स कम होता है ? तुम्हे तो मालम ही है कि पत्रकारा की क्या हालत है। मेरे उन दो लेखो से मुझे कही भी सौ दा सौ रुपय मिल जाते। पर अजीतसिंह जी उन्हे छाप नही पाय और मैं उनसे उन्हे वापस भी नही ले सका।"

बादशाह टहलता टहलता उनके पास आ गया था। उमाकान्त ने एक काड निकालकर कम्पाजीटर को दिया और कहा "लो भाई, इसे पढकर देख लो। यह मेरे नाम का काड है। इसम मेरा पेशा और पता, टेलीफोन नम्बर, सब कुछ लिखा है। अब बोलो बिगड क्या रहे हो ?'

कम्पाजीटर ने रोशनी के पास ले जाकर, आँखें सिकोडते हुए, उमाकान्त का काड पढा। वही से बोला, 'बिगड कौन रहा है ? पर

आपने पहले ही क्या नही बताया ?"

"पहले ही तो बता रहा हूँ।" उसके ठण्डे स्वर का फायदा उठाते हुए उमाकान्त ने कहा, "मेरा तो कुल इतना मतलब है कि अगर अजीतसिंह जी के कोई कागज पत्तर, उनका कोई भी सामान यहा पर हो तो मैं एक निगाह उसे देख लेना चाहता हूँ। शायद मेरे लेख उन्ही मे मिल जाते।"

कम्पोजीटर ने लापरवाही से कहा, 'यहा पर तो कुछ है नही। पर आप जहा चाहे देख लें।"

बादशाह ने उमाकान्त को एक इशारा दिया। उमाकान्त बादशाह को वही रुकने का सकेत देकर हाल के दूसरे छोर पर, जहा डेस्को मे अक्षरो के टाइप रखे थे चला गया। कम्पोजीटर बल्ब के पास खडा हुआ उमाकान्त के कार्ड को उलट-पुलटकर देखता रहा।

सहसा उमाकान्त ने वही से पुकारकर कहा, 'कम्पोजीटर साहब, यहा एक काला बक्स रखा है, उठा लाऊँ ?"

कम्पोजीटर ने अनिश्चय से कहा, "बार बार क्यो पूछते हैं ? देखना हो तो देख लीजिए।'

उमाकान्त एक बक्स उठाकर रोशनी के दायरे मे ले आया। फर्श पर रखकर उसने बक्स को ध्यान से देखा। उस पर धूल की काफी मोटी पर्त जम गयी थी। बक्स लगभग डेढ फुट लम्बा और दस इंच चौडा था। उसमे एक छोटा सा ताला लगा था। बादशाह आसपास की मशीनो पर निगाह डालता रहा। अचानक उसने आगे बढकर एक पेंचकस उठा लिया और पजो के बल बैठकर ताले मे उसकी नोक डालने की कोशिश की।

कम्पोजीटर भी उसके पास आ गया था। फिर पहले जैसी बिगडैल आवाज मे बोला "आप लोग ताला तोड रहे हैं।"

उमाकान्त ने कहा 'आपके पास चाभी हो तो उसकी जरूरत न होगी।

वह बोला, चाभी यहा कहा ?"

उमाकान्त ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और कहा, 'तब तो यह ताला खराब ही करना पडेगा। पर परेशान होने की बात नही। ताले की कीमत मैं दे दूगा। और जो कुछ देखूगा आपके सामने ही देखूगा।

यह बात खत्म होने के पहले ही बादशाह ने सन्दूक का ताला खोल दिया। ढक्कन ऊपर उठाकर उमाकान्त ने देखा, उसमे कुछ चिट्ठिया कुछ रजिस्टर और कुछ खुले हुए कागज भरे हैं। उसने सिर हिलाकर

एक बडा ही हल्का इशारा किया। बादशाह उठकर कमरे के दूसरे छोर म चला गया। उमाकान्त ने सन्दूक के सामान को उलट-पुलटकर ध्यान से देखना शुरू किया। कम्पोजीटर उसी के पास पजो के बल बैठ गया। थोडी देर मे बादशाह भी उनके पास वापस लौट आया।

सन्दूक को अच्छी तरह देख चुकने और कागजो को सरसरी तौर स पढ लेने पर उमाकान्त ने निराशापूवक सिर हिलाया और कहा, "नही, इसम मेरे लेख नही हैं।'

फिर एक मोटे रजिस्टर को उठाकर वह उसके पन्ने उलटने लगा और कम्पोजीटर म कहता रहा, "दोनो लेख लगभग दस दस, ग्यारह-ग्यारह पन्ने के हाग। फुलस्केप म है। कागज के एक तरफ उन्हे टाइप किया गया है। मेरा नाम, यानी उमाकान्त, लेख के आखिरी पन्न पर टाइप होगा। अगर आपको कही मिल जाये तो मुझे जरूर खबर कर दीजि-एगा। तकलीफ तो होगी ।

अचानक वह रुक गया। जिस रजिस्टर के वह पन्न उलट रहा था उसके अन्दर, हर दो तीन पन्ने के बाद कुछ खुली चिटठिया और फोटो रखे थे। चिटठिया सिफ दो थी। उन्ह जल्दी से देखकर उमाकान्त ने फोटो देखने शुरू किये। कुल सात तस्वीरें थी।

उनमे से छह तस्वीरें लडकियो की थी। पाच मे अलग अलग पाच लडकिया के फोटो थे। उनके जिस्म पर कम से कम कपडे थे और जाहिर था कि वे फोटो जान बूझकर गोपनीय ढग स रखे गये हैं। छठा फोटो भी एक लडकी का था। वह नाच की वेशभूषा मे खडी थी और राजस्थानी ढग का लहँगा और ओढनी पहन थी। हाथ, पाव और मत्थे पर पारम्प-रिक ढग के गहने थे। देखने मे लडकी बहुत ही भोली और सुन्दर थी।

उमाकान्त की नजर थोडी देर इस फोटो पर टिकी रही। उसके बाद उसने सातवें फोटो का ध्यान से देखा। इस फोटो मे भी वही लडकी थी और वह वसे ही कपडे पहने थी। उसके अलावा उस फाटो म तीन आदमी भी थे। दो के हाथ मे गिलास थे।

उन तीन आदमियो मे एक तो कुरता धोती मे था, उसकी मूछ छोटी-छोटी थी। आख पर काला चश्मा था। उसके हाथ म एक गिलास था। बाकी दो म से एक पतलून कमीज मे था, उसके बाल कायद स सँवारे हुए थे। चेहरे पर बडे करीन की फ्रेंचकट दाढी थी। उसके हाथ म गिलास नही था। तीसरा आदमी मोटा और भद्दे बदन का था। उसकी दाढी मूछ

साफ थी। उसके हाथ मे गिलास था। तसवीर मे लडकी और तीनो आदमी बडे खुश नजर आते थे। उमाकान्त न कम्पोजीटर की ओर से मुह फिराकर बादशाह से कहा, "बादशाह, इन तसवीरो को दखा इसमे तो तुम्हारी मालती नजर आती है।" उसने आख के कोने से बादशाह को एक इशारा भी किया। साथ ही उसने महसूस किया कि उसके दिल की धडकन बढ गयी है। बादशाह ने आगे बढकर उन तसवीरा को हाथ मे ले लिया। उन्हे वह थोडी देर गौर से देखता रहा। फिर खिलकर बोला, "अरे वाह यह मालती बहन की तसवीर यहा कैसे आ गयी।"

कम्पोजीटर भी उत्सुकता से आगे बढ आया। बोला, "कौन मालती बहन ?'

मेरी ममेरी बहन है।" बादशाह ने कहा, "ताज्जुब है, य फाटो अजीत भाई के पास कैस आ गये।"

ऐसा लगा जैस मन ही मन वह कोई फैसला कर रहा हो। सहसा उसने कम्पोजीटर स कहा "देखो भाई, मैं ये दोना तसवीरें ले जाऊगा। चाहो तो इनकी कीमत ले लो, और चाहो तो मैं रसीद लिख दू।

कम्पोजीटर ने कहा, "अब तो ये सब चीजें बिलकुल बकार ही हो गयी हैं। आप ले जाना चाह तो तसवीरें ले जायें।' फिर कुछ सोचकर जसे कोई ऐतराज करना लाजमी हो, वह बोला "पर आपको रसीद लिखनी होगी। क्या पता, कब जरूरत पड जाये।"

उमाकान्त ने इस तरह सिर हिलाया, जसे वह कम्पोजीटर की दिक्कत अच्छी तरह समझता है।

बाहर आधी का शोर कम हो गया था। उमाकान्त न दरवाजे की ओर देखकर कहा, "आप चाहे तो दरवाजा खोल लें। रसीद मै लिख दूगा। मेरे साथी गवाही का दस्तखत कर देंगे।"

कम्पोजीटर ने इत्मीनान स कहा, 'उसकी जरूरत नही है।'

एक कागज लेकर उमाकान्त ने उस पर लिखा कि स्वर्गीय अजीतसिंह का एक काला सन्दूक आज शाम को साढे छह बजे मैंने श्री दुलीचन्द उर्फ बादशाह और श्री रामाधार कम्पोजीटर के सामने खोला। सन्दूक मे और चीजो के साथ दो तसवीरें भी थी। उन्हे मैंने अपने कब्जे मे ले लिया है। सन्दूक मे एक नया ताला डालकर उसकी चाभी श्री रामाधार को दे दी है।

रसीद पर उमाकान्त ने तसवीरो का विवरण भी दे दिया। फोटो न०

एक, राजस्थानी लहँगे और ओढनी मे एक नर्तकी, साइज ३" × २"। फोटो न० दो, वही नर्तकी और तीन दशक, साइज ३" × २"।

बादशाह ने पडोस की दुकान से एक नया ताला लेकर उसे सन्दूक मे लगा दिया और चाभी रामाधार को दे दी। कम्पोजीटर को धन्यवाद देकर अपने लेखो के बारे म उसे फिर याद दिलाते हुए उमाकान्त बाहर आया। कुछ दूरी पर उसका स्कूटर खडा था। उसके पास उमाकान्त न सिगरेट सुलगायी और बादशाह से कहा, 'लडकी को पहचान लिया न?"

"वह तो मै पहली निगाह म ही पहचान गया था। मलिना ही है न?"

उमाकान्त न गम्भीरता स सिर हिलाया। बादशाह बोला "उन दिनो तो अखबारो मे तहलका मचा था। करीब करीब सभी अखबारा मे मलिना की फोटो छपी थी। तभी तो मैं एकदम से पहचान गया। वैसे भी ऐसा चेहरा कभी कोई भूल सकता है।"

उमाकान्त न स्कूटर स्टार्ट नही किया। चुपचाप सिगरेट पीता रहा। बादशाह न पूछा, "और उस्ताद, इन आदमियो को आपने पहचाना? ये तीन मुर्गे कौन है?"

"वही ता सोच रहा हूँ।'

"चलिए, घर चलकर एक बार फिर कोशिश की जायगी। वसे एक मुर्गे को मैं पहचानता हूँ।"

'किसे?' उमाकान्त ने उत्सुकता से पूछा।

'बीचवाले को। वह मुटल्ला आदमी यही का एक सिन्धी था। जनरल स्टोर्स की उसकी दुकान थी। मशहूर शराबी और एयाश। पारसाल ही ता उसका हार्ट-फेल हुआ है।'

"और बाकी दो मुर्गे?"

बादशाह सिर खुजलाने लगा। बोला, 'उन्हे मैं नही पहचानता, उस्ताद। बस, इतना जरूर है कि उनमे से एक चेहरा पहचाना सा लगता है। उसे मैंने कही देखा जरूर है।"

'मैंने भी।' उमाकान्त ने सोचते हुए कहा।

जब वे स्कूटर पर चढकर सडक पर भीड से बाहर आ गये तो बादशाह न कहा, "मेरा ख्याल है कि मलिना जब रेल की पटरी पर कटी हुई पायी गयी थी, तब उसके जिस्म पर शायद वही कपडे थे जो इस तसवीर मे है। आपका क्या ख्याल है?"

उमाकान्त ने कोई जवाब नही दिया। कुछ आगे चलकर उसने

स्कूटर एक किनारे रोक दिया और दूसरी सिगरेट सुलगायी। आसमान की ओर धुआ फेंकते हुए उसने कहा, "अभी दो साल की ही तो बात है। मलिना का मामला जब अखबारो मे छपा था, तभी मैंने सोचा था, उसने रेल की पटरी पर लेटकर आत्महत्या नही की है। मुझे लगता था उसे मारकर किसी ने पटरी पर फेंक दिया है और ट्रेन के नीचे वह बाद मे आयी है। पर पुलिस ने मामले की काफी दिन जाच करके उसे आत्महत्या समझकर खत्म कर दिया था।"

बादशाह बोला "मुझे वह केस पूरा पूरा याद है। उसे अब दुबारा क्यो न उभारा जाय? यह फोटो तो पूरे मामले को बिलकुल ही उलझा देता है। वह सिन्धी व्यापारी और दो आदमी मलिना के साथ खडे हैं। लडकी नाच के कपडे पहने है। वे लोग हाथ मे गिलास लिये हैं।"

अचानक बादशाह ने पूछा, 'यह फोटो खीची कसे गयी होगी उस्ताद! और अजीतसिंह के पास कैसे आयी?"

उमाकात ने कोई जवाब नही दिया।

बादशाह बोला "पुलिस को तो बताना ही पडेगा उस्ताद।"

उमाकात ने सिगरेट का अधजला टुकडा फेंकते हुए कहा, 'वह तो बताना ही पडेगा। पर पहले यह अजीतसिंह के खून का मामला तो सुलझ जाये!"

पन्द्रह

शहर के पत्रकारो ने कारपोरेशन हाल मे अजीतसिंह की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास करने के लिए एक सभा आयोजित की थी। पत्रकार की हैसियत से अजीतसिंह के बारे मे शायद ही किसी की बहुत ऊँची राय हो। खासकर उसकी मृत्यु के बाद, लोग जानने लगे थ कि वह लोगो की कमजोरियो का व्यापार करके रुपये ऐंठता था। फिर भी, रस्म भी कोई चीज है। एक पत्रकार साथी की हत्या हुई थी और उस पर शोक प्रस्ताव तो पास होना ही था। कुछ इसलिए भी कि यह हत्या बडे सनसनीखेज तरीके से हुई थी। अस्पताल मे जब वह बेहोशी की हालत मे पडा था, तब किसी ने उसे जहर दिया था। और बातो के साथ ही इसमे यह भी साबित होता था कि अस्पतालो का स्टाफ कितना निकम्मा और गर जिम्मेदार है। जाहिर है, घटना के इस पक्ष पर भी सभा मे काफी प्रकाश

डाला जाना था ।

पत्रकार होने के नाते सभा मे उमाकान्त को भी जाना था। सभा शाम को साढ़े पाँच बजे से थी। रास्ते ही मे अस्पताल पड़ता था। अभी पाच बजे थे। इसलिए वहा जाने के पहले वह अस्पताल की ओर मुड गया।

अस्पताल में उसने मिस लायल को खोज निकाला। वह एक प्राइवेट वार्ड के बरामदे में आराम कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसका मुह उसकी धोती पर लटका हुआ था। उमाकान्त ने उससे 'गुड इवनिंग' कहा।

उसने चौंककर सिर ऊपर उठाया। उमाकान्त से निगाहें मिलते ही उसके चेहरे पर चिड़चिड़ेपन के चिह्न प्रकट होने लगे। बिना आवाज को ऊँची किये उसने तीखेपन से कहा, "यहा क्या करने आये हो? मैं तुमसे बात नहीं कर सकती।'

'क्यो मिस लायल?' उमाकान्त मुसकराया, "क्या मेरी बातें इतनी बुरी होती है?"

वह उसी तरह तीखेपन से कहती रही, "तुमने मुझे धोखा दिया था। मैंने तुम्हारे बारे मे सब कुछ जान लिया है। तुम पुलिस के आदमी नही हो।"

'मैंने कब कहा कि मैं पुलिस का आदमी हूँ?"

मिस लायल कहती रही, "और उस दिन तुम मेरे घर की तलाशी लेने लगे थे। मैं चाहूँ तो तुम्हें इस धोखेधड़ी के लिए पुलिस मे दे सकती हूँ।"

उमाकान्त समझ गया कि मिस लायल को इस वक्त हेराइन के इंजेक्शन की जरूरत है और अभी उससे आगे बातें करना बेकार है। पर वह इस मौके को खोना भी नही चाहता था। उसने कहा 'आपको शायद हमारी पुरानी बातचीत याद नहीं रही। मैंने आपसे कभी नहीं कहा था कि मैं पुलिस का आदमी हू। आपने अपनी ओर से ही गलत समझ लिया हो तो मैं क्या कर सकता हू।"

'पर तुमने कहा था कि सिपाहियों को बुलाकर तुम्हारे घर की तलाशी करा सकता हूँ।"

"वह तो कहा ही था मिस लायल, और आज भी कह रहा हू। तुम ज्यादा बहकोगी तो तुम्हारे घर की तलाशी इस बार पुलिस ही से करानी पड़ेगी।'

अचानक उसने आवाज नीची करके कहा, "मैं जो भी हूँ, यह तो आप

जानती ही हैं कि मैं एक निर्दोष की जान बचाने के लिए यह भाग दौड कर रहा हूँ । इसम आपका मेरी मदद करनी होगी । यदि आप मरी मदद नही करेंगी तो मैं भी आपकी मदद नही करूँगा ।"

मिम लायल न फुफकारकर कहा, "मुझे आपकी मन्द की जरुरत नही ।'

उमाकात फिर उसी तरह धीर-स बाला, "नही है । अगर अस्पताल के सुपरिण्टण्डेण्ट का बता दिया जाय कि आपने उस दिन नशे की हालत म ड्यूटी दी थी तो आपका तुरन्त मदद की जरुरत पड जायगी ।"

मिस लायल बिना बोले हुए उस कडी निगाहो स देखती रही ।

तब उमाकात ने कहा, "मैं सिफ एक बात जानना चाहता हूँ । उस रात को जब वह बुर्केवाली औरत वाड की ओर दुबारा आयी तब उसने आपसे क्या कहा था ?"

मिस लायल की आवाज म नाराजगी थी । पर वह बाली ' मैंने आपको पहले ही बता दिया है । उसने कहा था कि मेरा पस अदर छूट गया है और मैं उस लेन जा रही हूँ ।"

' उसन यह बात आपसे कितनी दूरी पर कही थी ?"

"मैं एक छोटी सी मेज के सामने कुर्सी डाले बैठी थी । वह मेज की बगल म आकर खडी हो गयी थी । मेरा खयाल है, मुझमे और उसम मुश्किल से डेढ फुट का अतर होगा । अपना सिर झुकाकर वह अपना मुह बिल्कुल मेरे कान के पास ले आयी थी ।

'उसकी आवाज कसी थी ? मेरा मतलब है, वह आपसे फुसफुसाकर बात कर रही थी । उसकी आवाज बहुत मीठी थी, या गहरी या भराई हुई ? आपको कुछ याद है ? '

मिस लायल कुछ देर सोचती रही । फिर बोली, 'उसकी आवाज बहुत धीमी थी । इसलिए साफ तौर से कुछ कहना बडा मुश्किल है । पर जहाँ तक मेरा खयाल है उसम घबराहट थी और वह भराई हुई थी ।"

उमाकात थाडी दर चुप रहा । फिर पूछा, उस औरत की लम्बाई का कुछ अदाजा दे सकती हैं ?'

शायद मिस लायल को अचानक अहसास हुआ कि वह उमाकात से नफरत करती है । उसने बिगडकर कहा मैं आपकी किसी भी बात का जवाब नही दूगी । मुझे जो कहना है मैंने पुलिस से कह दिया है ।

पुलिस म ?' उमाकात ने चौंककर दुहराया ।

"मेरा मतलब है, सी० आई० डी० से।'

"और हरीसिंह ने भी उन्हें अपना बयान दिया है ?'

"जी, जनाब," मिस लायल ने मुंह बनाकर कहा, "हरीसिंह का भी बयान हो चुका है। हमने यह भी कह दिया है कि एक आदमी पुलिस इंस्पेक्टर बनकर हमसे बात करने आया था। बस अब आप दफा हो जाइए, नहीं तो हथकड़ी पड़ जायेगी।"

उमाकान्त चुपचाप खड़ा हुआ सोचता रहा—मिस लायल और हरीसिंह की गवाही का इस्तेमाल पुलिस रूबी के खिलाफ जरूर करेगी। रूबी के गोरे और चिकने पाँव उसे फाँसी के फन्दे की ओर चलते हुए जान पड़े। उसने जोर की साँस ली और मिस लायल से कहा, "आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।'

अस्पताल से बाहर आकर वह मुख्य सड़क पर आ गया। उसका चेहरा शान्त था, पर वह बराबर सोच रहा था। उसके पहुँचते-पहुँचते कारपोरेशन हाल में सभा आरम्भ हो गयी थी। हॉल आधे से ज्यादा खाली था। लगभग अस्सी आदमी मौजूद थे, जिनमें ज्यादातर पत्रकार और राजनीतिक नेता थे। पहली कतार में अजीतसिंह की चचेरी बहन रत्ना बैठी दिखायी दी। उसे देखते ही रत्ना ने मुंह दूसरी ओर फेर लिया। शायद उसे उमाकान्त के बारे में पहले से मालूम था। उमाकान्त आखिरी कतार में बैठ गया और चुपचाप व्याख्यान सुनने लगा।

कुल पाँच भाषण हुए। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दो व्यक्तियों के थे। वह दोनों ही राजनीतिक नेता थे। उनमें पहला नेता किसी वामपन्थ पार्टी का प्रतिनिधि था। अपने व्याख्यान में उसे इस बात का बड़ा अफसोस रहा कि वह अजीतसिंह को राजनीति में नहीं खींच पाया। उसने कहा, 'अजीतसिंह के दिल में एक आग थी, क्रान्ति की आग। सर्वहारा वर्ग के हितों की रक्षा के लिए वह अपनी जान की भी बाजी लगा सकता था। मैं सोचता था, ऐसा आदमी राजनीति में आ जाये तो देश का बहुत हित होगा। पर वह मुझसे बराबर यही कहता रहा कि नहीं, 'जनक्रान्ति निकालकर मैं जैसी देश सेवा कर रहा हूँ, वही बहुत काफी है। पत्रकारिता ही मेरा जीवन है वही मेरी राजनीति है। सच्चे पत्रकार का किसी राजनीतिक पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। तभी वह स्वतन्त्र रूप से पत्रकारिता कर सकता है।' "

दूसरा सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान शहर के प्रसिद्ध नेता शान्ति-

प्रकाश का था। वह आजकल कारपोरेशन के चुनाव म पूरी तौर से फँसे थे और किसी तरह आधे घण्टे का समय निकालकर आये थे। कारपोरेशन हॉल के बाहर चुनाव चिह्ना और झण्डियो से सजी हुई उनकी जीप इस वक्त भी खडी थी और उनके साथ के कायकर्त्ता जीप से नीचे नही उतरे थे। वह इसी इ तजार म थे कि जैसे ही शा तिप्रकाश जी सभा से बाहर आयें, वे उ ह लेकर फिर तेजी से किसी चुनाव मीटिंग मे चले जायें। समय की कमी के बावजूद सबसे ज्यादा लम्बा व्याख्यान शान्तिप्रकाश जी ने ही दिया।

उ होन इस बात पर खास तौर से जोर दिया कि साप्ताहिक जनक्रान्ति' समाज म फने हुए भ्रष्टाचार और ग दगी का निर्भीकता से भण्डाफोड करता था और इसी कारण अजीतसिंह के हजारो शत्रु हो गये थे। इसी सिलसिले मे उ होन जिला पुलिस और सी० आई० डी० की भी नि दा की। उनकी आवाज मीठी थी और ऊचाई पर जाकर बहुत पतली होजाती थी। फिर भी उ होने आवाज उठाकर कहा 'यह हमारी पुलिस का निकम्मापन है। खूनी को गिरफ्तार किये हुए भी चार पाच दिन हो गये हैं। पर अभी तक उ होने अजीतसिंह की हत्या का मुकदमा कोट मे नही भेजा है। पता नही वे अब किस बात का इ तजार कर रहे है। शायद वे जान-बूझकर देरी कर रहे हैं, ताकि देरी से मामला बिगड जाये। यही नही उस औरत न, जो पुलिस की हिरासत म है, सिफ अजीतसिंह के शरीर की हत्या की है। पर पुलिस अब उसके चरित्र की हत्या कर रही है। और इसीलिए उ होने यह थ्योरी निकाली है कि वह ब्लकमेलिंग करता था। पर अजीतसिंह के चरित्र पर इस प्रकार के लाछन का मैं विरोध करता हूँ। हम सभी जानत हैं कि वह एक निर्भीक और चरित्रवान आदमी था। अगर मामले की सही ढग स छानबीन की गयी तो हम निश्चय ही पता लग जायेगा कि उसकी हत्या क्या की गयी। उसके चरित्र के खिलाफ कोई बात कहना एक बडी शमनाक बात है। वह एक स्वत त्र और सच्चा पत्रकार था और उसे अपनी निर्भीकता और सचाई की सजा मिल गयी। ताज्जुब है कि हमारे अधिकारी इस हत्या के पीछे छिपे हुए रहस्या का पता लगान के बजाय अजीतसिंह को ही 'ब्लैकमेलर बनाकर पूरे मसल को इतनी आसानी से निपटा देना चाहते है।"

इसके बाद व काफी दर भारतीय पुलिस की खामियो पर बोलते रहे। उ होने कहा, "पश्चिम के बडे-बडे शहरो मे पुलिस म्यूनिसिपल कारपोरेशन

के मातहत होती ह। इसीलिए हरएक काम म उन्ह जनता की भावना का ख्याल करना पडता है। यहाँ की पुलिस की हालत सभी जानते हैं। इसीलिए हमने तय किया है कि कारपोरेशन के चुनाव के बाद अगर हमारी पार्टी बहुमत म आयी तो हम सरकार का प्रस्ताव भेजेंगे कि यहा की पुलिस को कारपोरशन का मातहत बना दिया जाना चहिए। तभी हम उन्ह सिखा पायेंगे कि एक पत्रकार की हत्या को इतनी आसानी स नही टाला जा सकता।

फिर वे अजीतसिह के अखबार की तारीफ करने पर उतर आय। बोले, "भाइयो, 'जनक्रान्ति' मे हमेशा दूसरा की निन्दा ही नहीं छपती थी। जब कभी किसी ने समाज सवा म कोई प्रशसनीय काम किया तब अजीतसिह जी दिल खोलकर एस कार्यों की सराहना करत थे। 'जनक्रान्ति' के पुरान अक उनकी सचाई और हृदय की निश्छलता के सबूत है।

शाक प्रस्ताव और दो मिनट की खामोशी के बाद सभा समाप्त हो गयी।

लोग शायद पहले से ही उकता रह थे। सभा समाप्त होत ही लग भग सभी तजी से दरवाजे की ओर बढे। पिछली कतार म बठे होन के कारण उमाकान्त पहले ही बाहर आ गया था। उसके पास दो आदमी खडे हुए आपस म बात कर रहे थ। एक कह रहा था कि शान्तिप्रकाश ने इतना लम्बा व्याख्यान तो दिया, पर बेटे न यह नहीं बताया कि 'जनक्रान्ति का खचा कहा से निकलता था।

उमाकान्त उन्ही लागा की बातचीत मे शामिल हा गया। बाला, "कहाँ से निकलता था ?"

व लोग भी पत्रकार थे और उमाकान्त स घनिष्ठ थे। एक ने कहा, "इस शान्तिप्रकाश ने अपनी जेब से चन्दा देकर 'जनक्रान्ति' का साल-भर जिन्दा रखा था।"

"इसमे बुरा ही क्या है ? ' उमाकान्त ने कहा।

वे हसने लगे। उनम स एक बोला, ' आप ता इस तरह पूछ रह हैं जसे आपको कुछ पता ही नही।" फिर रुककर वह खुद ही कहन लगा, "पर आपको पता हो भी कसे सकता था ? तब तो आप कानपुर मे रह होंगे।"

दूसरे पत्रकार ने कहा "वह जो 'पावती महिला आश्रम' है न, शहर के रईसो का चकला, उसके खिलाफ 'जनक्रान्ति' म कई साल पहले न जाने

कितनी धमकियां छपी थीं। अजीतसिंह हर अंक में बराबर यही लिख देता था कि अगले अंक में महिलाओं के उद्धार की एक संस्था के बारे में भयंकर पर सत्य घटनाएँ छपनेवाली हैं। किंतु वे भयंकर, पर सत्य घटनाएँ किसी अंक में नहीं छपीं। आप जानते हैं कि क्यों? इसलिए कि उन दिनों 'जनक्रांति' गरीबी में घिसट रहा था और तभी उसे जिंदा रखकर मजबूत बनाने का ठेका शान्तिप्रकाश ने ले लिया था।"

उमाकांत ने लापरवाही से कहा 'ओह!' वह उनके पास रुककर थोड़ी देर उनकी बातें सुनता रहा फिर वहां से हट गया।

उसे शांतिप्रकाश का भाषण सुनकर भीतर ही भीतर नफरत सी हो रही थी। किसी ब्लैकमेलर की तारीफ में एक सार्वजनिक सभा में इतनी अच्छी बातें कही जायें, इतना उसे भिभोड़ देने के लिए काफी था। अब अजीतसिंह और शांतिप्रकाश के सम्बन्धों की बात जानकर उसे लगा कि सचमुच ही इस देश की राजनीति जहन्नुम को जा रही है।

कारपोरेशन हाल कुछ ऊँचाई पर बना था। सीढ़ियां उतरकर जैसे ही वह नीचे आया, शांतिप्रकाश की चुनाववाली जीप आगे बढ़ गयी थी। उसके पीछे पांच छह कारें कतार में खड़ी थीं और ये भी स्टार्ट होने लगी थीं। सामने जो कार थी उसमें एक आदमी सफेद कुर्ता और पाजामा पहने आंखों पर काला चश्मा लगाये, ड्राइवर की बगल में बैठा था। उमाकांत ने उसे देखा और देखता ही रह गया। कार स्टार्ट होकर खिसकने लगी। उमाकांत को लग रहा था कि इसे कहीं देखा है, पर याद नहीं कर पा रहा था कि कहां! कई क्षणों तक वह कोशिश करता रहा। आखिर में आगे बढ़ने लगा।

उसके पीछे एक दूसरा पत्रकार आ रहा था। उमाकांत ने मुड़कर उससे पूछा, "यह महाशय, जो काला चश्मा लगाये हुए कार में बैठे थे, कौन हैं?'

"इसे नहीं जानते? यह जसवंत हैं।"

"ओह! जसवंत!" उमाकान्त को याद आ गया। बोला, 'तभी मुझे ख्याल पड़ रहा था, इसे कहीं देखा जरूर है। यह भी तो कारपोरेशन का चुनाव लड़ रहा है न?"

पत्रकार बोला, 'लड़ रहा है और जीत भी जायगा। ऐसे ही लोग तो आजकल चुनाव जीतते हैं।

जसवन्त की कार काफी आगे निकल गयी थी। उमाकान्त ने घलत

चलते पूछा, "आखिर इसमे खराबी क्या है ?"

"खराबी ?" पत्रकार ने जोर देकर कहा, "शहर मे इससे बडा हरामजादा कोई मिलेगा नही।"

दोनो हँस पडे, जैसे यह कोई बहुत बडा मजाक हो। पर अपने स्कूटर पर बैठते ही उमाकान्त की हँसी गायब हो गयी। उसके दिमाग मे जसवन्त की शक्ल घूम रही थी। उसने अपने पत्रकार मित्र से कह तो दिया था कि उसने जसवन्त को कही देखा जरूर है पर उसे यकीन था कि उसने आज उसे पहली बार ही देखा है। वह इतनी आसानी से देखे हुए चेहरो को नही भूलता था। वह बराबर इसी गुत्थी मे पडा रहा कि उसने जसवन्त को पहले कहा देखा है।

उस पूरी शाम उसके दिमाग मे एक मधुमक्खी सी भिनभिनाती रही। बात बहुत छोटी थी, फिर भी वह उसे भुला नही पा रहा था। रात को लगभग नौ बजे वह अजीतसिंह के खूनवाले कागजो को उलट पलट रहा था। उसका दिमाग थक गया था, फिर भी अब तक जितने बयान और दूसरी चीजें उसके हाथ मे आ गयी थी उन्हे दुबारा देखकर वह उनमे *कोई अर्थ ढूढने की कोशिश कर रहा था। अचानक अजीतसिंह के प्रेस से* लायी हुई तसवीरो को देखते देखते वह चौक पडा। उसके दिमाग मे जैसे कोई क्लिप एक खटके के साथ खुल गया हो। उसकी निगाह उस तसवीर पर रुक गयी थी जिसमे एक लडकी के साथ तीन आदमी खडे हुए थे। उमाकान्त को बिना किसी सन्देह के मालूम हो गया कि उनमे से एक आदमी जसवन्त है और दूसरा सिंधी व्यापारी जिसे बादशाह ने पहचान लिया था। दोनो ही के हाथो मे गिलास थे, शायद ह्विस्की के गिलास! तसवीर के जसवन्त मे और कारपोरेशन का चुनाव लडनेवाले जसवन्त मे सिर्फ एक फर्क था। तसवीर मे उसके होठ पर काफी बडी और नुकीली मूछें थी। असली जसवन्त की दाढी मूछ सफाचट थी।

उमाकान्त ने एक सन्तोष की सास ली और उसकी थकान एकदम से गायब हो गयी। उसने बादशाह का फुर्ती से फोन मिलाया। उसके होटल से खबर मिली कि वह घर जा चुका है। तब उसने उसके घर पर फोन मिलाया। पर फोन वीराने मे किसी घायल चिडिया की तरह चीखता रहा। उस समय किसी ने उसका रिसीवर नही उठाया।

सोलह

'जनक्रांति' प्रेस मे बादशाह ने जिस लडकी का नाम मालती और जिसे अपनी ममेरी बहन बताया था उसका असली नाम मलिना था। मरने के पहले वह उन्नीस साल की थी और एक स्थानीय कालिज म पढती थी। मलिना न कत्थक नत्य का अभ्यास किया था और अभी से उसे अच्छे कलाकारो म गिना जाने लगा था। लोगो को उससे बडी बडी आशाएँ थी। लोगो को जितना आनन्द उसका नाच देखन म आता उससे ज्यादा आनन्द उसे खुद नाचने म आता था। नाच के पीछे वह पागल थी और शहर का कोई भी सास्कृतिक कायक्रम उसके नाच के बिना पूरा नही होता था।

मलिना बहुत सुन्दर भी थी। उसके घर की हैसियत बहुत मामूली थी। पिता किसी दफ्तर म क्लर्की करते थे। पर मलिना की कला के कारण उसका परिवार अचानक प्रसिद्ध हो गया था। लखनऊ के दजनो रईसजादे मलिना को अपने जाल मे फँसाने की कोशिश मे थे। पर सास्कृतिक कायक्रमो के अलावा उसका कोई भी सामाजिक जीवन नही था। वह अपने परिवार म रहती और बाहरी आदमियों को उससे जान पहचान करना बडा मुश्किल था।

पर एक दिन अचानक वह गायब हो गयी। लगभग दो साल पहले वह अपने कालिज के ही एक कायक्रम म भाग लेने गयी थी। उसके बाद वह घर वापस नही लौटी। पुलिस न उसे खोजने की बहुत कोशिश की, पर कई दिन तक उसका पता नही चला। पन्द्रह दिन बाद वह शहर के ही पास रेल की पटरी पर कटी हुई पायी गयी। उसके ऊपर स कोई डाकगाडी निकली होगी, क्योकि उसके जिस्म के कई टुकडे हो गय थ और वे तितर बितर पडे थे। बीच का हिस्सा एक तरह से गायब ही हो गया था। उसका बहुत-सा भाग पहियो म चिपका हुआ चला गया होगा। इस तरह के शरीर का बाकायदा पोस्टमाटम तक नही हो सकता था।

फिर भी जितने सकेत मिल सके उसके सहारे सी० आई० डी० ने मामले की छानबीन की, पर उसका कोई खास नतीजा नही निकला। सी० आई० डी० न आखिर म यही निष्कष निकाला कि यह हत्या का मामला नही था और मलिना न आत्महत्या की थी। आत्महत्या की सम्भावना मजबूत करने के लिए सी० आई० डी० की जानकारी म और भी कई बातें आयीं।

उन्हें पता लगा कि मलिना अपने कालिज के ही एक विद्यार्थी से प्रेम करती थी। कुछ दिन पहले उसका देहान्त हो गया था। तब से मलिना काफी उदास रहने लगी थी। उस लडके की मृत्यु को मलिना की आत्महत्या का सबसे बड़ा कारण समझा गया था।

कुछ दिनों तक अखबारों में छुटपुट खबरें छपने के बाद मामला खत्म हो गया था। बाद में स्थानीय अखबारों में मलिना की कला पर एकाध छोटे छोटे लेख भी उसके चित्रों के साथ निकले। उन लेखों ने पूरी कहानी के उपसंहार का काम किया। तब से अब तक लगभग दो साल बीत चुके थे और लोग मलिना को भूल गये थे। पर अजीतसिंह के सन्दूक में मिली हुई इन दो तसवीरों को देखकर उमाकान्त को लगा कि लोग मलिना को कुछ ज्यादा जल्दी भूल गये हैं। उन तसवीरों की असलियत जानने के लिए उसका मन छटपटाने लगा। यह एक पत्रकार का मन है जो हर नयी चीज के पीछे भागना चाहता है, ऐसा सोचकर उसने अपने को समझाना चाहा। पर उसे लगा, इन तसवीरों में उसकी दिलचस्पी इससे भी ज्यादा गहरी है।

जिस दिन उमाकान्त को ये तसवीरें मिली उसके तीसरे दिन रात को नौ बजे के लगभग वह बादशाह के साथ एक बार में बैठा था।

बार काफी सस्ता और मटमैला था। वह एक चौकोर कमरे में था जिसकी लम्बाई से सटाकर कुछ छोटे छोटे केबिन निकाल लिये गये थे। केबिनों के बीच में प्लाईवुड की दीवारें थीं और उनके सामने पर्दे पड़े थे। बाकी जगह में लोहे की बेतरतीब मेजें और उनके आसपास लोहे के स्टूल पड़े हुए थे। यह इलाका भी इक्के, तांगा, रिक्शा, मैली और छोटी दुकानों, सस्ते और पुराने मकानों, गुण्डों, छुरेबाजों, चोरी का माल बेचने वालों, आवारा औरतों और उनके दलालों का था।

उमाकान्त और बादशाह एक केबिन में बैठे हुए थे। इस समय उन्होंने सामने का पर्दा हटा रखा था और उन्हें बाहर से कोई भी देख सकता था। बादशाह ने जम्हाई लेते हुए कहा, "यह जगह तो जहन्नुम जैसी लग रही है। मैंने तो उस पैराडाइज होटल के 'बार' में बुलाया था, पर उसने कहा कि आजकल चुनाव के दिन हैं। इन दिनों वह अपने इलाके के होटलों में शराब नहीं पी रहा है। उसे डर है कि वहाँ कोई ऊलजलूल हालत में उसका फोटो लेकर अखबारों में न छपा दे। वोटरों पर इसका बड़ा बुरा असर पडेगा।"

आदमी का

उमाकांत ने कहा, "उसका डर बहुत सही है। अपने देश में शराब ऐसी ही बदनाम चीज है। पक्के से पक्का शराबी भी दूसरा की बदनामी करने के लिए उनको शराबी बताता है।"

उसके सामने कॉफी का प्याला था। बादशाह ह्विस्की पी रहा था। उमाकांत ने अपनी कलाई की ओर देखा। बोला, "नौ बजकर दस मिनट हो गये। अब मैं बगलवाले केबिन में जाता हूँ।" कहकर उसने अपना प्याला उठाया और पडोस के केबिन में जाकर बैठ गया। उसने सामने का पर्दा खींचकर लोगों की निगाहों से अपने को दूर कर लिया। बादशाह अपने केबिन में अकेला रह गया। उसके और उमाकांत के बीच प्लाईवुड की एक पतली सी दीवार थी जो केवल छह फुट ऊंची थी।

बार में दो आदमियों ने प्रवेश किया। आगेवाला आदमी जसवंत था। वह लगभग छह फुट लम्बा था, और इस समय सिल्क का कीमती कुर्ता और महीन धोती पहने हुए था। बाल बडे करीने से सँवारे हुए थे और लगता था, वह अभी अभी नहाकर आया है। फिर भी उसके चेहरे पर पसीना छलछलाया हुआ था और बगलों और पीठ पर से कुर्ता गीला हो रहा था। पीछेवाला आदमी ठिगने कद का था, उसकी उम्र तीस साल होगी। उसके कन्धे चौडे और कमर पतली थी। देखते ही लगता था कि वह काफी बलिष्ठ है और बडी फुर्ती से घूम सकता है। वह सँकरी मोहरी की पतलून और एक मोटी टी शर्ट पहने था। पतलून की जेब जरूरत से ज्यादा उभरी हुई थी और मारपीट की दुनिया में रहनेवाला को बताने की जरूरत नहीं थी कि उसमें रिवाल्वर या कम से कम छुरा होगा।

बादशाह ने अपने केबिन से बाहर आकर इन दोनों का स्वागत किया। थोडी देर में वे तीनों केबिन में बैठ गये। बादशाह ने तीन गिलासों में ह्विस्की का आर्डर दिया और कच्चे प्याज के साथ कबाब की एक प्लेट मँगायी। यह आ जाने पर सामने का पर्दा खींच लिया।

जसवंत ने कहा "बहुत गर्मी है। यह पर्दा खींचने की कोई जरूरत नहीं। इस इलाके में मेरी जान-पहचानवाले बहुत कम हैं। क्या समझे?"

बादशाह बोला, "फिर भी, जब तक चुनाव नहीं हो जाता आपके दुश्मन आपको ऐसी जगह पर न देखें, यही ज्यादा अच्छा है। वैसे तो शहर के इस हिस्से में उधरवाले बहुत कम आते हैं फिर भी एहतियात के लिए मैं बाहर खुले में न बैठकर इस केबिन में बैठ गया था।"

जसवन्त ने लापरवाही से कहा, "ठीक किया। पर यहाँ कोई उधर

वाला नही आयेगा। क्या समझे ?" उसने अपने हाथ से पर्दा आधा खींचकर खोल दिया।

गिलास से ह्विस्की की एकाध शिष्टतापूर्ण चुस्की लेने के बाद जसवन्त ने कहा, 'बडी प्यास लगी है।" फिर उसने पूरा गिलास एक साम मे ही खाली कर दिया। उसके साथी ने भी अपना गिलास उसी तरह खत्म किया। वादशाह ने जसवन्त को बडे आदर की निगाहो से देखा और ह्विस्की के दो नये गिलास मँगाये। अपने लिए कहा, "मैं बुड्ढा हो रहा हूँ। धीरे धीरे ही पीता हूँ।"

दूसरे गिलासो के आ जाने पर वे लोग ज्यादा इत्मीनान से हो गये और आपस मे बातें करने लगे। जसवन्त ने कहा, आजकल तो चुनाव मे मेरा रुपया पानी की तरह वह रहा है। पाच पाच सौ रुपये की तो शराब ही रोज खर्च हो रही है। क्या समझे ?"

'सब समझ गया भाई साहब यह चुनाव का खेल फटीचरो के लिए नही है।" वादशाह ने कहा।

"जी, तभी तो जब मोहन ने आपकी तारीफ की और बताया कि चुनाव मे आपसे बडी मदद मिलेगी तो मैंने चाहा था कि आप मेरे घर पर ही आ जायें। वहा मैंने एक कमरा एयरकण्डीशण्ड करा रखा है। ठाठ से वही बैठकर ह्विस्की पीते और बातें करते। पर कोई बात नही। आपकी जिद थी कि मैं यही आऊ। इसलिए यही आ गया। क्या समझे ?"

इस बार वादशाह ने नही कहा कि वह क्या समझा है। वह समझ गया था कि जसवन्त को हर जुम्ले के बाद अपनी बात को रोबीली बनाने के लिए 'क्या समझे' कहने की आदत पड गयी है। उसने सहज ढग से कहा, 'मेरा घर तो इस लायक है नही कि आपको वहा बुलाता। उधर आपके घर पर आजकल चुनाव का चक्कर है। दिन रात भीड भाड रहती है। इसलिए वहा कोई मतलब की बात तो हो नही पाती। तभी मैंने सोचा पैराडाइज मे हम लोग थोडी देर बैठेंगे और बात करेंगे। पर वह जगह आपको ठीक नही लगी। इसलिए हारकर यही आना पडा।'

जसवन्त ने खुले हुए पर्दे से कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक का निरीक्षण किया। बोला, 'यह जगह भी उतनी बुरी नही है। यहाँ गर्मी जरूर है, पर जाडे के लिए बहुत बढ़िया है। क्या समझे ?"

जसवन्त के साथी ने पहली बार मुह खोला, "मैं यहा जाडो ही मे आता हूँ।"

इसके बाद वे चुनाव की बातें करने लगे। पहले जसवन्त ने मोहन की तारीफ की। बताया कि लोग उसे गुण्डा कहते हैं और वह गुण्डा है भी। पर आदमी बडा सच्चा और वफादार है। "मैं अगर कह दूं कि कुएँ में कूद पडो तो वह बिना हिचक कुएँ में कूद पडेगा।" जसवन्त ने कहा, "पिछले पन्द्रह दिनों से वह रात को सिर्फ दो-तीन घण्टे सो रहा है। बाकी वक्त चुनाव के अभियान में लगाता है। दो-तीन मुहल्लों में तो उसका इतना दबदबा है कि वहाँ एक चिडिया भी मेरे खिलाफ वोट नहीं देगी। क्या समझे ?

बादशाह ने कहा "मोहन मेरा बडा पुराना दोस्त है। हम दोनों फतहगढ जेल में साथ ही साथ थे।"

जसवन्त के साथी ने बादशाह को गौर से देखा। उसके बाद उसके चेहरे से लगा, वह इस घोषणा से काफी प्रभावित हुआ है।

जसवन्त ने कहा 'तभी तो मैंने मोहन से कहा कि तुम अपने सब दोस्तों को ले आओ। इस समय मुझे सभी के सहयोग की जरूरत है। अगर आपके असर से नाले के पासवाले उन दस पन्द्रह परिवारों के वोट टूट सकें, तो फिर चुनाव में कोई मेरे आगे नहीं खडा हो पायेगा। क्या समझे ?" अचानक उसने नेताओं के लहजे में कहा, बादशाह जी, आपके सहयोग के बिना मेरा काम चल नहीं पायेगा। मोहन से मैंने कह दिया है, आपका सहयोग मुझे किसी भी कीमत पर मिलना चाहिए।"

'कीमत ?' बादशाह ने उसे बडे आश्चर्य से देखा और कहा, "मुझे तो आप मोहन ही मानिए। आपके ही घर का आदमी हूँ। हमारे आपके बीच कीमत का क्या जिक्र।

पुराने गिलास बदलकर उनके सामने ह्विस्की के नये गिलास आ गये। वे आधा घण्टे तक चुनाव की बातों में डूबे रहे। जसवन्त बादशाह को बताता रहा कि दूसरे दिन से ही उसे सब काम छोडकर मोहन के साथ आ जाना चाहिए। बादशाह ने कहा "कल मैं बाहर रहूँगा। परसों सबेरे से आपकी ताबेदारी में आ जाऊँगा।'

चुनाव की बातें होते होते न जाने कैसे और कहाँ से लडकियों का जिक्र आ गया। जसवन्त अब अपनी बातचीत में काफी खुल चुका था और बादशाह को 'शर्मा यार' कहकर सम्बोधित करने लगा था। पहले बादशाह ने उसे अपने दो एक तजुर्बे सुनाये। कलकत्ता में दो तीन चीनी जापानी लडकियों के पीछे वह एक बार मुसीबत में फँस चुका था। वहाँ

से लडकियो को सब तरह स खुश करके और उनके दलालो को हरा-कर वह किस तरह सही-सलामत निकल आया, यह किस्सा उसन काफी विस्तार से सुनाया। बीच-बीच मे कहता रहा, "अब तो मैं बुड्ढा हो गया हूँ।'

जवाब म जसवन्त न भी अपने किस्से सुनाने शुरू किये। उनमे जोर इसी बात पर रहा कि उसकी दोस्ती अपने जमाने की सबसे सुन्दर लडकियो से थी, हालाँकि उसकी लडकियो मे कोई खास दिलचस्पी नही थी। वे ही हमेशा उसके पीछे लगी रहती थी। बादशाह जसवन्त की खूबसूरती की तारीफ करता रहा और उसकी बातें आदर स सुनता रहा। जसवन्त का साथी चुपचाप ह्विस्की पी रहा था। तभी बादशाह ने धीरे स कहा, "कुछ दिन हुए, यहाँ भी एक लडकी से मेरी दोस्ती हो गयी। उस तरह का चेहरा फिर देखने को नही मिला।"

जसवन्त न पूछा "अब कहाँ रहती है वह ?"

बादशाह ने गहरी सास ली। बोला, "अब वह इस दुनिया मे नही है।'

उसस महानुभूति दिखाने के लिए जसवन्त न होंठ दबाकर सिर हिलाया।

बादशाह ने कहा "सिर्फ उसकी यह यादगार मेरे पास रह गयी है।"

कहते-कहते उसने कमीज की जेब से निकालकर एक फोटो जसवन्त के सामने रख दी। यह मलिना की फोटो थी। जसवन्त थोडी देर उसे निश्चल निगाहो स देखता रहा। फिर अचानक उसने चीखकर बैरे को आवाज दी और कहा, "तीन बडा ह्विस्की।" उसने दुबारा अपनी निगाह मलिना की फोटो पर लगा दी। उसके बाद उसने बादशाह की ओर घूरते हुए पूछा "यह फोटो तुम्हे कहाँ से मिली ?'

बादशाह ने महज ढग से कहा, "उसी लडकी ने दी थी। उसे शायद आपने भी देखा हो। बहुत अच्छा नाचती थी।"

जसवन्त की निगाह बादशाह के चेहरे पर जमी हुई थी। पर उसका हाथ धीरे धीरे मेज पर रखी मलिना की फोटो की ओर बढ रहा था। बादशाह न धीरे से उसे खीचकर अपनी जेब म रख लिया।

जसवन्त ने अपना सवाल दोहराया "तुम्हे यह फोटो किसने दी थी ?"

उसके साथी ने शराब पीना बन्द कर दिया था। ह्विस्की का नया गिलास उसके सामने आ गया था पर वह उसे देख भी नही रहा था।

उसकी निगाह भी बादशाह के चेहरे पर लगी हुई थी और दाया हाथ पतलून की जेब पर था।

बादशाह ने जार से सास खीची और एक बार पर्दे के बाहर कमरे की ओर निगाह डाली। उससे थोडी ही दूर पर खुले मे लाहे की एक मेज पर तीन नौजवान बैठे हुए बियर पी रह थे। बादशाह से निगाह मिलते ही एक ने धीरे से सिर हिलाया। अचानक बादशाह ने पूछा, "आप इस तरह सजीदा क्यो हो गये ? क्या आप इस लडकी को जानते ह ?'

जसवत ने जोर से कहा, "मैं पूछ रहा हूँ यह फाटो तुम्ह किसने दी थी ?'

बादशाह ने अपनी कमीज की जेब मे उँगलिया डालकर उसके अन्दर भाका। सहज भाव स बोला, "आप जानना ही चाहते हैं ता आपसे बताने मे मुझे एतराज ही क्या है ? जसे मोहन के लिए, वैसे ही मेरे लिए, आप तो घर के आदमी हैं।"

उसने अपनी जेब मे एक दूसरी फोटो निकाली। "सच पूछिए तो यह फोटो मुझे उस लडकी न नही इस दोस्त ने दी थी।" कहकर उसने दूसरी फोटो जसवत के सामने रख दी। पर उसे उसने हाथ से छोडा नही, उँगलिया मे मजबूती से पकडे रहा। यह फोटो उस दाढीवाले आदमी की था जो मलिना, जसवत और सिधी व्यापारी के साथवाले फोटाग्राफ म मौजूद था। जाहिर था कि उमाकात ने उसकी अकेली तसवीर को फोटोग्राफ से अलग करके बडा करा लिया था। इस तरह उस अकेल आदमी का अलग से यह एक दूसरा फोटो बन चुका था। फ्रेंचकट दाढीवाला आदमी फोटो मे एक अजीब सी मुद्रा मे खडा हुआ था। उसके चेहरे पर हँसी थी और हाथ म एक गिलास था। जसवत के साथी ने फोटो देखत ही कहा, 'तो चचा इसका मतलब यह कि तुम भी दरबार म जात हो ?'

पर जसवत ने उसको हाथ से पीछे हटाकर कहा, चुप बे।" वह आँखें फाडकर इस फोटो को देख रहा था। लगा वह उसे अपनी निगाहो से जला डालगा। अचानक उसन चीखकर कहा, 'यह सब क्या घपला है ? तुम क्या कहना चाहते हा, तुम्हारा मतलब क्या है ?"

बादशाह ने धीरे से पूछा, "क्या आप इन्हे जानते हैं ?"

जसवत के साथवाला आदमी उछलकर केबिन के बाहर आ गया था। उसी के साथ जसवत भी खडा हो गया। उसने अपने साथी का हाथ

पकड़कर रहा, "हम फँसाने की कोशिश की जा रही है। यह भी चुनाव का कोई जाल है। खबरदार कोई बेवकूफी मत कर बैठना।'

कमरे में बाहर भाग पर बैठे हुए तीनों नौजवानों ने बियर पीनी बन्द कर दी थी। वे गौर से केबिन की पूरी घटना देख रहे थे। पर उनमें से कोई भी अपनी जगह से हिला नहीं। उमाकान्त अपने केबिन से निकलकर धीरे से बाहर आया और उन्हीं नौजवानों के पास खड़ा हो गया।

बादशाह पर जैसे जसवन्त की नाराजगी का कोई असर ही न हुआ हो। उसने दाढ़ीवाले आदमी की फोटो अपनी जेब में रख ली और शान्ति के साथ कहा, "आपको गलतफहमी हो गयी है। मुझे नहीं पता था कि आप यह तसवीरें देखकर इतना परेशान होंगे। बैठ जाइए। जब तक आपसे हमारी गलतफहमी दूर नहीं हो जाती मैं आपको जाने नहीं दूंगा।"

पर तब तक जसवन्त अपने साथी का हाथ पकड़कर केबिन से बाहर आ गया था। बोला 'मैंने तुम्हें अच्छी तरह पहचान लिया है। याद रखना इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

वे दोनों तेजी से बाहर चले गये। उनके जाते ही उमाकान्त और तीनों नौजवान बादशाह के पास आकर केबिन में बैठ गये। बादशाह और उमाकान्त, दोनों ही गम्भीर हो गये थे। उमाकान्त ने कहा, "एक काफी और पी लें, तब यहाँ से चला जाये।"

बादशाह ने थकी हुई आवाज में कहा, "तुम्हें अभी कुछ देर और रुकना पड़ेगा उस्ताद। इन लड़कों ने इतनी देर चौकीदारी की है। इन्हें भी कम से कम एक एक बोतल बियर का इनाम तो देना ही चाहिए।'

सत्तरह

दूसरे दिन सवेरे नौ बजे उमाकान्त ने सी० आइ० डी० के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट विद्यानाथ को फोन किया। उमाकान्त की आवाज सुनते ही उन्होंने कहा, "मैं आपको खुद फोन करने जा रहा था। ऐसा लगता है कि रवी के खिलाफ मुकदमे को हम अब ज्यादा दिन रोक नहीं सकते।'

"क्यों बॉस? क्या कोई नया सबूत हाथ लग गया है?' उमाकान्त ने हँसकर पूछा। उसके लहजे से लगा, विद्यानाथ से वह काफी नजदीक है।

'सबूत के अलावा आप लोगो का भी डर है, इधर हमारे खिलाफ क्या क्या कहा जा रहा है, आपने अखबारो मे पढा ही होगा।"

"पुलिस की निष्क्रियता, वगैरह वगैरह ।' उमाकान्त ने मजाक सा उड़ाते हुए कहा।

'जी हाँ, आप भी तो कारपोरेशन हाल वाली सभा मे थे। आपके सामने ही तो हम पर चाज लगाया गया था कि रूबी के खिलाफ मामले को जान बूझकर ढीला छोड दिया गया है।"

'पर उसका इलाज भी तो बताया गया था कि पुलिस को कारपोरेशन के मातहत कर दिया जाये।'

'इलाज तो लाजवाब है। वसे मैं तो अपने को अभी से कारपोरेशन के मातहत समझता हूँ।"

'डेमोक्रेसी म हर अफसर का यही समझना चाहिए।"

"तो ?" विद्यानाथ की आवाज मे हल्का सा परिवतन जान पडा।

उमाका त ने भी सवाल किया, "तो ?"

तो रूबी का मुकदमा हम आज कोट म भेज देंगे।"

उमाकान्त कुछ सोचने लगा। विद्यानाथ ने उधर से यह देखने के लिए कि वह अभी फोन पर ही है, कहा, "हलो !"

उमाकान्त ने हमदर्दी से कहा "मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ। आप पर चारों ओर से जोर पड रहा होगा कि मुकदमे की जाँच जल्दी खत्म की जाय।'

विद्यानाथ की आवाज मे रुखाई थी। उन्होंने कहा, 'मैं तो आपको सिफ बता रहा था कि हमारी ओर से जाच खत्म हो चुकी है।"

उमाकान्त ने कहा, 'पब्लिक की ओर से बहुत बहुत शुक्रिया। पर मैं समझता हूँ, दो-तीन दिन मामले को अगर आप और ठण्डा रहने दें तो शायद '

'आप कुछ और वक्त चाहते हैं ?"

'बॉस, आप भी तो चाहते हैं कि अन्याय न होने पाये।"

थोडी देर उधर से कोई आवाज नही आयी। इस बार उमाकान्त ने कहा, 'हलो !"

'मि० उमाकान्त !" विद्यानाथ की आवाज, जिसमे थकान-सी थी उसे सुनायी दी, 'अगर आप इसे बहुत ही लाजमी समझें तो मैं दो दिन और रुका रहूँगा।'

उमाकान्त हँसने लगा। कहा, "दुबारा पब्लिक की ओर से शुक्रिया।"

ठीक है, ठीक है।" कहकर विद्यानाथ शायद फोन रखने जा रहे थे, पर उमाकान्त ने टोककर कहा, "हलो बॉस, इस समय मैंने एक दूसरे मकसद से फोन किया था।"

"अभी कुछ और बाकी है ?"

"जी हाँ। मुझे बिल्कुल निजी तौर पर, आपके दफ्तर में एक पुराने मामले की जाँच की फाइल देखनी है।"

"कौन सा मामला ?"

"आपको याद होगा, दो साल पहले एक लड़की मलिना अपने कालेज से घर आते समय गायब हो गयी थी। बाद में उसकी कटी हुई लाश रेल की पटरी पर मिली। सी० आई० डी० ने उस मामले की जाँच की थी।"

"मुझे अच्छी तरह याद है। पर इन खुफिया फाइलों को आपको दिखाना ..."

उमाकान्त ने बात काटकर कहा, "प्लीज, बॉस। इतने वर्षों तक आप मुझ पर न जाने कितने मामलों में कितना विश्वास कर चुके हैं। क्या कभी भी आपको ऐसा लगा कि मैं आपके विश्वास के लायक नहीं हूँ ? और फिर, यह तो पुराना मामला है। खत्म हो चुका है।"

शायद वह कुछ हिचक रहे थे। पर जब उनकी आवाज फोन पर आयी तब साफ और दृढ़ थी। उन्होंने कहा, "आप मेरे दफ्तर में साढ़े दस बजे आ जाइएगा। और मेरे ही पास आइएगा।"

फिर वह हल्के ढंग से बोले "पर इस समय इन पुराने मामलों में फँसना क्या ठीक होगा ? अभी तो आप शायद अजीतसिंह की हत्या में दिलचस्पी दिखा रहे थे।"

उमाकान्त ने कहा, "आदत से लाचार हूँ। मेरे रास्ते में जो [illegible] आ जाता है मैं उसे ले लेता हूँ।" सहसा उसकी आवाज [illegible] की हो गयी, "थैंक्यू बॉस, मैं साढ़े दस बजे आपके पास [illegible]।"

साढ़े दस बजे से बारह बजे तक वह विद्यानाथ के [illegible] एक छोटे-से रिटायरिंग रूम में बैठा हुआ मलिना की [illegible] रहा। जाहिर था, विद्यानाथ ने अपने वक्तव्य को [illegible] कई गोपनीय कागजात पहले ही निकाल लिये थे। [illegible] काफी काम की बातें थीं। सी० आई० डी० [illegible] ने मिलकर मलिना को ढूँढने की पूरी कोशिश की थी। [illegible]

में, और लखनऊ म भी, कई जगह छापे मारे थे। उन्ही दिना साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' म एक सम्पादकीय छपा था 'भ्रष्टाचार के अड्डे'। इसमे शहर के एक बडे प्रसिद्ध महिला आश्रम के खिलाफ कई प्रकार के सन्देह प्रकट किय गय थे। सम्पादक ने लिखा था कि उस महिलाश्रम मे—जिस का नाम सभी जानत है और लिखने की जरूरत नहीं है—लडकियों को फँसाकर लाया जाता है। महिला आश्रम की इमारत पुरानी है और उसम कई ऐस कमरे हैं जिनम किसी भी लडकी को आसानी से छिपाकर रखा जा सकता है। उन्ह सस्था के प्रबन्धका और शहर के दूसरे रईसा के साथ पापाचरण के लिए मजबूर किया जाता है। यह सब कानून की निगाहा के नीचे बरसा स होता आ रहा है और '

सम्पादकीय म इस तरह स पुलिस की भी काफी निन्दा की गयी थी।

इस सम्पादकीय की कतरन फाइल मे मौजूद थी। इसके छपने के बाद सी० आई० डी० वालो न अजीतसिंह स बात की थी और पक्का कर लिया था कि उसका इशारा पावती महिला आश्रम की ओर है। इसका हवाला भी फाइल म था। उसी के दूसर दिन पुलिस न पावती महिला आश्रम पर छापा मारकर वहा की तलाशी ली थी। पर वहाँ मलिना नही मिली, न कोई ऐसी चीज ही मिली जिसम उस सस्था के खिलाफ कोई बात प्रमाणित होती। तलाशी के दूसरे दिन ही स्थानीय अखबारा म इसकी कडी निन्दा की गयी थी। कहा गया था कि पुलिस अपराध और भ्रष्टाचार के अड्डा पर निगाह नही डालती, वह सिफ पावती महिला आश्रम जसी पवित्र समाज सेवी सस्थाओ की तलाशी लेती ह ताकि लागो की निगाह म उन सस्थाओ की हैसियत गिर जाय और व दीन दुखी महिलाओ की जो सवा कर रही है उस छोडकर पुलिस के इशारो पर नाचना शुरु कर दें। इन पत्रा की भी कतरनें फाइल मे थी।

पावती महिला आश्रम की तलाशी के बाद तीसरे दिन मलिना की लाश रेल की पटरी पर कटी हुई मिली थी। उसके जिस्म के टुकडे टुकडे हो गय थे और धड का हिस्सा खत्म-सा हो चुका था। अत पोस्ट-माटम म कोई बात साफ नही हो पायी थी। यह जरूर था कि जिस्म के उन अलग अलग हिस्सा म पहियो की चोट से जितना भाग बचा था उस पर कोई दूसरी तरह की चोट न थी ' का '
नही था कि मलिना जिन्दा हालत मे रल

लिटायी गयी थी, या उसे पहले ही मार डाला गया था। फाइल मे मलिना की लाश के कुछ फोटो भी थे, और उसके जिस्म पर जो कपडे थे उनका विवरण भी। उमाकान्त ने अपने पास मे मलिना का फोटो निकालकर देखा, उस फोटो म वह वही कपडे पहने हुए थी—राजस्थानी घाघरा और ओढनी, जो मरने के समय उसके जिस्म पर थे।

सी० आई० डी० ने इस फाइल मे तरह आदमियो के नाम और उन की निजी जि दगी के ब्योरे भी लिख रखे थे। ये ब्योरे पढने से ही घिनौने दिखते थे। वे लोग शहर के मशहूर आदमी थे और शक था कि ये पावती महिला आश्रम म प्राय जाया करते हैं और वहा के मामलो मे अस्वाभाविक ढग की दिलचस्पी लेते है। मामले की जाच निराशा के वातावरण मे खत्म हुई थी। यह प्रमाणित नही हो सका था कि मलिना की हत्या की गयी है और न यही जाना जा सकता था कि गायब होने के पन्द्रह दिन बाद तक वह कहा रही। आखिर म, सी० आई० डी० ने इस सम्भावना का मान लिया था कि उसने आत्महत्या की होगी।

फाइल मे अखबारो की कई कतरनें थी। उनम लगभग सभी ने मलिना की फोटो भी छापी थी। कुछ फोटो नत्य की मुद्रा मे थे, कुछ म सिर्फ चेहरा दिखाया गया था। उमाकान्त न देखा, हर तसवीर म वह बहुत आकषक और सुन्दर दिख रही है। लगभग सभी तसवीरा म उसके चेहरे पर मुसकान थी पर उसकी सु दरता को हर तसवीर म उसकी आखा से धक्का लगा था। आखें बडी जरूर थी, पर ऐसा लगता था कि उन आखा म रोशनी नही है। नाच के समय आख जभी भी दिखती हा उन तसवीरो मे वे बडी ही साधारण जान पडती थी, लगभग भाव रहित।

उसन अपन पासवाले फोटो से इन तसवीरो का मुकाबला किया। इस फोटो मे मलिना का चेहरा खुशी स दमक रहा था, आखा म एक असाधारण सी चमक थी। उसके पास खडे हुए लोगा के चेहरे भी चमक रह थ। उमाकान्त के दिमाग म सहसा एक विचार कौधा—इन आखा की चमक का क्या कारण है? कही मलिना का कोई नशा तो नही पिलाया गया था? किसी बहाने उसे शराब न पिलायी गयी हो!

शराब का ख्याल आत ही उसने सोचा कि कही एसा न हा कि उस अफीम दी गयी हो। गहरी बेहोशी म उसे बाद म पता ही न चला हो कि उस कब अपनी जगह से हटाया गया, कब रेल की पटरी पर लिटाया गया।

अफीम अफीम अफीम !

उमाकान्त ने अपनी नोटबुक में कुछ आवश्यक बातों के नोट उतार लिये थे और विशेष रूप से उन तरह आदमियों के नाम ले लिये थे जो सी० आई० डी० की निगाह में पार्वती महिला आश्रम में गलत दिलचस्पी ले रहे थे। फाइल विद्यालय को वापस करके, उन्हें धन्यवाद देकर, लगभग साढ़े बारह बजे उमाकान्त अपने स्कूटर के साथ सड़क पर आ गया। रास्ते में एक छोटा सा पोस्ट आफिस पड़ता था। वहीं से उसने पार्वती महिला आश्रम को फोन मिलाया। एक महिला ने उधर से जवाब दिया। उमाकान्त ने कहा, "मैं आश्रम की सुपरिण्टेण्डेण्ट से बात करना चाहता हूँ।'

'मैं सुपरिण्टेण्टेण्ट ही बोल रही हूँ।'

उसने कहा, 'मैं उमाकान्त हूँ। शायद आपने मेरा नाम सुना हो। मैं पत्रकार हूँ। दिल्ली के 'क्रानिकलर' ने मुझसे खास तौर से निवेदन किया है कि मैं लखनऊ की समाज सेवी संस्थाओं पर एक लेखमाला तैयार करूँ। आपकी संस्था यहां सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अतः शुरुआत आपके यहां से ही करना चाहता हूँ। आपको आपत्ति न हो तो चार बजे मैं वहां आकर लेख की सामग्री तैयार कर लूं।"

"हमारे यहां मर्दों के आने की इजाजत नहीं है।"

उमाकान्त ने हँसकर कहा, 'पर मैं तो पत्रकार हूँ। पत्रकार न मर्द होता है, न औरत। वह तो सिर्फ पत्रकार रहता है।" फिर उसने गम्भीरता से कहा, 'सच तो यह है कि आपकी संस्था के बारे में मेरा लेख देश के एक मशहूर पत्र में छपेगा। मुझे पता नहीं कि आपकी आर्थिक स्थिति कैसी है। पर दूसरी संस्थाएँ तो खुशामद करके मुझसे ऐसे लेख लिखवाती हैं, ताकि उनमें संस्था को सहायता देने की अपील भी की जा सके। कुछ संस्थाओं को तो इसी तरह हजारों रुपये दान में मिले हैं।"

अधीक्षक की आवाज में अब वह दृढ़ता न थी। उसने कहा, पर हमारे यहां का नियम ऐसा ही है। मर्द यहाँ नहीं आ सकते। आपके लिए मुझे मैनेजर से पूछना पड़ेगा। पर वह भी शहर से बाहर गये हैं।" उसकी आवाज पहले की अपेक्षा मीठी हो गयी। बोली, 'आप अगर कल फोन कर लें तो "

" पर कल सुबह ही मैं पन्द्रह दिन के लिए दिल्ली जा रहा हूँ। आज अगर मैं आपके यहाँ आ सकता तो पूरी सामग्री के साथ दिल्ली जा सकूंगा।

वह लेख वहीं पूरा कर डालूगा। लेख क्या होगा, एक तरह की अपील कहिए। समाज सेवियं से अपील।'

कुछ क्षणों के लिए फोन पर सन्नाटा रहा। फिर उमाकान्त को उधर से सुनायी दिया, "तो आप चार बजे आ जायें। मैं मनेजर साहब को बाद में समझा दूंगी।'

फोन का रिसीवर रखकर वह फिर सड़क पर आ गया।

दो दिन पहले आंधी पानी आ जाने से आज लू नहीं चल रही थी, पर दोपहर बहुत तपन लगी थी। उमाकान्त के मत्थे पर बल पड़ गये थे और लगता था, वह किसी गुत्थी में उलझा हुआ है। दोपहर की तपन का उस पर कोई भी असर नहीं दिख रहा था। स्कूटर 'जनक्रान्ति' प्रेस के पास जाकर रुका। प्रेस का काम चालू था, मशीनें धड़ाधड़ चल रही थी। दो-तीन छोकरे कम्पोजीटर और मशीनमैनों की जगह बैठे अपना काम कर रहे थे। बूढ़ा कम्पोजीटर एक कुर्सी पर पड़ा पड़ा ऊँघ रहा था। उमाकान्त ने उसे जगाकर बड़ी आत्मीयता से नमस्ते की। उसने उमाकान्त को मोढ़े पर बैठने का इशारा करके कहा "इतनी जल्दी आपके लेख कैसे मिल सकते हैं? परसों ही तो आप उन्हें खोजकर गये हैं।

उमाकान्त ने उसे एक सिगरेट दी, एक खुद ली और दोनों को सुलगा कर बोला, "आज एक दूसरा काम लेकर आया हूँ। अजीतसिंह जी पर अभी तीन दिन पहले ही हमने एक शोक प्रस्ताव पास किया था अब मुझे उन पर एक लेख लिखना है। दो साल हुए उन्होंने देश की आर्थिक समस्याओं पर कुछ बड़े अच्छे सम्पादकीय लिखे थे। अपने लेख के सिलसिले में मेरा उन्हें पढ़ना बहुत जरूरी है।'

कम्पोजीटर के गले में सिगरेट का धुआं फँस गया था। खासते-खासते बोला,"तो यह कहिए, आप 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक देखना चाहते हैं।'

बुड्ढा कम्पोजीटर खासता हुआ एक अलमारी के पास गया और वहाँ से मोटी जिल्दों में तीन बड़ी बड़ी फाइलें उठा लाया। कहने लगा, 'ये पिछले तीन सालों के 'जनक्रान्ति' के अंक हैं। यहीं बैठकर देख लें।'

उमाकान्त ने एक जिल्द उठाकर पलटनी शुरू कर दी। उस पर निगाह डालते डालते ही उसने कहा "मुझे आपका फोटो भी चाहिए। अजीतसिंह पर कोई लेख आपका जिक्र किये बिना पूरा नहीं होगा। पर उसके लिए मुझे फिर आना होगा। अभी मैं कमरा नहीं लाया हूँ।

बुड्ढे के चेहरे पर झेंप और खुशी साथ-साथ फैल गया। वह आल

मूदकर कुर्सी पर बैठ गया। उमाकान्त 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक देखता रहा। मलिना की मत्यु के बाद भी 'जनक्रान्ति' के चार अंको म व्यभिचार के अड्डे के बारे में जोर शोर से लिखा गया था। उन लेखो म बताया गया था कि कुछ समाज सेवी संस्थाएँ किस तरह रईसो के अनाचार का अड्डा बनी हुई हैं। जनता स इस गन्दगी को खत्म करने की अपील की गयी थी। यह भी कहा गया था कि इन संस्थाओ के बारे म कई सच्ची कहानियाँ सम्पादक को लिखित रूप म मिल चुकी हैं। अजीतसिंह न लिखा था कि जरूरत पडने पर वह अपनी बातो का प्रमाण भी जनता के आगे पेश कर सकता है।

उसके बाद ही इस प्रकार के सम्पादकीय थान बन्द हो गय थे। उसकी जगह कुछ दिन बाद 'जनक्रान्ति' के आखिरी पष्ठ पर शहर के प्रमुख उद्योगपति और समाज सेवी व्यक्तियो के सचित्र परिचय छपने लगे थ। उमाकान्त न देखा कि नगर के उन प्रमुख उद्योगपतियों और समाज सेवियो मे ज्यादातर वही तरह लोग है जिनका नाम सी० आई० डी० न अपनी फाइल म दर्ज कर रखा था। पर अजीतसिंह न इन सभी के व्यवहार, आचरण और समाज सेवा की तारीफ की थी। मन ही मन उसने अजीत सिंह को एक भद्दी सी गाली दी। अजीतसिंह का ब्लकमेल का तरीका इतना साफ था कि ज्यादा छानबीन जरूरी नहीं थी।

बुड्डा कम्पोजीटर अब कुर्सी पर पडे पड ऊँघ गया था। उमाकान्त उसकी ओर पीठ करके मोढे पर बैठ गया। फिर उसन सात अंको म छप हुए सात प्रमुख उद्योगपति और समाजसेवी लोगो के परिचय उनकी तसवीरो के साथ, धीरे स फाडकर अपनी नोटबुक म रख लिये।

तीन बजे के लगभग वह अपन घर वापस पहुँचा। वहा उसन पहला फोन एक रेस्तराँ को किया जो उसके घर से दो सौ गज पर था। उसने मैनेजर से कहा 'हलीम साहब, आप मुझे जिन्दा देखना पसन्द करेंगे या मुर्दा?"

हलीम साहब न फोन के दूसर सिरे स दो बार 'इन्शा अल्लाह' कहा और 'कैसी मनहूस बात जबान स निकालते हैं जनाब' की इबारत दोहराई।

'तो ठीक है, अगर आपको मेरे जिन्दा रहन म दिलचस्पी है तो दस मिनट मे आप मेरा खाना यहीं भेज दें जी हा नुनिया।"

कहकर उसन फोन काट दिया और फिर बादशाह को मिलाया।

उधर स बादशाह की आवाज सुनते ही उमाकान्त बोला 'बादशाह,

तुमने बताया था कि अजीतसिंह के खून की रात जसवन्त अस्पताल से निकलकर जीप से दो तीन जगहा पर होता हुआ अपने घर वापस गया था। इसका आज ही पता लगवा लो कि वे दो तीन लाग कौन कौन थे। उनके नाम तो तुम्हारे पास हागे ही। यह भी मालूम करो कि वे लोग उस रात को जसवन्त से मिलन के बाद क्या करत रहे। और जिस जीप से जसवन्त घर वापस गया था वह जीप उस रात कहा रही। मैं जानता हूँ यह सब मुश्किल से ही मालूम होगा। पर तभी मैं यह तुमसे कह रहा हू, किसी और से नही। पूरी सूचना मुझे आज रात या कल सुबह तक मिल जानी चाहिए। दूसरा काम यह है कि आर्ट स कालेज मे किसी को भेजकर रवीन्द्र का खबर कर दो। हा, हा, वह रवीन्द्र जो वहा पेंटिंग सिखाता है उसे ही, कि आज रात के दस बजे मेरे घर आ जाये। हा, दस बजे। इसके बाद नहीं ही आये, पहले नहीं। एक बात और। अभी पाँच बजे शाम को तुम पावती महिला आश्रम के फाटक के पास आकर सड़क के दूसरी ओर मेरा इन्तजार करना। पाच के बाद मैं किसी भी वक्त आ जाऊँगा।"

अठारह

पावती महिला आश्रम के अन्दर एक बडे कमरे मे सिलाई की क्लास चल रही थी। आश्रम की लेडी सुपरिण्टण्डेण्ट और उमाकान्त के कमरे मे प्रवेश करते ही सभी छात्राएँ खडी हो गयी। छात्राओं की सख्या सोलह थी। उनमे तीन चार सत्रह अठारह साल की लडकियों को छोड़कर सभी प्रौढ महिलाएँ थी। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा "हम इन्हे सिलाई के डिप्लोमा के लिए तयार करते है। अगर इनमे किसी की शादी हो जाय, या वह आश्रम के बाहर स्वतन्त्र रूप स रहना चाहे तो उस सिलाई की एक मशीन मुफ्त म देते है।"

उमाकान्त न उन्हे अपनी अपनी जगह बठने का इशारा किया। सिलाई सिखानेवाली महिला स कहा, "क्लास को पहले की तरह चलाइए। मै ऐसा फोटो लेना चाहता हूँ जो कक्षा के लिए बिल्कुल स्वाभाविक हो।"

महिलाएँ जब बैठने लगी तब उमाकान्त ने पाया, उसकी निगाह अपने आप उनके पाँवो की ओर चली गयी हैं। यह मर्डर केस से हो रहा

था। जिस दिन वह बादशाह के साथ हरीसिंह से होटल में मिलने गया था, उसी दिन के बाद से उसकी आँखें बार-बार लोगों के पैरों की ओर खिंचने लगी थीं। उसने अपने आपसे अपना ही मजाक उडाते हुए कहा—दुनिया में करोड़ों पाँव गोरे होंगे। तुम अपनी निगाहों से कहाँ तक नापते रहोगे ?

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट कह रही थी "इनमें से कुछ लडकियाँ," वह आश्रम में रहनेवाली प्रत्येक स्त्री को लडकी ही कहती थी, "तो बहुत ही अभागी हैं। पर मैं आपको अभी आँकड़े देकर बताऊँगी, इससे भी ज्यादा कठिन मामलों में हम सफलता मिली है। अभी कल ही एक अनाथ लडकी की, जिसे लोग स्टेशन पर, क्या बताऊँ किस हालत में डाल गये थे, हम लोगों ने एक कारखाने के फोरमैन से शादी करायी है। साल भर यहाँ रहकर वह लडकी बिल्कुल ही बदल गयी थी।"

उमाकान्त सिर हिलाकर उसकी बात सुनता रहा और फोटो लेने के लिए अपना कैमरा ठीक करता रहा। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कम उम्र की एक गोरी लडकी की ओर आँख से इशारा करके अंग्रेजी में कहा, उसका केस तो बडा ही भयंकर है। आप जानते हैं खुद उसके बाप ने शराब पीकर ' लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने हिचककर अपनी बात अधूरी ही छोड दी।

यह वही लडकी थी जिसके पावों पर उमाकान्त की निगाह खास तौर से अटकी थी। उसके पाँव गोरे और सुडौल थे। हरीसिंह ने बुर्के से झाँकते हुए ऐसे ही पाँव देखे होंगे और उसका मन तडप उठा होगा—उमाकान्त ने सोचा। फिर मन ही मन अपनी कल्पना का मखौल सा उडाने लगा। उसने अलग अलग कोने से कक्षा के दो फोटो लिये। इस बात का ध्यान रखा कि एक फोटो में कक्षा की अध्यापिका और लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट जरूर आ जायें, दूसरे फोटो में उसने गोरे पाँववाली लडकी को इस तरह से शामिल किया कि उसका चेहरा भी साफ तौर से आ जाये।

मन ही मन उसने अपने आपसे तीसरी बार कहा कि यह बेवकूफी है। इस तरह अपराधी का पता नहीं चलेगा। इस शहर में कम से कम दो लाख औरतें ऐसी होंगी जिनके चिकने और गोरे पर देखकर हरीसिंह पागल हो सकता है। उसने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से सिलाई की मशीनों की संख्या और कक्षा की दूसरी जरूरतों की बाबत दो चार वाजिब

सवाल किये।

इसी तरह व वताई, बुनाई, ड्राइग, फल सरक्षण ग्रादि कक्षाम्रो का चक्कर लगाते रह । हर जगह उमाकात ने फोटो लिया । हर जगह लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट उसे बताती रही कि पिछले वर्षों से जब स वह ग्राश्रम मे ग्रायी है, कितनी महिलाम्रो का राजी दिलायी गयी, कितनी महिलाम्रो की शादियाँ हुई कितनी लडकियाँ गन्दी बीमारियो के साथ ग्रायी थी उन्हें नीरोग किया गया, कितनी लिखना-पढना नही जानती थी उन्हे धीरे धीरे जूनियर हाईस्कूल पास कराया गया।

उमाकान्त कभी-कभी खबर इस तरह की बातें ग्रपनी नोटबुक मे दज कर लेता । हर जगह वह ग्राश्रम म ग्रच्छी इमारत ग्रौर सामान की कमी का जिक्र करके लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को ग्राश्वासन देता रहा कि वह जनता का ध्यान सस्था की इन जरूरतो की ग्रोर ग्राकृष्ट करेगा । ग्राश्रम की इमारत शानदार, पर बहुत पुरानी थी । उन्नीसवी सदी मे वह किसी नवाब की कोठी रही थी । ग्राम सडक से वह बिल्कुल सटी हुई थी । उसके सामने कोई सहन न था । बाहर काफी ऊँचा महराबदार फाटक था, जिसमे, शायद बाद मे, लोहे के सीखचोवाले दरवाजे लगवा लिये गये थे । फाटक के ग्रन्दर सहन पडता था ग्रौर उसके बाद ही कोठी का भीतरी भाग शुरु हो जाता था । इमारत कही कही दोमजिली भी थी, पर ऊपर के कमरे ज्यादातर बन्द थे । दो जगहो पर बडे-बडे कमरा के पास उमाकात को नीचे की ग्रोर जाते हुए जीने दिखायी दिये । उसने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से कहा, "ये क्या तहखाने हैं ?"

"जी हाँ । गर्मियो मे पुराने नवाबो की ग्रारामगाह ।" उसने मुसकरा-कर जवाब दिया, 'ग्राजकल तो उधरवाले तहखाने मे लायब्रेरी है ग्रौर इधरवाले मे स्टोर ।"

"चलिए ग्रापकी लाइब्रेरी देख ली जाय ।" कहकर उमाकात तेजी से दूसरी ग्रोर के जीने की ग्रोर बढा ।

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पुकारकर कहा, 'तो पाँच मिनट बाद चलिए । दरग्रसल हमने ग्रभी लायब्रेरी का इस्तेमाल शुरू नही किया है। गर्मियो मे वहाँ काफी ठण्डक मिल जाती है, इसलिए वहीं लायब्रेरी रखने की बात सोच रहे है पर उसे दुरुस्त करने मे कुछ टाइम लगेगा ।

एक बुडढा मात्री सामने एक क्यारी मे काम कर रहा था उसे पुकारकर लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "नीचे के तहखाने म किसी को

ग्रादमी या जह

भेजकर लिखवा ला वहाँ ठीक से रोशनी है या नहीं। हम लोग अभी लौटकर आते हैं।'

फिर व लोग इमारत में दूसरे छोर पर उन कमरा को देखने गये जहाँ महिलाम्रा के रहने की जगह थी। उन कमरा का डार्मिटरी की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। कुछ एक पलग टूटे हुए थे। उमाकान्त ने कहा आपको कहीं स दस बीस हजार रुपये का दान मिल जाये तो य कमियाँ दूर हा जायें।"

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट लगभग चालीस साल की, छरहरे बदन की थी। वह अब भी काफी आकर्षक थी। इतनी देर म वह उमाकान्त को बता चुकी थी कि वह दिल्ली के स्कूल आफ सोशल वर्क स डिप्लोमा ले चुकी है वहीं की रहनेवाली है और अपने स्वतन्त्र स्वभाव के कारण और बाप से न पटने क कारण, यहाँ नौकरी कर रही है। दान का जिक्र आते ही उसने उमाकान्त को बडे आकर्षक ढग से देखा। बोली, "यह मेरी निजी बात है, किसी स बताइएगा नहीं। मैं चाहती हूँ कि अगर आप हमारी सस्था के लिए कोई दान दिला सकें ता उसकी लिखा पढी मुझी से की जाये। न जाने क्या पिछले साल स हमारे मैनेजर साहब को यही शिकायत रहती है कि मैं सस्था के लिए कुछ कर ही नहीं पाती। उस हालत म वे कम स-कम इतना तो मानेंगे ही कि खुद मैंने सस्था के लिए दान की रकम हासिल की है।"

"जरूर, जरूर!" उमाकान्त ने बतकल्लुफी से कहा, 'मेरी कोशिशो से जो भी दान सस्था को मिलेगा, वह आपकी ही माफ्त दिया जायगा।"

डार्मिटरी से बाहर आते ही इमारत की चहारदीवारी पर नजर पडती थी। उधर बूगनवेलिया की लतरें बहुत घनी होकर छायी थी। चहारदीवारी के उस पार एक मस्जिद की मीनारें दिखायी देती थी। दृश्य काफी लुभावना था। उमाकान्त न कमरा उठाकर आख से लगाया। लेडी सुपरिण्टण्डेण्ट न कहा 'आपका कैमरा बहुत कीमती दीखता है कौन-सा मेक है?"

उमाकान्त ने कमरा उसके हाथ की ओर बढाकर कहा "देख लीजिए। बल्कि ले सकती हैं तो एकाध फोटो आप भी खीच लीजिए।'

उसने कमरा हाथ मे न लिया और उसे घुमा फिराकर देखा। फिर उसे वापस करते हुए बोली, "थैंक यू।"

व लोग तहखाने की ओर बढने लगे थे। लेडी सुपरिण्टेण्डण्ट कहती

रही, "एक जमाने मे मुझे भी फोटोग्राफी का बडा शौक था। पर वह जमाना ही दूसरा था। उन दिनो डडी हागकाग म थे। उन्होने मरे लिए वही से कमरा भेजा था। मेर कुछ फोटोग्राफ एक बार दिल्ली की एक नुमायश म थी दिखाये गये थे "

उमाकान्त देख चुका था लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट का बात करने का शौक है, यह दिखाने का भी शौक है कि वह अपनी मौजूदा हैसियत से कही ज्यादा ऊँची जगह पर जाने लायक है। वह दिलचस्पी के साथ फोटोग्राफी के बारे म उसस बातें करता रहा। जब वे जीने से उतरकर लायब्रेरी वाले तहखाने मे आये वहा शायद सफाई की जा चुकी थी, चारा दीवारो पर ट्यूबलाइट जल रही थी। एक ओर छत के पास बडे-बडे दो जगले थे जिनसे दिन की रोशनी अन्दर आ रही थी। तहखाने का यह कमरा काफी बडा और प्रकाशपूण था। लायब्रेरी के नाम पर वहा एक मेज पर किताबा का एक ढेर भर पडा था। इधर उधर कुछ कुर्सिया पडी थी। लडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा मैंन बताया ही था '

उमाकान्त लौटकर तहखान के दरवाजे के पास जीने की पहली सीढ़ी पर आ गया था। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट कमरे के बीच म थी। अचानक उमाकान्त ने पलटकर कमरे पर सरसरी निगाह डाली और सामन की दीवार को एकटक दखने लगा।

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "क्या हुआ ?"

वह महज भाव से मुसकराया। बोला, "कुछ नही। [illegible], आप वही खडी रह। ऐसे ही।"

क्या ? कोई खास बात है ? पर उसकी आँखें [illegible] थी। वह शायद समझ गयी थी कि उमाकान्त उसका फोटो लेनेवाला था।

उमाकान्त ने बडे तकल्लुफ से अपने [illegible], हुए, जीने की पहली सीढी के पास दरवाजे म [illegible] सुपरिण्टेण्डेण्ट का फोटो लिया। पेशेवर फोटोग्राफरो की [illegible], "थैंक यू।

वह तेजी से सीढिया चढकर [illegible]। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट उसके पीछे पीछे थी। उसन कहा, 'मगर [illegible] आ गया। [illegible] धन्यवाद।'

एक लडकी न, जो वही [illegible] एक कागज उमाकान्त के [illegible] " आपने पिछले साल और [illegible]

वही है। वसे, पिछले साल की सूची हमारी वार्षिक रिपोर्ट मे भी शामिल है।"

उमाकान्त ने वहाँ स विदा लेनी चाही। लेडी सुपरिण्टण्डेण्ट न अपनी मुसकान का चारा ओर बिखेरत हुए कहा, "चाय ?"

'आज नही, मैडम। पर मैं चाय पीने का हक रिजव रखे जा रहा हूँ। किसी भी दिन आ जाऊँगा।"

"मोस्ट वलकम। पर पहले मेरे घर फान कर लीजिएगा।"

"यह तो मेरे लिए और भी खुशी की बात होगी। मैं तो इसलिए भी आऊँगा कि आपके खीचे फोटोग्राफ देख सकू। इस आर्ट मे मेरी भी थाडी-बहुत दिलचस्पी है।"

"जरूर आइए। मुझे भी बडी खुशी होगी।"

उमाका त को लगा, लडी सुपरिण्टेण्डेण्ट सचमुच ही उसस दुबारा मिलकर बहुत खुश होगी। बडी सदभावना के साथ वह बाहर आया। चलते-चलते उसने आश्वासन दिया कि आश्रम पर उसका लेख बहुत जल्द 'क्रानिकलर' मे आयेगा। मजाक म यह भी कहा कि उसका सबस आकषक अश लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट का फोटोग्राफ हागा।

शाम हा गयी थी। दो चार आवारा से दिखनेवाले आदमी महिला आश्रम के फाटक के पास टहल रह थे। उमाका त को देखकर व कुछ दूर चले गय। उमाका त ने उन पर विशेष ध्यान नही दिया। कुछ क्षणो के बाद उस बादशाह दिखायी पडा। वह उससे लगभग पचहत्तर गज की दूरी पर, सडक के उस पार एक ठेलेवाले से आइसक्रीम खरीदकर खा रहा था।

उमाका त से मिलत ही उसने कहा, उस्ताद, नयी खबर यह है कि सिद्दीकी ने मिस लायल का बयान ले लिया है।"

और हरीसिह का ?"

'उसका भी।

उमाका त ने कहा, 'माफ करना बादशाह, मैं तुम्हे पहले बता नही पाया। यह खबर मेरे लिए बहुत पुरानी है।" उसने मिस लायल से अपनी पिछली मुलाकात का पूरा हाल बता दिया।

दोनो फुटपाथ के दूसरे किनारे बिल्कुल एका त मे आ गय थ। उमाका त ने पूछा, 'सिद्दीकी अब क्या सोच रहा है ?

'उन दोनो का बयान लेने के बाद ही सिद्दीकी ने अपन एक दोस्त से कहा कि रूबी का बचना मुश्किल है। मुकदमा कोट म जाने ही वाला है।"

उमाकान्त ने कुछ रुककर एक सिगरेट जलायी। दोनों नथुनों से धुआँ निकालते हुए उसने कहा, "मतलब साफ है। हरीसिंह ने सी० आई० डी० को बता दिया है कि बुर्केवाली औरत वार्ड में दुबारा आयी थी। उसने उसके गोरे गोरे पावों की बात भी जरूर कही होगी। सिद्दीकी बहुत होशियार आदमी है। उसे यह समझने में देर न लगी होगी कि वह बुर्के वाली औरत जरीना नहीं हो सकती। उसके चेहरे का रंग सावला है और उसके पाव करीब करीब काले हैं। मुझे लगता है कि सिद्दीकी ने यह नतीजा निकाला है कि रूबी जरीना के जाने के बाद बुर्का पहनकर उसे जहर देने के लिए आयी थी। रूबी के पाव बिलकुल वैसे ही हैं, जैसे कि हरीसिंह ने देखे थे। सी० आई० डी० की तरफ से कहा जायेगा कि अगर रूबी ने बिना अपने को छिपाये हुए वार्ड में जाकर अजीतसिंह को जहर दिया होता तो वह बिलकुल ही पकड़ी जाती। लिहाजा उसने अजीतसिंह को वार्ड में एक बार देखकर मौके का नये सिरे से इन्तजार किया। जरीना अस्पताल में पहले से ही मौजूद थी। उसे देखकर रूबी ने भी एक बुर्के का इन्तजाम कर लिया और "

पर क्या रूबी के रिश्तेदार गवाही नहीं देंगे कि अस्पताल से वह सीधे घर गयी थी ? वे यह भी साबित कर देंगे कि गोलीकाण्ड के बाद वह एक मिनट के लिए भी अकेली नहीं रही कि कहीं से जहर ला सकती।"

उमाकान्त ने रुखाई से कहा, 'ये गवाह रूबी के रिश्तेदार हैं। अदालत मान सकती है कि वे रिश्ते के कारण, उसे बचाने के लिए, झूठी गवाही दे रहे हैं।' फिर अपने स्कूटर की ओर बढ़ते हुए उसने पूछा, तुम कार लाये हो ?"

'नहीं। आपके साथ चलना है न, उस्ताद।'

जब वे स्कूटर पर बैठकर चल दिये तब उमाकान्त ने पूछा, "रवीन्द्र को खबर करा दी ? उसे आज रात दस बजे तक मेरे घर आना है।"

"हाँ उस्ताद। वह ठीक दस पर आयेगा।"

"और जसवन्त के साथियों के बारे में ?"

बादशाह ने अफसोस से कहा, "बहुत मुश्किल है उस्ताद ! इतने दिन बाद, इतने कम समय में, यह बताना बहुत मुश्किल है कि वे लोग रात को कहाँ कहाँ गये। जसवन्त अस्पताल से निकलकर जिन जिनके घर गया, उनके नाम तो मालूम हैं। उससे आगे और कोई बात पता चलना बहुत मुश्किल है।"

"और जीप के बारे म ?"

"उसका पता चल जायेगा। मेरा एक पट्ठा जीप-ड्राइवर के पीछे चिपका हुआ है। पर ड्राइवर को फुरसत नहीं है। वह चुनाव म फँसा हुआ है। अभी साढे छह बजे से अमीनुद्दौला पार्क मे एक चुनाव-सभा हो रही है। इस वक्त जीप वहीं होनी चाहिए। ड्राइवर खाली होगा। तभी कोशिश की जायगी। मुझे उम्मीद है उस रात जीप की पूरी यात्राओं का हाल कल सवेरे तक हमारी हथेली मे होगा।'

'बहुत अच्छा।" उमाकान्त ने इस तरह कहा जैसे किसी शेर पर दाद दी हो।

एक चौराहे पर उसने स्कूटर बायीं ओर मोड दिया। बादशाह ने पूछा, "इधर कहाँ चल रहे हैं, उस्ताद ?"

"अमीनुद्दौला पार्क। हम लोग भी चुनाव-सभा देख लें।'

कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर बादशाह ने पूछा, "इस महिला आश्रम म कुछ मिला उस्ताद ?'

उमाकान्त ने कहा, "बहुत कुछ मिला है। बताऊँगा तो ताज्जुब म पड जाओगे!

"क्या हुआ ?" बादशाह ने 'उस्ताद' कहना भूलकर सीधे सादे ढंग से पूछा।

'अभी कुछ कहना मुश्किल है। रात मे इत्मीनान से बात की जायगी।"

अमीनुद्दौला पार्क के पास स्कूटर खडा करके वे लोग पार्क के अन्दर पहुँचे। वहाँ मंच पर एक नेता का भाषण हो रहा था। लगभग तीन हजार लोग जमा थे। उमाकान्त बादशाह के साथ धीरे धीरे मंच के बिल्कुल किनारे पहुँच गया। उसने देखा वहाँ शान्तिप्रकाश भी मौजूद हैं। वह चार पाँच आदमियों के साथ पीछे की ओर मंच के नीचे उतरकर पार्क के बाहर जा रहे हैं। उधर सडक पर एक जीप खडी थी। उनके साथ जसवन्त था दो आदमी और थे जो उन्हीं की पार्टी की ओर से चुनाव लड रहे थे। जसवन्त को देखते ही उमाकान्त ने बादशाह को इशारा किया। वह भीड मे पीछे छिप गया। उमाकान्त आगे बढा।

शान्तिप्रकाश कह रहे थे, "यहाँ की सभा तो चल निकली अब चलकर उस दूसरी सभा का भी हालचाल ले लिया जाय। पार्टी के हर उम्मीदवार का काम देखना है।"

उमाकान्त आगे बढकर शान्तिप्रकाश के सामने आ गया। नमस्कार

करके कहा, देखता हूँ अब से मेयर होने के दिन तक आपको एक मिनट की भी फुरसत नहीं है।"

वह मुहब्बत की हँसी हँसकर बोले, "और मैं देखता हूँ कि आपने मुझे अभी से मेयर बना दिया है। अरे भाई, अभी तो यह भी नहीं मालूम कि हमारी पार्टी मेयर के चुनाव के लिए अपना टिकट किस देगी ?"

उमाकान्त उनके पास आ गया। बोला, "पर मुझे मालूम है। पार्टी का टिकट श्री शान्तिप्रकाशजी को दिया जा रहा है।"

शान्तिप्रकाशजी की आँखें नकली आश्चर्य में फैल गयीं। वह इस तरह बोले जैसे शान्तिप्रकाश कोई तीसरे आदमी हों। कहने लगे, "भाई, अपनी पार्टी में उससे ज्यादा अच्छे दर्जे का आदमी मिल जायेंगे।'

ऐसा है ?' उमाकान्त ने कहा, 'तो इसी बात पर अपना इण्टरव्यू दे दीजिए।

"बहुत बहुत शुक्रिया भाई ! ' वह बोले, "पर बैठकर बात करने की अभी तो फुरसत नहीं है।'

'पर सोचिए तो आपका इण्टरव्यू अभी अखबारों में छपे तो ज्यादा फायदा होगा, या चुनाव के बाद ?"

शान्तिप्रकाश चलते चलते रुक गये। ठठाकर हँसते हुए बोले "बहुत सही प्वाइण्ट पकड़ा आपने। अच्छी बात है, समझ लीजिए कि इण्टरव्यू हो चुका। आप अपने मन से जो चाहे छाप दें। मेरी ओर से कोई उल्टी-सीधी बात आप थोड़े ही कहेंगे।"

शान्तिप्रकाश दुबले-पतले खूबसूरत आदमी थे। चुनाव के अभियान में वे और भी दुबले हो गये थे। उमाकान्त ने आगे बढ़कर उनका फोटो ले लिया और कहा, "अब सिर्फ दो सवाल। पहला यह कि पिछले तीन हफ्तों में आपने कितना वजन खोया ?"

वह फिर ठठाकर हँसे। बोले "आप पूछिए कि कितना वजन हासिल किया। पार्टी के लिए कम से-कम दो लाख वोटों का वजन हाथ लगा है।

उनके साथ वाले भी हँसने लगे। उमाकान्त ने उनके पास जाकर, उन्हें एक किनारे खींचते हुए उनके कान में पूछा, 'और दूसरा सवाल यह है कि आप सब कुछ जानते हुए भी जमकान्त जैसे आदमी का साथ देते हैं। क्या आपको नहीं मालूम कि वह "

शान्तिप्रकाश ने होंठों पर उँगली रखकर उमाकान्त को चुप होने का

ारा किया और उसके कान मे कहा, "बस, बस । ये बातें चुनाव के बाद
हैं, फुरसत से कभी घर आइए तो बताऊँगा।" फिर उन्होंने भाषण
सा देते हुए कहा, "आप तो जानते हैं, जिन्दगी मे फूलो के साथ काटो
भी निवाह करना पडता है।"

वे लोग तेजी से जीप की ओर बढने लगे। उमाकान्त ने कहा, "क्या
पको '

उन्होंने इशारे स मना करते हुए कहा, "नही उमाकान्तजी, आपके दो
ाल पूरे हो गय। अब तीसरा नही।"

'अच्छी बात है पर एक छोटे " उमाकान्त न कमरा आख के पास
जाकर क्लिक किया। शान्तिप्रकाश की मुसकान कुछ और चौडी हो
ो।

वे लोग जीप पर बैठकर चले गये। जसवन्त पीछे की सीट पर बठा
जीप जब आगे बढ गयी तो उसने उमाकान्त के साथ खडे हुए बादशाह
देखा और अपने एक साथी से कुछ कहते हुए बादशाह की ओर इशारा
या।

सूरज डूबने वाला था। उमाकान्त ने बादशाह से कहा, 'हम लोगो
अब यहाँ से अलग अलग जाना होगा। मैं अपने फोटोग्राफ इसी वक्त
वाने जा रहा हूँ। इसी ओर से मैं मोहन स्टूडियो मे रीलें देता हुआ
ल जाऊँगा। दस बजे तक वह तैयार कर देंगे। तुम दस बजे वहाँ स
टो लेकर घर आ जाना। तब तक शायद रवीन्द्र भी आ जायगा।

बादशाह न पूछा, रवीन्द्र को बुला तो लिया है, पर उसकी जरूरत
ा है?'

उमाकान्त न तत्काल कोई जवाब नही दिया। रुककर बोला, 'अभी
े खुद साफ नही मालूम। अभी मैं अँधेरे मे ही चल रहा हूँ। दस बजे
ना। जसवन्त के बारे म और भी कुछ मालूम हो सके, तो मालूम करते
ना। और, उस रात उसकी जीप कहा गयी, इसकी इत्तला तो मिलनी
चाहिए।'

रे दिन सवेरे ही उमाकान्त स्कूटर लेकर घर से बाहर निकल गया।
ने एक बार छबी स मिलने की कोशिश की, पर जेल वालो ने बताया
उस दिन मुलाकात नही हो सकेगी। वहा से वह हरिश्चन्द्र के घर गया
र उससे उन रिश्तदारा के बारे मे बात करता रहा जिनके यहाँ अजीत-

सिंह पर हमला होने के बाद रवी ने दो रातें बितायी थी।

दिन बहुत गर्म हो गया था और लू चलने लगी थी। हरिश्चन्द्र ने जिद करके अपनी कार की चाभी उसे दे दी और कहा, "ऐसे मौसम में स्कूटर पर चलना ठीक नहीं है।"

पिछले दो-तीन दिनों से उमाकान्त ठीक तरह से सो नहीं पाया था और उसकी आंखों के नीचे कालिमा पड़ने लगी थी। वह कोशिश करके अपने को समझाता रहा था कि वह बिल्कुल नहीं थका है, पर थकान धीरे धीरे उस पर हावी हो रही थी, इसलिए उसने अपना स्कूटर हरिश्चन्द्र के यहां ही छोड़ दिया और बाकी दिन उसकी कार पर चलता रहा। हरिश्चन्द्र ने भी उसके साथ चलना चाहा। पर उसने मना कर दिया।

लगभग तीन चार घण्टे वह दूर दूर बसे हुए मुहल्लों में जाकर नये नये लोगों से मिलता रहा। वह जसवन्त के घर भी गया। वहाँ उसे मालूम हुआ कि वह तो सूरज निकलने के पहले ही कहीं चला गया है। वहां से चलकर सबसे नजदीक के पब्लिक काल आफिस से उसने बादशाह को फोन किया और कहा कि जसवन्त का पता चाहे जैसे हो, जल्द से जल्द लगाया जाना चाहिए। उसने बादशाह को पांच बजे मुलाकात के लिए आने को भी कहा।

दो बजते-बजते वह आर्ट्स कालिज की ओर गया। रवीन्द्र वहीं शिक्षक था और उसका घर कालिज के पास ही था। इतवार का दिन होने के कारण कालिज बन्द था। वह सीधा रवीन्द्र के घर पहुँचा। रवीन्द्र उस समय अपने स्टूडियो में एक मेज पर कागज फैलाकर स्केचिंग कर रहा था। अपने काम में वह इस तरह खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कि उमाकान्त न कब कमरे का दरवाजा खोला और कब उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। रवीन्द्र के सामने मेज पर चार आदमियों के फोटोग्राफ रखे थे। इनमें सभी प्रौढ़ अवस्था के लोग थे। ज्यादातर सभी की दाढ़ी मूछ साफ थी। पर तीन फोटो ऐसे भी थे जिनमें लोगों ने मूछें रख छोड़ी थीं। किसी भी फोटो में कोई दाढ़ीवाला आदमी नहीं था।

दो फोटो मेज के एक ओर रखे थे। उनमें रवीन्द्र ने मुंडी हुई ठुड्डी पर अपनी स्केचिंग पेंसिल से निहायत खूबसूरत फ्रेंचकट दाढ़ी जोड़ दी थी। इस समय वह तीसरी तसवीर के चेहरे पर उसी तरह दाढ़ी जोड़ रहा था।

पीछे मुडकर उमाकान्त को देखते ही वह मुसकराया। बोला, "आप कब से खडे हैं, भाइ साहब ?'

उमाकान्त ने कहा, "इधर से निकल रहा था। सोचा तुम्हारा काम खत्म हो गया हो तो तसवीरें लेता चलू। पर आप तो अभी योग साधे हुए है। कितना टाइम लगेगा ?"

'कम से-कम तीन घण्ट।" कहकर रवीन्द्र ने पेंसिल रख दी और कहा, 'पर आइए पहले हम लोग एक एक प्याला काफी खीच लें।"

'नही, डियर। अभी नही। पहले तुम अपना काम खत्म कर लो। और कोशिश करना, पाच बजे तक हमारे यहाँ तसवीरें आ जरूर जायें।"

कहकर उमाकान्त ने सीधा अपने घर लौट आया। ढाई बज चुके थे। उसने पडोसवाले होटल को टलीफोन करके गम सूप और आमलेट मगाया। डबलरोटी घर पर ही पडी थी। हल्का खाना खाकर उसने अपने लिए काफी का प्याला रखकर, बिस्तर के सिरहाने से अपनी पीठ टिका कर आराम से सिगरेट पीता रहा। उसके आसपास बिस्तर पर ही कुछ लिफाफे और कागज फैले हुए थे। थोडी देर बाद वह एक कागज लेकर पेंसिल से कुछ लिखने लगा। वास्तव में लिखा उसने बहुत कम। हाथ में पेंसिल लेकर वह काफी देर तक चुपचाप बैठा रहता और बाद में कागज पर एकाध शब्द लिख लेता।

कुछ देर मे उसने घडी की ओर देखा। पाँच बजनेवाले थे। उसने बादशाह का फोन मिलाया। उधर से जवाब मिला कि वह होटल छोडकर अभी अभी कही चला गया है। वह फिर कुछ देर के लिए अपने कागजों में खो गया। तभी बादशाह ने दरवाजा खोला। माथे का पसीना पोछते हुए वह उमाकान्त के सामने आकर कुर्सी पर बैठ गया और बोला, कल वाले फोटोग्राफ मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ।

उमाकान्त ने एक बडा लिफाफा उठाकर उसकी ओर बढाया और कहा, "कल रात तुम उन्हे एक बार देख तो चुके ही हो। पर अभी मैंने तुम्हे फिर इसलिए बुलाया था, मैं खुद चाहता था, तुम एक बार इन्हे फिर से देख लो।'

बादशाह ने लिफाफे से कई फोटो निकाले और उन्हे एक एक करके देखने लगा। ये वे ही फोटो थे जो कल शाम उमाकान्त ने पार्वती महिला आश्रम में और अमीनुद्दौला पार्क में खीचे थे। बादशाह ने एक बार सब फोटो देख डाले और फिर उन्हे दुबारा देखना शुरू किया। देखते देखते वह पार्वती

महिला आश्रम की लडी सुपरिण्टेण्डण्ट के फोटो को लेकर रख गया। उस वह काफी देर तक देखता रहा। कमर ने उसके चेहरे को एक ऐसी मुद्रा में पकडा था जिससे वह बहुत ही कम उम्र की मालूम देती थी। कोई सोच भी नही सकता था, वह चालीस साल की होगी। तसवीर में वह एक छरहरे बदन की पचीस साल की युवती जैसी दीखती थी।

बादशाह ने तसवीर से निगाह नही हटाई। धीरे से कहा उस्ताद मलिना वाली वह तसवीर देना वही तसवीर जिसमें वह अपने तीन तिलंगों के साथ खडी हुई है।

उमाकान्त ने वह तसवीर निकालकर दे दी। बादशाह की प्रशंसा के लिए उसके चेहरे पर एक बहुत घरेलू मुसकान खेलने लगी। बोला इसे कहते हैं उस्तादो की नजर।

बादशाह उन दोनो तसवीरो का मुकाबला करके देख रहा था। थोडी देर गौर से देखने चुकने के बाद उसने उन्हें मेज पर रख दिया और कहा बडी भयकर बात है उस्ताद। इसका मतलब तो यह हुआ कि मलिना को सोहा मिलने के पहले उसे कुछ दिन पार्वती महिला आश्रम में रखा गया था। वह टकटकी बाँधकर उमाकान्त को देख रहा था।

उमाकान्त ने एक सिगरेट जला ली थी। सिर हिलाते हुए उसने धीरे से कहा हाँ यही जान पडता है। महिला आश्रम में दो तहखाने है। उनमें से एक में इस वक्त आश्रम का स्टोर है। दूसरे में लाइब्रेरी बनने जा रही है। लाइब्रेरी वाले तहखाने में जाते ही कल मुझे ऐसा लगा किसी को छिपाने के लिए वह आदर्श जगह हो सकती है। आश्रम में रहनेवाली महिलाओं की डारमिटरी उस जगह से काफी दूर है। तहखाने में बिना हिचक के कुछ भी किया जा सकता है। कल वहा पहुचते ही मुझे अपने मन में एक उलझन का अहसास हुआ था। इसे भाग्य की ही बात मानना चाहिए कि मलिना की फाइल देखकर और जनश्रुति के पुराने अक पढकर मैं इस नतीजे पर पहुँचा था कि मुझे पार्वती महिला आश्रम को अन्दर से देखना चाहिए। वहा पहुचते ही मुझे लगा कि यहा सब कुछ ठीक नहीं है। आश्रम का खर्चा ज्यादातर चन्दे से चलता है। चन्दा देनेवालो की सूची देखकर मेरा शक और भी मजबूत हो गया।

चन्दा देनेवालो में बहुत से ऐसे हैं जिन्हे हम सभी शहर के मशहूर व्यभिचारियो में शुमार करते है। उन सभी के पास बेशुमार पैसा है। तहखाने में पहुँचते ही मुझे अचम्भा सा हुआ। लगा इस जगह को मैं जानता

हूँ। यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसा मुझे पहली बार जसवन्त को देखकर लगा था। उसका चेहरा देखते ही मुझे जान पडा था कि मैंने उसे पहले कहीं देखा है, हालांकि उस वक्त मुझे उसकी मूछवाली तसवीर की याद नही आयी थी। इस तहखाने मे भी मुझे वैसा ही जान पडा। पर लेडी सुप रिटण्डेण्ट उस वक्त बराबर कुछ कहती जा रही थी इसलिए मैं ध्यान देकर सोच नही पा रहा था। पर यह हालत काफी दर नही रही। दरवाजे के पास जीन की पहली सीढी तक पहुँचत पहुँचत मैं जान गया कि तहखाने वाले इस कमरे को मैंने पहले भी देखा है। वास्तव मे सामने की दीवार पर नक्काशीदार दरवाजेवाली एक अलमारी है। उसी ने मेरे लिए सब कुछ आसान कर दिया। यह अलमारी मलिना वाली इस फोटो मे आ गयी है। उसे देखते ही मुझे याद आ गया, इस कमरे की तसवीर मैंने देखी है। तभी मैंने लडी सुपरिण्टण्डेण्ट को कमरे के बीच म खडा करके उसका फोटो इस ढग से ले लिया कि अलमारी भी उसमे आ जाय।

मैंने तुम्हे यह घटना जान-बूझकर नही बतायी थी। मैं दखना चाहता था कि दानो तसवीरें देखकर तुम्हारी भी प्रतिक्रिया मरी ही जैसी होती है या नही। अब तो बात साफ हा गयी है। मलिना वाली फोटो और लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट की यह फोटो—दोना एक ही बैकग्राउण्ड मे ली गयी हैं। मलिना की फाटो भी उसी तहखाने म ली गयी थी। ये तीनो आदमी उसके साथ उसी तहखान म थे।'

कुछ देर दोना चुपचाप बठे रह। आखिर मे बादशाह ने कहा, "इस सबसे ता लगता है मलिना के मामले की जाच फिर स होनी चाहिए। हम पुलिस को बताना होगा। मलिना के मामले म जसवन्त के खिलाफ इतना सबूत मिल चुका है ।'

'पर हम लाग इस वक्त मलिना के मामले की नही, अजीतसिह की हत्या की छानबीन कर रह हैं।"

बादशाह उमाकान्त को कुछ दर स्थिर निगाहो स देखता रहा। बोला "इसका क्या मतलब है ? क्या इसका कोई सम्बन्ध अजीतसिह की हत्या से भी है ?'

उमाकान्त आँखें सिकोडकर कुछ सोच रहा था। धीरे से बोला, मैं नही जानता। सच ता यह है कि मैं नही जानता।"

तभी दरवाजा खालकर रवीन्द्र अन्दर आया। उसने एक बडा सा लिफाफा उमाकान्त को देत हुए कहा, "लीजिए, आपके स्केच तयार हैं।'

उन्होंने अदली को बुलाया और बोले, "कोतवाली से फोन मिलाओ।" अदली जब तक फोन मिला रहा था, उन्होंने सिद्दीकी से कहा, "मैं भूप सिंह को यहीं बुला रहा हूँ। वह तुम्हें लेकर सीधे उमाकान्त के घर जायगा। उसके साथ तुम्हें दो एक घरों में तलाशी लेनी होगी।"

इंस्पेक्टर भूपसिंह कोतवाली का इंचार्ज था। सिद्दीकी ने विनम्रता से कहा "पर अजीतसिंह के मामले की जांच तो खत्म हो चुकी है। उसमें कोई नयी गुंजायश तो मालूम नहीं पड़ती।"

विद्यानाथ तब तक फोन पर भूपसिंह से बात करने लगे थे। उनकी बात बहुत जल्दी खत्म हो गयी। फोन रखने के पहले वह बोले, 'ठीक है मैं इन्तजार कर रहा हूँ। उम्मीद है सात मिनट में तुम यहाँ आ जाओगे।" फोन रखकर सिद्दीकी की ओर देखा और बोला, 'रूबी के खिलाफ जो सबूत मिला है, उसे तुम कैसा समझते हो?'

'कह नहीं सकता कि अदालत का क्या रुख होगा। पर हमने पूरी कोशिश की है।'

विद्यानाथ बोले "हत्या करने का मोटिव (कारण) तो पूरी तरह साबित है। पर हत्या को साबित करने के लिए हमारे पास कुछ परिस्थितियाँ भर हैं। और जानते ही हो, परिस्थितियों के सबूत को लेकर कानून हमसे बड़ी जबदस्त माँग करता है।

सिद्दीकी कुछ नहीं बोला।

विद्यानाथ कहते रहे तुमने बाद में हरीसिंह और मिस लायल का भी बयान लिया है। इससे रूबी के खिलाफ मुकदमे का एक नया पहलू खुलता है। इससे पता चलता है कि वार्ड में वह दुबारा आयी थी और बुर्का डालकर आयी थी। पर इससे यह भी साबित होता है कि यह बयान लेने के पहले हमें सही घटना का पता नहीं था। उस हालत में हो सकता है कि सही घटना का हमें अब भी पता न हो।"

सिद्दीकी ने कहा, 'सर तभी तो अब तक हमने अपनी तफतीश खत्म नहीं की है।"

बँगले के बाहर एक जीप आकर रुकी। विद्यानाथ और सिद्दीकी कमरे में निकलकर बरामदे में आ गये। भूपसिंह जीप से उतर रहा था। पर विद्यानाथ ने आगे बढ़कर उसे रोक दिया। उसका सल्यूट अधूरा ही रह गया। थोड़ी देर वह उस जीप के पास ही धीरे धीरे कुछ समझाते रहे। फिर जीप सिद्दीकी को लेकर उमाकान्त के घर की ओर चल दी।

जीप के मकान के सामने पहुँचते ही उमाकान्त और बादशाह बाहर निकल आये। ग्राटिस्ट रवीन्द्र वर्मा से पहले ही जा चुका था। भूपसिंह और सिद्दीकी से अभिवादन करके उसने अपने दरवाजे पर ताला लगाया और जीप की आगेवाली सीट पर बैठ गया। भूपसिंह ड्राइव कर रहा था। उनके बीच में सिद्दीकी था। बादशाह पीछे सिपाहियों के साथ बैठा था। सिद्दीकी ने कहा, 'इस वक्त आप हमारे बास हैं। हुक्म दीजिए, किधर चला जाये ?"

उमाकान्त ने गम्भीरता से कहा, "हममें से कोई किसी का बास नहीं। हम दोनों ही गुलाम हैं। अपने अपने ढंग से जनता की गुलामी कर रहे हैं, और इसी में हमारी इज्जत है।

भूपसिंह अब कुछ नहीं बोला था। उमाकान्त उसके बारे में जानता था कि वह बहुत मुस्तैद और नेपड़क पुलिस ग्राफिसर है। उसके बारे में मशहूर था कि वह एक खामोश मशीन की तरह काम करता है और जहाँ तक बन, अपने शब्द नहीं बरबाद करता। वह छह फुट से भी ज्यादा लम्बा था और उसके सुडौल बदन में चीते जसी फुर्ती थी। उमाकान्त को बड़ी खुशी हुई कि विद्यानाथ ने भूपसिंह को उसके साथ के लिए भेजा है।

अब भूपसिंह ने पहली बार मुँह खोला। कहा, "आगे चलने के पहले यह ज्यादा अच्छा होगा कि आप समझा दें, हमें कहाँ जाना है और क्या करना है ?"

उमाकान्त बोला, "अभी हम लोग जसवन्त के यहाँ जायेंगे। जसवन्त को आप जानते ही हैं। वह कार्पोरेटर बननेवाला है। हम उसके घर की तलाशी लेनी होगी। मुझे शक है कि अजीतसिंह की ही नहीं, कुछ और हत्याओं का सबूत भी हमें उसके यहाँ मिल सकता है। अगर सबूत मिल गया तो उसे आप अपने आप गिरफ्तार करेंगे। अगर जसवन्त घर पर न मिला तो हमें अभी तलाशी का ख्याल छोड़कर आगे बढ़ जाना होगा।"

"वहाँ से हम कहाँ चलेंगे ?"

"इसके बारे में वहीं बता सकूंगा।'

भूपसिंह ने गम्भीरता से पूरी बात सुनी। सिर्फ सिर हिलाकर इशारा किया कि वह समझ गया है। जीप जसवन्त के मकान की ओर चल दी।

बाजार की भीड़ भाड़, रिक्शे और पैदल आदमियों की ठेलमठेल और खोमचेवालों के चक्रव्यूह को तोड़ती हुई पुलिस की जीप धीरे-धीरे ही आगे बढ़ पा रही थी। जसवन्त के मकान तक पहुँचते-पहुँचते आध घण्टा

लग गया। जीप वहाँ से लगभग सौ गज पहले ही रुक गयी।

उमाकान्त ने सिद्दीकी से कहा, 'कृपया पता लगवा लें, जसवन्त घर पर है भी या नहीं।"

वह बोला, "मैं खुद देखता हूँ।"

सिद्दीकी गाडी से उतरकर जसवन्त के मकान की ओर चला गया। उमाकान्त ने भूपसिंह से कहा, "मैं आपको पहले ही आगाह कर देना चाहता हूँ, और साथ ही माफी माँग लेना चाहता हूँ। मैं यह पूरी कारवाई एक सन्देह पर कर रहा हूँ। बहुत मुमकिन है कि मेरा सन्देह गलत हो। उस हालत में आपकी मेहनत बेकार जायगी, और हो सकता है, पुलिस को कुछ बदनामी भी सहनी पड़े। पर ज्यादा उम्मीद यही है कि मैं सही रास्ते पर चल रहा हूँ और "

भूपसिंह ने संक्षेप में कहा, "मैं अपने सुपीरियर्स के हुक्म पर चल रहा हूँ, इतना मेरे लिए काफी है। नेकनामी-बदनामी से मेरा कोई सरोकार नहीं।'

थोडी देर में सिद्दीकी तेजी से बढ़ता हुआ वापस लौटा। उमाकान्त ने उसके बैठने के लिए जगह कर दी। सिद्दीकी ने कहा, "जसवन्त आज सुबह चार बजे ही घर से निकल गया है। वह अपने साथ दो अटैची-केस ले गया है। अभी तक वापस नहीं लौटा है और उसके घरवालों का ख्याल है कि वह शहर से बाहर कहीं गया है। पर उन्हें भी पता नहीं कि कहाँ।"

बादशाह ने सीट के पीछे से कहा, "मुझे पहले ही शुबहा था।" भूपसिंह ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। पूछा, "अब कहाँ जाना है?"

उमाकान्त ने कहा "शान्तिप्रकाश जी के यहाँ जसवन्त आजकल उन्हीं की मदद से चुनाव लड़ रहा है और प्रायः उन्हीं के साथ रहता है। अजब नहीं कि वह उनके बँगले पर ही हो।'

शान्तिप्रकाश का बँगला वहाँ से लगभग चार मील पडता था और रास्ते में सड़क पर वैसी ही भीड़-भाड़ थी। वहाँ पहुँचते पहुँचते उन लोगों को फिर आधा घण्टा लग गया। वे जब वहाँ पहुँचे तब सूरज डूब चुका था।

वहाँ भी उन्होंने जीप बँगले से पहले ही रोक दी। गाडी से नीचे उतरकर उमाकान्त ने भूपसिंह और सिद्दीकी से लगभग चार मिनट तक धीरे-धीरे बातें कीं। उनके साथ पुलिस के छह सिपाही थे। दो सिपाही दूसरी

ओर से चलकर बँगले के पीछे पहुँच गये। उन्हें हिदायत दी गयी थी कि व बँगले के पिछवाड़े की ओर कड़ी निगाह रखें, और अगर कोई उधर से निकलता हुआ दिखायी दे तो उसे रोक लें। बाकी लोग सामने से बँगले के अन्दर पहुँच गये।

शान्तिप्रकाश उस समय सामने की बैठक मे चार पाच आदमियो के साथ बैठे बात कर रहे थे। बातचीत का विषय शायद कार्पोरेशन का चुनाव ही था। कमरे मे कूलर लगा हुआ था। काफी ठण्डक थी। वे काफी प्रसन्न दीख रहे थे। उमाकान्त, सिद्दीकी, बादशाह और पुलिस के सिपाही बैठक से लगे हुए दूसरे कमरे के सामने खड़े हो गये। उसके दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था, पर किवाड़ खुले हुए थे। भूपसिंह ने बैठक के सामने जाकर शान्तिप्रकाश को नमस्कार किया। उन्होंने बड़े उत्साह से उठकर कहा, "ओह, भूपसिंह जी! आइए आइए, कैसे तकलीफ की।"

वह कमरे के अन्दर पहुँचकर धीरे से बोला, "एक जरूरी काम है। एक मिनट के लिए बाहर आ जायें।' वे जैसे ही बाहर आये, भूपसिंह उन्हें साथ लेकर बगल के कमरे के पास चला आया। पुलिस को देखकर शान्तिप्रकाश अचकचाये। बोले, 'कहिए क्या बात है?" अचानक उमाकान्त का एक ओर देखकर उनकी खुशी चेहरे पर लौट आयी। उन्होंने कहा, "और आप? आप यहा कहाँ? उधर बैठक मे आइए।"

पर उमाकान्त ने कोई जवाब नही दिया। सिर्फ उनका हाथ मजबूती से पकड़कर सामने के दरवाजे का पर्दा उठाते हुए उन्हें अन्दर खीच लाया। यह कमरा घर के दफ्तर की तरह इस्तेमाल होता था और उसमें इस वक्त कोई न था। उनके साथ पुलिस-पार्टी के बाकी लोग भी कमरे के अन्दर आ गये। भूपसिंह ने कहा, "जसवन्त शायद आपके बँगले मे छिपा हुआ है। हमे तलाशी लेनी है।

"पर मेरा जसवन्त से क्या मतलब? यहाँ आप तलाशी कैसे ले सकते हैं?" उन्होने जोर से कहा। पर दफ्तरवाले कमरे मे शान्तिप्रकाश को उन लोगो से प्रतिवाद करने का मौका नही मिला। सिद्दीकी, भूपसिंह और उमाकान्त तब तक अन्दरवाले कमरे मे पहुँच गये थे। शान्तिप्रकाश हाफ्ते हुए उन लोगो के पीछे पीछे भागे। बोले, "उधर मत जाइए। उधर हमारा बेडरूम है। घर की स्त्रियाँ होगी।'

बाहर के ड्राइगरूम मे बैठे हुए लोगो मे कुछ कसमसाहट पैदा हो गयी थी। दो-एक लोग बाहर निकलकर बरामदे मे आ गये थे। दो सिपाही

उनकी ओर बढ आये। उनमे से एक ने उन्हें धीरे-से ड्राइंगरूम की ओर खीच लिया और कहा, 'आप लोग अभी बाहर न आयें। चुपचाप यही बैठे रहें। एक मुल्जिम की खोज की जा रही है। दस मिनट मे आप जहा चाहें, जा सकेंगे।" लोग थोडी देर के लिए सन्नाटे मे आ गये। फिर धीरे-धीरे उन्होंने आपस मे बातें करनी शुरू कर दी।

मकान के अन्दर शान्तिप्रकाश ने दुबारा आवाज दी, "उधर हमारा बेडरूम है। लेडीज होगी। आप इस तरह अन्दर नही जा सकते।"

उमाकान्त ने अन्दर के कमरे का दरवाजा खोलते हुए अपने सिर को मोडकर कहा, "आप झूठ बोल रहे हैं, शान्तिप्रकाश जी! आपके परिवार के सब लोग तो बहुत पहले नैनीताल जा चुके हैं। इस वक्त आप यहा अकेले रह रहे हैं।"

दरवाजा खोलते ही वह झिझककर पीछे हट आया। पर एक क्षण बाद ही उसने पूरा दरवाजा खोलकर भूपसिंह से कहा, 'आप आगे चलिए।"

यह कमरा काफी बडा था और बेडरूम के रूप मे इस्तेमाल होता था। कमरा नवीनतम ढग से सजाया गया था। पर उन लोगो की निगाह सजावट पर नही गयी। सभी ने अन्दर घुसते ही सबसे पहले एक छरहरे बदन की औरत को देखा जो कमरे के दूसरे छोर पर ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी मेक अप कर रही थी।

दरवाजा खुलते ही उन लोगो की परछाइ सामने के शीशे मे पडी। औरत ने चौंककर पीछे देखा और इतने लोगो को एकसाथ बेडरूम मे घुसते हुए देखकर वह अचानक खडी हो गयी।

औरत की उम्र का अन्दाजा लगाना मुश्किल था। पर वह तीस साल आसानी से पार कर गयी होगी। उसका गेहुँआ रग था और आँखें बडी बडी थी। चेहरा तो सुन्दर था ही, पर उम्र के बावजूद उसके छरहरे शरीर का गठन बहुत ही आकर्षक था। इस वक्त उसके जिस्म पर सिर्फ एक झीनी-सी नमीज थी। उसने झपटकर बिस्तर पर पडा हुआ एक गाउन उठा लिया और अपने को उससे ढँक लिया। फिर वह घूमी। घबराकर उसने इन लोगों की तरफ देखा और कुछ बोलने के लिए मुह खोला। तब तक भूपसिंह और सिद्दीकी उसके पास आ गये थे। भूपसिंह ने पूछा, 'तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है?'

पीछे से शान्तिप्रकाश ने कडी आवाज मे कहा, 'मिस्टर भूपसिंह, उसे परेशान मत कीजिए। वह हमारे एक दोस्त की लडकी है। आज ही दिल्ली

से ग्रायी है।"

उन्होंने चीखना शुरू कर दिया, 'इस वक्त ग्राप हमारे विरोधियों से मिलकर हमें जलील कर रहे हैं। पर याद रखिए, कानून सबके लिये बराबर है। ग्रापसे मैं इसका पूरा पूरा बदला लूगा।"

दो सिपाहियों ने उन्हें मजबूती से पकड रखा था। वह ग्रागे बढना चाहते थे, पर तिलमिलाते हुए ग्रपनी जगह खडे रहे। भूपसिंह के सवाल से वह ग्रौरत ग्रौर भी घबरा गयी थी। उसने पहले की तरह ही ग्रपना सवाल दोहराया। पूछा, 'तुम्हारा नाम ?"

तब तक उमाकान्त उनके पास ग्रा गया था। उसने भूपसिंह से कहा, 'मैं बताता हूँ। इनका नाम कुमारी वीणा गहलौत है। यह यहां पावती महिलाश्रम की सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं।"

वीणा के कुछ बोलने से पहले ही उसने कहा, "गुड ईवनिंग, मिस गहलौत! ग्रापसे इस खूबसूरत बेडरूम में मिलकर बडी खुशी हुई। यकीन मानिए, मैं ग्रापसे कुछ ऐसी ही जगह मिलने का ख्वाब देख रहा था।'

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने नफरत के साथ कहा, 'तुम! तुम पुलिस के साथ हो ?"

'जी हाँ, मैडम, जिस तरह ग्राप हत्यारों के साथ हैं।'

उसके जवाब देने से पहले ही उमाकान्त ने भूपसिंह से कहा, 'इन्हें यहीं रोकिये। इनसे बहुत बातें करनी हैं। तब तक हम लोग दूसरे कमरों की तलाशी ले लें। "सिद्दीकी साहब," उसने पीछे खडे हुए सिद्दीकी से घूमकर कहा, 'तब तक ग्राप इनसे बातचीत कीजिए। पहले शायद यह ग्रजीत सिंह के बेडरूम में जाकर कपडे बदलती थीं। ग्रापको इसमें काफी दिलचस्पी होनी चाहिए।'

कहकर वह भूपसिंह के साथ ग्रागे बढ गया। उसी कमरे से मिला हुग्रा एक दूसरा बेडरूम था। उसके ग्रन्दर जाते जाते भूपसिंह ने पुकारकर कहा, "शान्तिप्रकाश जी ग्राप हमारे साथ ग्राइए।"

शान्तिप्रकाश के मुँह से बेतहाशा कडी बातें निकल रही थीं। वह उनके पीछे पीछे दूसरे बेडरूम में ग्राये ग्रौर बोले, 'ग्रब तो ग्रापने देख लिया। यहां जसवन्त कहीं नहीं है। मेरे चुनाव का चौपट करने के लिए इतनी बेइज्जती बहुत है। ग्रब ग्राप लोग बाहर निकल जाइए।"

तब तक इस बेडरूम में दीवार में लगी हुई एक बडे से वार्डरोब का दरवाजा उमाकान्त ने खोल दिया था। उसमें शान्तिप्रकाश के कपडे

टँगे थे। नीचे के एक खाने मे उनके जूते और चप्पलें रखी थी। उमाकान्त एक एक चीज को पैनी निगाह से देख रहा था। अचानक उसकी निगाह जूतोवाले खाने पर आकर स्थिर हो गयी। उसने मुडकर भूपसिंह को पुकारा और कहा, "उन चप्पलो को आप देख रहे हैं ? उन्हें बाहर निकाल लीजिए।'

वाडरोब मे सभी मर्दाने कपडो, जूता चप्पलो आदि के बीच ये जनानी चप्पलें सुनहरे काम की थी और दूर से ही झलक रही थी। उनकी ओर और उमाकान्त की ओर घूरते हुए शान्तिप्रकाश ने कडककर कहा, "खबरदार, मेरे वाडरोब मे हाथ न लगाइए।"

पर तब तक चप्पलें बाहर निकाल ली गयी थी। उमाकान्त ने उन्हे अपने हाथ मे लेकर ध्यान से उलटा पलटा फिर उन्हें शान्तिप्रकाश के पास ले गया। उनकी आखो से लगभग एक फुट की दूरी पर उन्हे हवा मे हिलाते हुए उसने गम्भीरता से पूछा, 'आप खुद बता दें तो ज्यादा अच्छा होगा। नही तो कहिए, मैं ही बताऊँ ये चप्पलें कब और कहा से आयी हैं।"

शान्तिप्रकाश का चेहरा पीला पड गया था। उसने अपना होठ काटते हुए कहा, 'ये वीणा की चप्पलें है।"

उमाकान्त ने बगल के कमरे मे पुकारकर कहा, 'सिद्दीकी साहब, मिस गहलौत को लेकर जरा यहा आ जाइए।"

थोडी देर मे घबराई हुई कुमारी वीणा गहलौत लेडी सुपरिण्टण्डेण्ट, पार्वती महिलाश्रम दाखिल हुई। तब तक शान्तिप्रकाश अपने बिस्तर के पास पडी हुई एक आरामकुर्सी पर बैठ गये थे। कमरे का पखा चला दिया गया था। पर उनके माथे पर पसीना छलक रहा था। उमाकान्त और सिद्दीकी उनके सामने खडे हुए थे। बादशाह कुछ दूर हटकर वाडरोब मे रखे हुए कपडो का निरीक्षण कर रहा था। दो कान्स्टेबल शान्तिप्रकाश के पीछे खडे हुए थे।

उमाकान्त ने वीणा से कहा, "मिस गहलौत, यह आपकी चप्पल हैं ?"

पर इसका जवाब शान्तिप्रकाश ने दिया, 'हाँ, मैं कह तो चुका हूँ। यह इन्ही की हैं।'

वीणा ने घबराई हुई निगाह से शान्तिप्रकाश को देखा। फिर बहुत धीरे-से बोली, "हाँ, मेरी ही हैं।

उमाकान्त ने वे चप्पलें वीणा के सामने रख दी। कहा, इन्हे पहनकर दिखाइए।'

उसने हिचकते हिचकते एक चप्पल मे अपना पैर डाला। वह उसके पाव से लगभग आध इच से ज्यादा बडी थी और पाँव म बुरी तरह ढीली लग रही थी।

उमाकान्त ने चप्पल खीच ली। बोला, "आप अब भी कहेगी कि ये चप्पलें आपकी है ?'

वीणा ने इसके जवाब म मुह दूसरी ओर फेर लिया। वह अपने गाउन का किनारा दोनो हाथो से इस तरह खीच रही थी जैसे उसे फाड डालना चाहती हो।

उमाकान्त ने इस पर कोई ध्यान नही दिया। वह चप्पलो को शान्तिप्रकाश के पास ले आया और ठण्डे सुर म बोला 'अब आप क्या कहते है ?'

"यही कि ये चप्पलें वीणा की ही है।'

वाडरोब के पास स तब तक बादशाह ने कहा, 'और यह बुर्का भी वीणा का ही है ?"

'भूपसिंह उछलकर वाडरोब के पास आ गया। बादशाह अपनी उँगली एक काले कपडे के उस हिस्से की ओर दिखा रहा था जिसे एक ब्रीफकेस के नीचे दबा हुआ देखा जा सकता था। भूपसिंह ने हाथ बढाकर उसे बाहर खीच लिया। वह सचमुच ही एक बुर्का था। उमाकान्त ने बुर्के की ओर एक निगाह डाली और कहा, "शान्तिप्रकाश जी अब यही अच्छा होगा कि आप साफ साफ बता दें।'

शान्तिप्रकाश ने गरजकर कहा, "मुझे फँसाया जा रहा है। मैं एक-एक से बदला लूँगा। उन्होने कुर्सी से उठने की कोशिश की। पर अचानक ही उनका जोश ठण्डा हो गया। तब तक सिद्दीकी आगे बढ आया था। उसने कहा 'जितना जी चाहे बदला ले लीजिएगा। पर अभी तो बताइए यह बुर्का कैसा है किसका है ?"

शान्तिप्रकाश सिर झुकाये बैठे रहे। अचानक उन्होने कहा, 'बता रहा हूँ। यह बुर्का वीणा का है।'

पर उनके मुह स बात निकली भी न थी कि वीणा उछलकर सामने आ गयी। उसने शान्तिप्रकाश को झकझोरकर कहा, झूठे! बेइमान!'

'नही, नही, नही," उमाकान्त ने लगभग पुचकारते हुए उसे शान्तिप्रकाश स दूर खीच लिया, अच्छे बच्चे मुह स गन्दी बात नही निकालते।'

गुस्से के मारे वीणा का चेहरा जैसे फटा जा रहा हा। उसने शान्ति-प्रकाश की ओर जलती हुई आँखो से देखा और बोली, "इसी ने मुझे इस बुर्के और चप्पलो के लिए फोन किया था। य दोनो चीजें हमारे आश्रम की एक लडकी की है। उसका नाम ग्रायशा है। इसने मुझे फोन करके ये चीजें मँगवायी थी। इसने आश्रम के फाटक पर खुद आकर इनका बण्डल लिया था।" उसने फिर पहले की तरह चीखकर कहा, "और अब मुझे ही फँसाना चाहता है! कहता है कि य चीजें मेरी हैं, झूठा!"

उमाकान्त न उस खीचकर सीधा खडा किया। पहले ही की तरह पुचकारते हुए कहा, "नही नही, मिस गहलौत! अपने पर इस तरह काबू मत खोइए। आपसे हम बहुत बातें करनी हैं।"

उसने उसे एक सिपाही की ओर धकेल दिया और कहा, "इन्ह काबू म रखो।'

सिद्दीकी शान्तिप्रकाश से कह रहा था, "तो बताइए, महिला आश्रम से बुर्का और चप्पलें लकर आप किधर गये थे?"

"मैं बताता हूँ" कहकर उमाकान्त उन दोनो के बीच म आ गया। एक स्टूल खीचकर वह उस पर बैठ गया और धीरे-धीरे कहने लगा, "सुनिए शान्तिप्रकाश जी, कुसूर मिस गहलौत का नही है। उन पर नाराज मत होइए। उन्होन आपको धोखा नही दिया है। धोखा तो किसी और ने ही दिया है।'

वह आरामकुर्सी पर मुर्दे जैसे लुढके पडे थे। उन्होन अपनी आँखें उमाकान्त की ओर उठायी। वह कहता रहा, "आपको इन गोरे गोरे पाँवो ने धोखा दिया है।" उसने शान्तिप्रकाश के औरतो जसे खूबसूरत पाँवो की ओर इशारा किया, 'और इन चप्पलो ने धोखा दिया है।" उसने चप्पलो के जोडे को एक बार फिर हवा मे हिलाया, "और सबसे बडा धोखा आपको उस खत ने दिया है।" कहकर उसने अपनी निगाह शान्तिप्रकाश के चेहरे पर गडा दी।

इस बार शान्तिप्रकाश घबराकर कुर्सी पर आगे बढ आये। बोले, 'कैसा खत?'

"वही खत," उमाकान्त ने निहायत चिकनी आवाज म कहा, "जो उस वक्त आपके पास था। अजीतसिंह के बिस्तर के पास शीशी निकालते वक्त वह खत आपके पास से वहीं सर्जिकल वार्ड म गिर गया था। आपको शायद पता नहीं।' उसने सिद्दीकी की ओर इशारा करके कहा, 'वह

खत इस समय इन्सपेक्टर सिद्दीकी के पास है।'

शान्तिप्रकाश के चेहरे से पसीने की धारें छूट रही थीं। पर आवाज की बची खुची कड़ाई को समेटकर उन्होंने जोर से कहा, 'आप झूठ बोल रहे हैं। उस वक्त मेरी जेब मे कोई खत नहीं था।

बात पूरी होते होते भूपसिंह ने उनकी कलाई मजबूती से पकड़ ली। सिद्दीकी बाज की तरह झपटकर उनके आगे आ गया और तेजी से बोला "उस वक्त ? आपने 'उस वक्त' कहा है। शान्तिप्रकाश जी, आपने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया है। अब यह भी बताइए, उस वक्त आपने अजीतसिंह को जहर कैसे दिया था ? और क्या ? बताइए शान्तिप्रकाश जी।"

उन्होंने एक बार जोर लगाकर कुर्सी से उठने की कोशिश की पर उन्हें मिस वीणा गहलोत उमाकान्त भूपसिंह, सिद्दीकी—सभी के चेहरे हवा में तैरते से जान पड़े। वह कुर्सी पर ढीले होकर गिर गये। उनकी आँखें मुँद गयीं।

उमाकान्त ने कमरे की खामोशी तोड़ते हुए कहा "सिद्दीकी साहब अब आप अपनी कानूनी कारवाई पूरी कीजिए। मैं मिस गहलोत से तब तक पड़ोस के कमरे में कुछ बातें करूँगा।'

बीस

उसी रात लगभग दस बजे उमाकान्त सी० आइ० डी० के सुपरिण्टेण्डण्ट विद्यानाथ के बँगले पर बैठा हुआ था। विद्यानाथ के अलावा वहाँ उसके साथ इन्सपेक्टर सिद्दीकी भी मौजूद था। वे लोग लॉन में बैठे थे। एक स्टैण्डर्ड टेबुल लैम्प उनसे कुछ दूरी पर जल रहा था। पास ही में एक पेडस्टल फैन घूम घूमकर उन तीनों की कुर्सियों पर हवा फेंक रहा था। हवा में अब ठण्डक आ गयी थी।

सड़क पर रह रहकर कोई कार या स्कूटर रिक्शा लाउडस्पीकर पर चुनाव का प्रचार करता हुआ निकल जाता था। शान्तिप्रकाश के विरोधी अपने प्रचार में इस समय खास तौर से उनकी गिरफ्तारी का विवरण शामिल करके पूरे शहर को इस घटना की जानकारी दिये दे रहे थे।

उमाकान्त सिद्दीकी से कह रहा था 'आप ठीक कहते हैं। पर मेरा मंशा जायसवाल के घर की तलाशी लेने का नहीं था। मैं तो सिर्फ इतना

हता था कि वह आप लोगो को देखकर घबरा जाय। फिर मैं उस
गन साथ लेकर शान्तिप्रकाश के बँगले की तलाशी के समय उसका इस्ते
ाल करना चाहता था। मेरा ख्याल था कि उस वक्त घबराहट म वह
रूर कोई न कोई ऐसी बात कहेगा जो आपके मतलब की होगी। बम
जसे वीणा गहलौत न वहाँ घबराहट म यह बता दिया कि कुत्ता और
ग्लैं उसी न सप्लाई की थी।"

एक नौकर ट्रे मे कोकाकोला के गिलास ले आया। विद्यानाथ न
हा, "अब हमे शुरू से बताइए, शान्तिप्रकाश तक आप किस तरह पहुँच
े?'

उमाकान्त की निगाह लान के उस पार फाटक की ओर थी। उसन
हा, "अगर आप फुरसत से सुनना चाहते हैं तो मेर एक दोस्त को भी
ा बुला लीजिए। वह बाहर मेरा इन्तजार कर रहा है। उसका नाम
दशाह है। इस जाच म बराबर वह मेरे साथ रहा है।"

विद्यानाथ ने खुद उठकर जाना चाहा, तब तक सिद्दीकी खडा हो गया
। बाला, "सर, यह बादशाह भी बडे काम का आदमी है। मैं बुलाय
ाता हूँ।' वह फाटक की ओर चला गया।

विद्यानाथ ने पूछा, "करता क्या है?"

'मि० बादशाह एक होटल के मालिक हैं।'

विद्यानाथ ने कुछ सोचकर कहा, 'ओह! आपका मतलब श्री चार
बीस स है। तो वही आपके दोस्त हैं !"

तब तक बादशाह बडे सहज ढग से सिद्दीकी के साथ उनकी ओर
ता दीख पडा। पास आकर उसने विद्यानाथ को नमस्कार किया और
ामीनान से एक कुर्सी पर बठ गया। लगा वह हमेशा ऐसे ही लोगो के
थ उठता बैठता रहा है।

सबा के हाथ म जब कोकाकोला आ गया तब सिद्दीकी न कहा,
ापके कुछ और कहने के पहले जसवन्त की बात खत्म कर ली जाय।
ारे आदमी भी थाने की पुलिस के साथ उसके पीछे लगे हुए हैं। उनका
ाल है कि वह कही शहर ही मे छिपा है। हम यकीन है कि हम उस
त जल्द खोज लेंग।"

उमाकान्त ने कहा "हा, इसकी बहुत जरूरत है।' उसन विद्यानाथ
ओर रुख करके कहना शुरू किया, "शान्तिप्रकाश के खिलाफ अजीतसिंह
हत्या ही नही, मलिना की हत्या का भी आरोप लग सकता है। और मुझ

नव है कि उसमें जसवन्त का भी हाथ रहा है।"

विद्यानाथ ने सिद्दीकी की ओर देखा। उसने कहा, हम पूरी कोशिश कर रहे हैं, सर।"

उमाकान्त कुर्सी पर कुछ और फैलकर बैठ गया। विद्यानाथ ने कहा, 'मैं इन्तजार कर रहा हूँ। अब हमारे महान जासूस को बताना चाहिए, शान्तिप्रकाश को उन्होंने कैसे पकड़ा?"

उमाकान्त ने कहा, 'अजीतसिंह के मामले में एक बात मेरे दिमाग में शुरू से ही स्पष्ट थी। बाद में सी० आई० डी० ने भी इसका महत्त्व समझा था। वह यह कि अजीतसिंह को जहर देने की योजना बहुत पहले से नहीं बन सकती थी। हरिश्चन्द्र की गोली खाकर जब उसे अस्पताल लाया गया तब सबको यही लगा था कि वह मर रहा है। लगभग पौने आठ बजे शाम को उसे अस्पताल में आपरेशन टेबुल पर रखा गया। नौ बजे जब उसे आपरेशन थिएटर से सर्जिकल वार्ड में लाया गया तो उस वक्त वह बेहोश था। पर आपरेशन के बाद डाक्टरों को उम्मीद हो गयी कि वह बच जायगा। इसलिए जहर देने की बात नौ बजे के बाद ही सोची गयी होगी।

'अजीतसिंह को सवा ग्यारह बजे कुछ होश आया। साढ़े ग्यारह बजे से वह नींद और बेहोशी की मिली जुली हालत में डूब गया। फिर उसकी वह नींद खत्म नहीं हुई। दूसरे दिन सबेरे आठ बजे तक वह मर गया। डाक्टरों का ख्याल है, उसे जिस प्रकार का जहर दिया गया था उससे उसकी मृत्यु आठ-नौ घण्टे में होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि उसे बारह बजे के आसपास जहर दिया गया। यही नहीं, आपरेशन के बाद जब तक उसे होश नहीं आया, कोई भी बाहरी आदमी उसे देखने नहीं गया। जाहिर है कि, जब तक अस्पताल के ही किसी आदमी ने उसे जहर न दिया हो उसे होश में आने के बाद यानी सवा ग्यारह बजे के बाद ही जहर दिया गया था।

'पर जहर देने का सवाल उठा कैसे? यह सवाल तभी उठा जबकि आपरेशन के बाद किसी को यह मालूम हुआ कि अजीतसिंह गोली-काण्ड के बावजूद बच जायगा। तभी उसके किसी दुश्मन ने सोचा होगा कि उसे इसी वक्त जहर देकर खत्म कर दिया जाय। इसलिए जरूरी था कि नौ बजे के बाद, अजीतसिंह जिस वक्त आपरेशन थिएटर से हटाया गया उस वक्त अस्पताल में जो बाहरी लोग मौजूद थे, उन्हीं के बीच से

या उनकी माफत हत्यारे का पता लगाया जाये। उन्ही म से किसी ने नौ और बारह बजे के बीच अजीतसिंह को जहर देने की व्यवस्था की होगी या उसके किसी ऐसे दुश्मन को अजीतसिंह की हालत बतायी होगी जो उसी रात उसे खुद जहर दे सके या किसी से दिला सके।

"अस्पताल के स्टाफ पर मुझे ज्यादा सन्देह नही था। इस तरह की हत्याओ म सबसे पहले स्टाफ पर ही शुबहा होता है। ज्यादातर स्टाफ का कोई भी आदमी इस तरह के अपराधो मे जल्दी जल्दी शामिल नही होना चाहता। दूसरी बात यह थी कि अस्पताल के स्टाफ म किसी का अजीत सिंह से ऐसा सम्बन्ध नही था कि वह उसे जहर देना चाहता। समय इतना कम था कि सिर्फ दो तीन घण्टा मे कोई बाहरी आदमी अस्पताल के स्टाफ को रुपये या किसी दूसरे प्रकार का लालच देकर उनके द्वारा अजीत-सिंह को जहर दिला देता, इसकी भी बहुत कम सम्भावना थी। इसीलिए मैंने बाहरी आदमियो पर ही ज्यादा ध्यान दिया और बाहरी आदमियो मे जसवन्त पर मेरा ध्यान विशेष रूप स गया। उसका अजीतसिंह से काफी पुराना सम्बन्ध था और इस वजह से वह अस्पताल मे काफी देर मौजूद रहा था।

"रूबी के साथ अजीतसिंह के जस सम्बन्ध थे, उसस साफ जाहिर हो चुका था कि अजीतसिंह वास्तव मे पत्रकार नही था। उसका असली पेशा लोगो का ब्लैकमेल करना था। सी० आई० डी० ने उसके घर से जो तस्वीरें बरामद की थी उनसे भी इस बात की पुष्टि होती थी। यह भी मालूम हो गया था कि ब्लकमेल करने के लिए वह तसवीरो का इस्तमाल करता था।

'जहा तक रूबी का सम्बन्ध है मैं उसे शुरू स ही निर्दोष समझ रहा था। एक तो इसलिए कि गोलीकाण्ड के बाद वह अपने एक रिश्तेदार के साथ चली गयी थी और फिर बराबर उसी के साथ रही। उसे यह मौका ही नही मिल सकता था कि वह जहर देने का इन्तजाम कर सके। दूसरे, उस रात अजीतसिंह के घर की तलाशी अगर उसके हत्यारे ने ली हो तो रूबी नही ले सकती थी। अजीतसिंह के पास उसका जो फोटो था उसम कोई ऐसी बात नही थी कि रूबी पर कोई लाछन लगा सके। फोटो म सिर्फ रत्ना और रूबी के साथ एक लडका है, इतने मे ही रूबी के खिलाफ कोई बात साबित नही होती। इसलिए अजीतसिंह के जिन्दा रहते हुए रूबी भल ही उस फोटो को उससे वापस ले लेना चाहती हो उसके मरे

जाने के बाद रवी रात के वक्त फोटो के लिए उसके घर की तलाशी नहीं ले सकती थी। फिर, यदि उसने तलाशी लो भी होती तो कोई वजह नहीं कि यह अपने ही दिये हुए आठ हजार रुपये वहाँ से न ले आती।

"तलाशी जिस किसी ने भी ली हो, यह स्पष्ट था कि अजीतसिंह के पास उसे नुकसान पहुँचानेवाला कोई खतरनाक सबूत मौजूद रहा होगा। साथ ही तलाशी लेनेवाला इतना अमीर भी होगा कि उस सबूत के अलावा उसे अजीतसिंह के घर से आठ हजार रुपये लेने का बिल्कुल लालच नहीं हुआ। मेरी समझ में यह बातें रवी पर लागू नहीं होती थीं। मैंने एकदम से यह भी नहीं माना था कि जसवन्त और अजीतसिंह का सम्बन्ध दोस्ती ही का था। रवी से उसका प्रेम-सम्बन्ध माना जाता था, पर वहाँ दुश्मनी निकली। वही बात जसवन्त के साथ भी हो सकती थी। हमें पता चला कि जसवन्त अस्पताल से शान्तिप्रकाश के घर होता हुआ दो राज-नीतिक कार्यकर्ताओं के घर गया और फिर अपने घर वापस चला गया। बाद में बादशाह की छानबीन से हमें यह भी मालूम हुआ कि जिस जीप पर जसवन्त अस्पताल आया था, वह शान्तिप्रकाश की थी। वह जीप उसके पास लगभग दस बजे तक रही। बाद में उसे घर पर छोड़कर शान्तिप्रकाश के यहाँ वापस चली आयी। बादशाह की खोज से यह भी पता लगा कि बँगले पर जीप खड़ी करके ड्राइवर खाना खाने जाने लगा तब शान्तिप्रकाश ने उसकी चाबी ले ली थी और ड्राइवर के वहाँ से जाते जाते शान्तिप्रकाश खुद कहीं को रवाना हो गये थे।

"शान्तिप्रकाश के अलावा जिन दो आदमियों के घर जसवन्त उस रात को गया था, उनमें एक धोबी और एक घोसी था। वे सीधे साधे और बेपढ़े लिखे लोग हैं, पर वे अपनी बिरादरी के चौधरी हैं। जसवन्त उनके पास उनकी बिरादरी के वोट माँगने गया था। उनका हत्या से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता था। किस्मत से मुझे अजीतसिंह के एक सन्दूक में, जो कि जनशान्ति प्रेस में रखा हुआ था, मलिनावाली दो फोटो मिलीं। उनसे दो बातें साबित हुईं। एक तो यह कि मलिना जिस पोशाक में मरी हुई पायी गयी थी उसी पोशाक में वह जसवन्त और दो दूसरे आदमियों के साथ मौजूद थी। जाहिर है कि वह फोटो मलिना के मरने के बहुत पहले का नहीं है। पर वह फोटो अजीतसिंह के पास से बरामद हुआ था। इससे मुझे लगा कि वह फोटो अजीतसिंह के ब्लैकमेल का हथियार हो सकता है।

पावती महिला आश्रम के तहखाने को देख चुकने के बाद जब मुझे मालूम हुआ कि वह फोटो वहां लिया गया था, तब यह स्पष्ट हो गया कि मलिना के रहस्य को लेकर इस फोटो का बहुत महत्व है और इसमें जिन आदमियों की तसवीर है, वे अपना रहस्य छिपाने के लिए अजीतसिंह की हत्या तक कर सकते हैं।

'यह स्पष्ट है कि इसके सहारे अजीतसिंह जसवन्त को तथा उस तसवीर में मौजूद दो दूसरे आदमियों को बराबर ब्लैकमेल कर सकता था। उस तसवीर से वह साबित कर सकता था कि वे लोग मलिना के पास शराब के नशे की हालत में मौजूद थे। यही नहीं, उस तसवीर से यह भी प्रमाणित होता है कि उन लोगों ने मलिना को उस पाताल में देखा था जिसमें वह बाद में मरी हुई पायी गयी थी। मुझे इस बात का भी प्रमाण मिला कि मलिनावाले मामले को लेकर अजीतसिंह शहर के कुछ रईसों को ब्लैकमेल करता रहा है। जिस वक्त मलिना गायब हुई थी, उसने पावती महिला आश्रम का नाम दिये बिना उस संस्था के खिलाफ एक सम्पादकीय लिखा था और सी० आई० डी० को बताया भी था कि वह संस्था व्यभिचारियों का अड्डा है। उसी के बाद पुलिस ने उस संस्था पर छापा मारा था।

"मलिना की मृत्यु के बाद भी वह उस संस्था का नाम दिये बिना उसके खिलाफ सम्पादकीय लिखता और धमकाता रहा कि वह शहर के बड़े-बड़े रईसों के खिलाफ उचित समय पर प्रमाण दे सकता है। उसके बाद ही वे सम्पादकीय बन्द हो गये और शहर के कुछ रईसों के सचित्र विवरण उसके अखबार में छपे। यह सब ब्लैकमेल की कारवाई थी। सी० आई० डी० को मलिना के प्रसंग में उसने जिस तरह पावती महिला आश्रम के पीछे लगाया था, उससे मुझे सन्देह हुआ कि अजीतसिंह को यह मालूम था कि मलिना पावती महिला आश्रम में कुछ समय तक छिपाकर रखी गयी थी। उससे यह भी साफ था कि उस तसवीर में जो आदमी मलिना के साथ मौजूद हैं उनका सम्बन्ध भी पावती महिला आश्रम से होना चाहिए।

'उनमें से एक आदमी, जो सिन्धी व्यापारी था, मर चुका है। एक जसवन्त था। मुझे अब तीसरे आदमी का पता लगाना था। अब मैंने उस तीसरे आदमी की तलाश आश्रम के कार्यकर्ताओं और दूसरे समाज-सेवियों में करनी शुरू की। मुझे याद था कि अजीतसिंह ने ब्लैकमेल

करके उससे कुछ न कुछ रुपया जरूर ऐंठा होगा और बहुत मुमकिन था कि वह उन आदमियों में से हो जिनके सचित्र जीवन चरित्र उसने अपने अखबार में छापे थे। अतः जितने समाज सेवियों के चित्र उसने उस सिरीज में छापे थे, उनका मैंने मलिना की फोटो के दाढ़ीवाले आदमी से मुकाबला किया। अजीतसिंह ने जो फोटो छापा था उनमें से किसी के भी दाढ़ी नहीं थी। इसलिए पहले मुझे उस दाढ़ीवाले आदमी का पता नहीं चला। पर बाद में मैंने देखा कि जसवन्त मूँछें नहीं रखता। उधर, मलिनावाले फोटोग्राफ में उसके काफी बड़ी मूँछें हैं। पता लगाने से मुझे मालूम हो गया कि इधर दो-तीन साल से उसने मूँछें नहीं बढ़ाई थी। यह स्पष्ट था कि तसवीर में उसके चेहरे पर जो मूँछें दीख रही हैं वे नकली हैं। मुझे शुबहा हुआ कि क्या इस तीसरे आदमी की दाढ़ी भी नकली है? इसके बाद अजीतसिंह के अखबार में छपे हुए समाज सेवियों की तसवीरों का मैंने फिर से मुकाबला किया। उनमें शान्तिप्रकाश की भी तसवीर है। दाढ़ी के बावजूद उसके चेहरे में तथा शान्तिप्रकाश के चेहरे में मैंने काफी समानता पायी। तब मैंने 'जनक्रान्ति' में छपी हुई सातों तसवीरों के चेहरे पर दाढ़ी खींचकर उनका मिलान करना चाहा। नतीजा आपके सामने है।'

उमाकान्त ने एक लिफाफा खोलकर 'जनक्रान्ति' में छपे हुए सात समाज सेवियों के फोटो निकाले और उन्हें मेज पर फैला दिया। फिर प्रत्येक के नीचे एक दूसरे फोटोग्राफों का सेट बिछा दिया। यह वही सेट था जिस पर रवीन्द्र ने हर फोटो में चेहरे पर एक फ्रेंचकट दाढ़ी जोड़ दी थी। उमाकान्त ने एक तीसरी तसवीर अपने हाथ में लेकर कहा, "देखिए, यह मलिनावाला फोटोग्राफ है। इसमें यह जसवन्त है, यह सिन्धी व्यापारी और यह महाशय हैं श्री शान्तिप्रकाश जी। हाँ इन्हें आप फ्रेंचकट दाढ़ी के कारण नहीं पहचान पा रहे हैं। इधर इनकी वह तसवीर है जो 'जनक्रान्ति' में छपी थी। इसी की दूसरी प्रिण्ट पर यहाँ देखिए, दाढ़ी खींच दी गयी है और यह दाढ़ीदार शान्तिप्रकाश का फोटो मलिना के ग्रुप फोटो के शान्तिप्रकाश से कितना मिलता है। इस ग्रुप में यह श्री शान्तिप्रकाश ही हैं जो अपनी 'फैन्सी ड्रेस' में ऐयाशी करने के लिए महिला आश्रम पहुँचे हुए हैं।

'इसके बाद मुझे कोई शक नहीं रहा कि अजीतसिंह मलिना के मामले को लेकर शान्तिप्रकाश और जसवन्त को ब्लैकमेल करता रहा था। हो

सकता है, इधर चुनाव के दिनो मे, जब शांतिप्रकाश मेयर बनाना चाहते थे, तब उसने ब्लैकमेल की कीमत बढा दी हो या इस तसवीर को लेकर उनके विरोधियो से मोल तोल करने लगा हो, जो भी हो, ऐसी हालत मे जसवन्त और शान्तिप्रकाश मे कोई भी अजीतसिंह की हत्या करने मे हिचकता नहीं। हरीसिंह ने मुझे बताया था कि वह बुर्केवाली औरत जो अजीतसिंह के पास बाद म गयी थी नयी और चमकदार चप्पलें पहने थी। वह उस औरत के गोरे गोरे पावो से भी बहुत प्रभावित हुआ था। हरीसिंह ने मुझे बताया था कि उस चप्पलो म व पाव बडे ही सुन्दर दीखते थे। मैं इस सम्भावना पर चल रहा था कि बाड़े मे जो दूसरी बार बुर्का ओढकर गयी थी, उसने अजीतसिंह को जहर दिया होगा। अजीतसिंह के मुलाकातियो मे उसी को लेकर रहस्य बना हुआ था, बाकी सबको हम अच्छी तरह जान चुके थे। जरीना वहाँ दुबारा गयी नही थी। और अगर वह गयी भी होती, तो वह गोरे पाववाली औरत नही हो सकती थी, क्योकि उसका रग साँवला है। दूसरी बात यह है कि इस बुर्केवाली दूसरी औरत ने मिस लायल को पस छूट जाने की झूठी कहानी गढकर सुनायी थी। इसी से समझा जा सकता है कि बाडे मे वह किसी गलत उद्देश्य स आयी थी। मैं सोचता रहा कि यह औरत कौन हो सकती है ?

"बाद म यह जानते ही कि शांतिप्रकाश पावती महिला आश्रम मे भेष बदलकर गया था, मेरे मन म सवाल उठा कि क्या यह जरूरी है कि अजीतसिंह के पास बुर्के म जानेवाला व्यक्ति औरत ही हो ? क्या वह मर्द नही हो सकता ? शान्तिप्रकाश जी के पाँव मैंने पहले भी देखे थे, उस दिन जब अजीतसिंह की शोक सभा हुई थी। उनके पाँव बहुत ही गोरे और चिकने हैं और औरतो जैसे दीखते हैं। कल मैंने उनके कान म फुस फुसाकर एक बात कही थी और उस पर उन्होने फुसफुसाकर जवाब दिया था। उस वक्त उनकी आवाज भर्राई हुई थी। यह शायद चुनाव व्याख्यानो का नतीजा है। पर उनकी आवाज बहुत मीठी है और जब वह फुसफुसाकर बोले, तब मुझे लगा कि इतने धीमे स्वर म इस मिस लायल आसानी से औरत की आवाज समझ सकती है।

'इस तरह इतना स्पष्ट हो गया था कि शान्तिप्रकाश के पास इस बात का कारण मौजूद है कि अजीतसिंह की हत्या की जाय। उनके पाँव वैसे ही हैं जैसे हरीसिंह ने देखे थ। उनकी आवाज भी वैसी हो सकती है जसी मिस लायल ने सुनी थी। उन्हें जसवन्त से नौ बजे रात तक यह

खबर मिल चुकी थी कि अजीतसिंह के बच जाने की सम्भावना है। उन्हे पूरा मौका था कि अन्दर जायें और उसे जहर पिला दें। वे दस बजे के बाद अपना बंगला छोडकर जीप से अकेले बाहर भी गये थे। जिस तरह मलिना के सामने वे भेष बदलकर गये थे वैसे ही वे बुर्का पहनकर वार्ड मे भी जा सकते थे। उनका कद छोटा है और जिस्म दुबला है, वे ऐसा आसानी से कर सकते थे। जहर देने के बाद या पहले वे अजीतसिंह के घर की तलाशी भी ले सकते थे। वह इतने अमीर है कि उन्हे वहा से मलिनावाला फोटो ही लेने मे दिलचस्पी होती, वहा के आठ हजार रुपया की उन्हे फिक्र नही रही। यह भी सयोग की बात थी कि उनके वार्ड मे जाने के पहले ही जरीना वहा से बाहर आयी थी और उन्होने उसे निकलते हुए देख लिया था। अत मौके पर पास छूट जाने की कहानी गढना उनके लिए मुश्किल नही था। अजब नही कि जहर देने का भी उन्हे पहले से तजुर्बा रहा हो और ट्रेन से कुचलने के पहले उन्होने ही मलिना को अफीम या कोई दूसरा जहर दिया हो।

'उस रात उनकी जीप की आमदरफ्त ने मेरे सन्देह को और भी पक्का कर दिया था। जसवन्त उन्ही की जीप पर, शायद उन्ही के कहने से, अजीतसिंह का हाल चाल लेने गया था। जसवन्त के पास अपनी जीप नही है, वह कार पर चलता है। अब यह देखना होगा कि बारह बजे के पहले वह जीप अस्पताल के पास कही खडी हुई पायी गयी या नही। शान्तिप्रकाश उसे यकीनन कही नजदीक ही छोडकर अस्पताल आये होगे। आज की तलाशी से उन चप्पलो और बुर्के का भी पता लग गया, जिन्हे पहनकर शान्तिप्रकाश अजीतसिंह को जहर देने गये थे। कुमारी वीणा गहलौत अपनी बचत के लिए अब आपकी ओर से यह गवाही देने को तयार है कि यह सामान शान्तिप्रकाश ने उन्ही से लिया था। उसे लेने के लिए वे महिला आश्रम तक जीप से गये थे।

मलिना की जो तसवीरें उसकी मृत्यु के बाद अखबारो मे छपी थी उनसे अजीतसिंह के पास से मिली हुई तसवीरो मे थोडा सा अन्तर है। अजीतसिंह के पासवाली तसवीरो मे उसकी आखें चमक रही हैं और वह बडी खुश-सी दीखती है। अजब नही कि किसी बहाने इन बदमाशो ने उसे शराब पिलायी हो या यह भी हो सकता है कि उन्होने उसे किसी रूप मे अफीम दी हो और बाद मे बेहोशी की हालत मे उसे रेल की पटरी पर छोड दिया हो। पर यह बातें आगे के इन्वेस्टीगेशन की हैं।

जहाँ तक अजीतसिंह का मामला है मैं समझता हूँ कि उसमें अब ज्यादा जाँच की जरूरत नहीं है।"

उमाकान्त की बात खत्म हो जाने पर कमरे में थोड़ी देर सन्नाटा रहा।

सिद्दीकी ने कहा, 'हमारे पास इस बात का सबूत पहले से ही मौजूद है कि शान्तिप्रकाश ने काफी समय तक 'जनशान्ति' प्रकाशन का खर्च उठाया था। पावती महिला आश्रम का भी जिस जिस वर्ष उन्होंने जितना-जितना रुपया दिया है इसकी सूचना हमारे पास है।"

इतनी देर बाद बादशाह ने मुँह खोला। उसने कहा 'शान्तिप्रकाश के खिलाफ सबसे बड़ा सबूत तो वह खत है जिसे उमाकान्त जी ने अजीतसिंह की लाश के पास पाया था।'

विद्यानाथ ने पूछा, "कौन-सा खत ?"

इस पर सब लोग हँसने लगे।

उमाकान्त ने कहा, 'ऐसा कोई खत नहीं है। खत की बात तो मैंने शान्तिप्रकाश के लिए गढ़ ली थी। उसका जिक्र आते ही शान्तिप्रकाश ने एक वाक्य में लगभग अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। उसने कहा—उस वक्त मेरी जेब में कोई खत नहीं था।'

विद्यानाथ ने पूछा, 'किस वक्त ?" उसके बाद ही वे जोर से हँस पड़े। बोले, 'ओह, यानी जिस वक्त शान्तिप्रकाश अजीतसिंह के बिस्तर के पास जहर लेकर पहुँचे थे। बहुत खूब !'

वे लोग हँसते रहे। कुछ रुककर विद्यानाथ ने पूछा "आपने जसवन्त को कैसे मुआफ कर दिया। यह भी तो हो सकता था कि जसवन्त ने ही अजीतसिंह को जहर दिया हो ?"

'बिल्कुल हो सकता था। पर उस रात जसवन्त दस बजे तक अपने घर पहुँच गया था। फिर वह निकला ही नहीं। बादशाह ने इसका पता कर लिया है। फिर वह लगभग छह फुट ऊँचा है। कम से कम बुर्का पहनकर तो वह बाड़ के भीतर आने की सोच भी नहीं सकता था।'

"पर जसवन्त आज सवेरे से भागा क्या है ?"

इसका जवाब बादशाह ने दिया। बोला 'मैं बताऊँ, हुजूर ! उसने मेरे पास मलिना का वह फोटो देखा था जो पावती महिला आश्रम में खींचा गया था। शान्तिप्रकाश की दाढ़ीवाली तसवीर भी उसने देखी थी। उसे शुबहा हो गया था कि यह मामला फिर से उभरने वाला है।

नही पायेगी। पर कल सवेरे उस जल्द से जल्द छुटाना होगा।"

"उस सबम मुझे दिलचस्पी नही है।' उमाकान्त न धुध भरे आसमान की ओर देखा, "आपको शायद पता नही, इस सडी गर्मी मे नैनीताल जाकर भी मैं उसी दिन लौट आया था। सिद्दीकी साहब को मालूम है। मेरा वह सफर अधूरा पडा है। कल सवेरे ही मैं उस पूरा करन के लिए निकल जाऊँगा।"

उसन सिद्दीकी के कधे पर हाथ रखकर नकली अकड म कहा, 'इस शहर का अब कम स कम पद्रह दिन मेरे बिना रहना होगा।"

सिद्दीकी न उसी तरह जवाब दिया, "शहर की बदकिस्मती।"

बादशाह न भी कहा, 'ठीक कह रह हो, उस्ताद, यह शहर इसी लायक है।'

कहकर वह मुस्तदी से विद्यानाथ और सिद्दीकी की ओर मुडा और बडे मँजे हुए लहजे मे बोला, *"अब हम लाग चल दिये। गुड नाइट, सर।"*

थोडी देर मे लान पर सिफ पखे की सनसनाहट रह गयी।

●●●

श्रीलाल शुक्ल

हिन्दी के समकालीन कथाकारों में ख्याति-लब्ध श्रीलाल शुक्ल का लेखकीय जीवन 1955 56 में आरम्भ हुआ। यों उन्होंने शीघ्र ही नयी पीढ़ी के रचनाकारों म अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था, परन्तु 1968 में **राग दरबारी** के प्रकाशन के साथ ही उनकी गणना प्रथम श्रेणी के उपन्यासकारों म होने लगी।

राग दरबारी हिन्दी साहित्य म पहला उपन्यास है, जो शुरू से आखिर तक बेहद निस्संग और सोदिदष्ट व्यग्य के साथ लिखा गया है। 1970 में **राग दरबारी** को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

31 दिसम्बर 1925 को लखनऊ जनपद के अतरौली गाँव में **श्रीलाल शुक्ल** का जन्म हुआ। शिक्षा लखनऊ, कानपुर और इलाहाबाद म हुई। 1950 से उत्तर प्रदेश शासन की प्रशासनिक सेवा म है।